ISSN: 2229-7146

A Journal of the
Centre of Russian Studies

CRITIC

Issue No. 20 (Part 2), 2022

ISSN: 2229-7146

CRITIC

A Journal of the Centre of Russian Studies

Issue No. 20 (Part 2) 2022

Dedicated to F. M. Dostoevsky

Centre of Russian Studies
School of Language, Literature & Culture Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi – 110067

CRITIC Issue No. 20, (Part 2), 2022

2022, Centre of Russian Studies, SLL&CS, JNU
ISSN: 2229-7146

Chief Editor: Dr. Arunim Bandhopadhyay

Editors: Dr. Meenu Bhatnagar
Dr. Ashutosh Anand
Dr. Sandeep Kumar Pandey
Dr. Radha Mohan Meena

Our reviewers:

Prof. Hem Chandra Pande (Retd.), CRS, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India
Prof. Varyam Singh (Retd.), CRS, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India
Prof. Devendra Choubey, CIL, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India
Prof.Vashista Dwivedi, Art Faculty, Banaras Hindu University, Varanasi, India
Dr. Uma Parihar (Retd.), Vikram University, Ujjain, India
Dr. Guzel Strelkova, IAAS, Moscow State University, Moscow, Russia
Dr. Preeti Das, CRCAS, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India
Dr. Madhup Kumar, JBMD College affliated with DDU University, Gorakhpur, UP, India
Dr. Abhay Kumar, Dayal Singh College, University of Delhi, India
Dr. Malkhan Singh, CIL, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India

Published by: Centre of Russian Studies, School of Language, Literature & Culture Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi – 110067

Critic is a blind peer reviewed annual research publication of the Centre of Russian Studies. It publishes articles in the field of Russian language, translation, literature, culture, society and comparative studies. Articles in the journal reflect the views of the authors only.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior written permission of the publishers.

Translators are solely responsible for the authenticity of their translation.

संपादकीय

महान रूसी साहित्यकार फ़्योदोर मिख़ाइलोविच दोस्तोयेव्स्की का जन्म 1821 मे हुआ था। दुनियाभर में साल 2021 इस महान रुसी साहित्यकार, दार्शनिक और विचारक की 200वी जयंती के रूप में जोर-शोर से मनाया गया। यह कहना सर्वथा उचित ही होगा कि वे 19वीं सदी के साहित्यिक जगत के सर्वोत्तम लेखकों में से एक थे। उनकी सार्थकता एवं ख्याति आज 200 साल बाद भी विश्व क्षितिज पर अतुलनीय है।

फ़्योदोर मिख़ाइलोविच दोस्तोयेव्स्की की कृतियाँ अमूल्य धरोहर हैं जो आज भी हम सभी लोगों के लिए सामाजिक अभिव्यक्ति की स्रोत है। उन्होंने मनोविज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज की खामियों और बुराईयों को, अपने पात्रो के नैतिक संघर्ष और मानसिक तनाव को जिस उत्तम तरीके से प्रस्तुत किया है वह हमें हमारे वजूद पर भी गहराई से सोचने पर मजबूर करता है।

इस 200वी जयंती के उपलक्ष्य मे रूसी अध्ययन केंद्र ने फ़्योदोर मिख़ाइलोविच दोस्तोयेव्स्की की कुछ चुनिंदा रचनाओं को मूल रूसी भाषा से हिन्दी मे अनुवाद करने का प्रयत्न किया है। इस प्रयास मे हमारे साथ भारत के विभिन विश्वविद्यालयों के रूसी विशेषज्ञ शामिल हुए हैं। यह संभवतः पहला ऐसा प्रयास है जिसमे एक ही रूसी लेखक की कहानियों के अनुवाद के लिए भारत के विभिन्न क्षेत्रों के रूसी अध्यापक गण जुड़े है।

अनुवाद एक ऐसी विधा है जो हमे दूसरे समाज, साहित्य, संस्कृति, रहन - सहन, खान पान इत्यादि से ना केवल परिचित करवाती है बल्कि वे किस तरह से हमारे समान है या फिर हमसे

भिन्न हैं यह जानने और समझने का मौका भी देती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि आज के आधुनिक दौर में अनुवाद का महत्व सर्वोपरि है।

शोध-पत्रिका CRITIC का यह अंक फ़्योदोर मिख़ाइलोविच दोस्तोयेव्स्की की 200वी जयंती को समर्पित है। हमने फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की की 5 रचनाओं को मूल रूसी भाषा से अनुवाद कर हिन्दी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। ये कहानियाँ हैं - क्रिसमस ट्री और शादी (योलका इ स्वाज्बा), बबोक (बबोक), ईमानदार चोर (चेस्नी वोर), मगरमच्छ (क्रोकोदिल) और एक हास्यपाद व्यक्ति का स्वप्न (सोन स्मिशनोवा चेलावेका)। इन कहानियों के साथ-साथ अलेक्सान्द्र सिर्गेइविच पुश्किन के बारे मे फ़्योदोर मिख़ाइलोविच दोस्तोयेव्स्की के महत्वपूर्ण और बहुमूल्य भाषण का हिन्दी अनुवाद भी शामिल किया गया है।

प्रोफेसर चरणजीत सिंह द्वारा अनूदित फ़्योदोर मिख़ाइलोविच दोस्तोयेव्स्की की कहानी "क्रिसमस ट्री और शादी" रूसी समाज के उस पारिवारिक और सामाजिक रूप से रूबरू कराती है जिसमे रिश्ते पैसे और ओहदे की बुनियाद पर जोड़े जाने की बुराई को दर्शाया गया है। पैसे का लालच इंसान को इतना खुदगर्ज बना देता है की वह रिश्तों को भी पैसे के तराज़ू मे तोलने लगता है। यही लालच आर्थिक रूप से कमज़ोर के प्रति भेदभाव को भी बड़ावा देता है। दोस्तोयेव्स्की ने इस कहानी के माध्यम से समाज मे पैसा, हैसियत, पद का रिश्तों पर प्रभाव का जीवंत अवलोकन किया है।

डॉ. चारुमती रामदास द्वारा अनूदित "बबोक" दोस्तोयेव्स्की की एक काल्पनिक कहानी है जो पहली बार "लेखक की डायरी" के रूप में प्रकाशित हुई थी। कहानी का मुख्य पात्र सपने में अपने आप

को कब्र में पाता है फिर भी आम जीवन में घटित होने वाली घटनाओ से बच नहीं पाता है। कहानी मे लेखक ने बहुत ही जीवंत तरीके से रुसी समाज और उससे जुडी पहलुओ को वर्णित किया है।

डॉ. कुँवर कांत द्वारा अनूदित दोस्तोयेव्स्की की कहानी "ईमानदार चोर" जिसमे रूसी समाज मे व्याप्त गरीबी और नशे जैसी बुराइयों का असर मानसिक, सामाजिक मनोभाव पर दर्शाया गया है। इस कहानी के जरिए दोस्तोएवस्की इस बात की पुष्टि करते है कि उपेक्षित और गरीब व्यक्ति भी नैतिक उच्चता प्राप्त कर सकता है।

डॉ. ऋषिका कात्यायन द्वारा अनूदित "मगरमच्छ" एक व्यंग्यात्मक कहानी है जिसमें कहानी के प्रमुख पात्र इवान मतेविच को मगरमच्छ द्वारा निगलने के बाद उसकी पत्नी, मित्रों के प्रतिक्रिया एवं इवान मतेविच के मगरमच्छ के पेट से वार्तालाप को बखूबी दर्शाया गया है जो रूस के उस समय के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विषयों पर कटाक्ष है।

फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की द्वारा रचित कहानी "एक हास्यास्पद व्यक्ति का स्वप्न" जिसका अनुवाद डा. सौरभ नायक ने किया है एक ऐसे इंसान की कहानी है, जो अपने जीवन से निराश है, सब उसका मज़ाक उड़ाते हैं। इन परेशानियों से निजात पाने का एक ही रास्ता उसके सामने है, वो है आत्महत्या। उसकी नज़र में इस जीवन से बेहतर मृत्यु है। फिर एक स्वप्न उसके जीवन की दिशा बदल देता है, और वह जीवन को एक नए नज़रिए से देखना शुरू करता है।

फ़्योदोर मिखाइलोविच दोस्तोयेव्स्की का "पुश्किन पर भाषण" दो भागों में है। प्रथम भाग में दोस्तोयेव्स्की ने अखिल रूसी

समाज के द्वारा प्रस्तावित एक साहित्यिक मंच पर आठ जून अठारह सौ अस्सी को जो पुश्किन पर एक भाषण दिया था, की विवेचना उन्होनें स्वयं की थी। द्वितीय भाग में पुश्किन पर आठ जून को दिया गया दोस्तोयेव्स्की का भाषण है। दो भागों में संकलित "पुश्किन पर भाषण" का सार वास्तव में अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी के उस रूसी समाजिक चेतना के प्रादुर्भाव पर बहस है जो नव यूरोपीय जागरण वाद को संरक्षित रूसी प्रबुद्ध चेतना के भँवर में फँसा पाता है। इस संकलन में लेखक ने पुश्किन के उदय को रूसी सांस्कृतिक अभ्योदय काल माना है। पुश्किन की साहित्यिक कृतियों की मूल आलोचना किए बिना दोस्तोयेव्स्की ने पुश्किन के द्वारा रूसी नारी की अतुलनीय नैसर्गिक अस्तित्व का अपने सांस्कृतिक विरासत के प्रति अप्रतिम योगदान को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

संपादक मण्डल सभी अनुवादकों का आभार व्यक्त करता है जो हमारे इस प्रयास में जुड़े। हम सभी समीक्षको का भी हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अत्यंत व्यस्तता के बावजूद कम समय सीमा मे अनुवाद की समीक्षा कर इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना बहुमुल्य योगदान दिया।

संपादक मण्डल

अनुक्रम

अनुवाद	पृष्ठ संख्या
१. **क्रिसमिस ट्री और शादी** (Ёлка и свадьба, 1848) अनुवादक : चरणजीत सिंह	1 - 9
२. **बबोक** (Бобок, 1873) अनुवादक : चारुमती रामदास	10 - 33
३. **ईमानदार चोर** (Честный вор, 1848) अनुवादक : कुँवर कांत	34 - 56
४. **मगरमच्छ** (Крокодил, 1865) अनुवादक : ऋषिका कात्यायन	57 - 107
५. **एक हास्यास्पद व्यक्ति का स्वप्न** (Сон смешного человека, 1877) अनुवादक : सौरभ नायक	108 - 129
६. **पुश्किन पर भाषण - प्रथम भाग** (Пушкинская речь – Часть первая, 1880) अनुवादक : मीनू भटनागर एवं राधा मोहन मीना	130 - 141
७. **पुश्किन पर भाषण- द्वितीय भाग** (Пушкинская речь – Часть вторая, 1880) अनुवादक : आशुतोष आनंद एवं संदीप कुमार पांडेय	142 - 164

क्रिसमिस ट्री और शादी

(एक अनजान की डायरी से)

चरणजीत सिंह
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

हाल ही में मैंने एक शादी देखी..., लेकिन नहीं। बेहतर होगा कि मैं आप को एक क्रिसमिस ट्री पार्टी के बारे में बताऊँ। शादी बढ़िया थी, मुझे बहुत अच्छी लगी लेकिन दूसरी घटना ज़्यादा दिलचस्प है। पता नहीं क्यों शादी देख कर मुझे वह पार्टी याद आ गई। हुआ कुछ ऐसे कि ठीक पाँच साल पहले, नए साल के अवसर पर मुझे बच्चों की एक पार्टी पर आमंत्रित किया गया। बुलाने वाले सज्जन एक मशहूर व्यवसाई थे, जो बड़े रसूख वाले थे और बहुत पहुंचे हुए व्यक्ति थे, इसलिए शक हो सकता था कि बच्चों की पार्टी माता-पिता के लिए लोगों को इकठ्ठा करने और अपने फायदे की बातें एक भोले-भाले, अनजान तरीके से करने का एक बहाना थी। मैं तो बाहर का आदमी था, बात करने के लिए मेरे पास कोई मुद्दा भी नहीं था, इसलिए मैंने शाम काफी अकेले ही बिताई। वहाँ एक और सज्जन भी थे, लगता था कि जिनके कोई भी रिश्तेदार साथ नहीं थे और वह मेरी तरह ही परिवार के उत्सव में शामिल थे... मेरी निगाह सब से पहले उन पर ही पड़ी। यह एक लंबे कद के, दुबले-पतले, अच्छे-खासे संजीदा इंसान थे, और उन्होंने कपड़े भी काफी अच्छे पहन रखे थे। लेकिन दिख रहा था कि उन्हें इस खुशियों के माहौल और पार्टी से कुछ लेना देना नहीं था: जब वह किसी कोने में जाते तो उसी समय मुस्कुराना बंद कर देते और अपनी काली घनी भवों को सिकोड़ने लगते। मेज़बान के सिवा वह पार्टी में और किसी को नहीं जानते थे। साफ दिखाई दे रहा था कि वह काफी बोर हो रहे थे लेकिन बड़ी हिम्मत से बड़े खुश होने और मज़े करने की भूमिका पूरे दिल से निभा रहे थे। मुझे बाद में पता चला कि वह किसी दूर प्रांत से आए हुए थे और उन्हें राजधानी में कोई काफ़ी जरूरी और पेचीदा काम था। वह हमारे मेज़बान के लिए सिफारिशी चिट्ठी लाए थे। मेज़बान उनकी मदद कोई दिल से नहीं कर रहा था और उन्हें पार्टी में भी शिष्टाचार के नाते ही बुलाया था। न तो ताश खेली जा रही थी, न ही उनको किसी ने सिगार की पेशकश की थी, शायद हाव-भाव से ही उनका रुतबा पहचान कर कोई उनके साथ बातचीत

भी नहीं कर रहा था, इसलिए अपने हाथों को हिलाने-जुलाने के लिए वह पूरी शाम अपनी कलमों पर हाथ फेर रहे थे। उनकी कलमें थीं वाकई काफी खूबसूरत। उन्हें इतनी लग्न से कलमें सहलाते देख कर लग रहा था मानो पहले कलमें ही पैदा हुईं, और फिर उस व्यक्ति को उनके साथ जोड़ा गया, ताकि वह उन्हें सहला सके।

इस व्यक्ति के इलावा, जो पाँच हृष्ट-पुष्ट बच्चों वाले मेज़बान के पारिवारिक उत्सव में भाग ले रहा था, मुझे एक और व्यक्ति भी पसंद आया। लेकिन यह श्रीमान बिल्कुल दूसरी किस्म के थे। उसका नाम यूलिआन मस्ताकोविच था। पहली ही नजर से ज़ाहिर था कि वह सम्मानित अतिथि था और मेज़बान के साथ उसके संबंध वैसे ही थे जैसे मेज़बान के संबंध कलमें सहलाने वाले व्यक्ति के साथ। मेज़बान दंपति लगातार उसकी तारीफ़ों के पुल बांध रहे थे, उसका सत्कार कर रहे थे, खिला-पिला रहे थे, दूसरे मेहमानों को बुला कर उसके साथ परिचय करवा रहे थे, लेकिन उसको किसी के पास लेकर नहीं जा रहे थे। जब यूलिआन मस्ताकोविच ने उस शाम के बारे में कहा कि उन्हें इतना अच्छा समय बिताने का मौका कम ही नसीब होता है, तो मेज़बान की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए। मुझे ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति में रहने से कुछ डर सा महसूस होने लगा इसलिए बच्चों को कुछ देर निहारने के बाद मैं छोटी बैठक में चला गया, जो एकदम खाली थी, और मालकिन के बनाए फूलों के कुंज में बैठ गया, जिससे कमरे का लगभग आधा हिस्सा घिरा हुआ था।

सभी बच्चे बहुत ही प्यारे थे और अपनी माताओं और गवर्नेस के बहुत समझाने के बावजूद किसी भी तरह से वे बड़ों जैसे नहीं लगना चाहते थे। उन्होंने क्रिसमिस ट्री के नीचे रखे सभी उपहारों को आखिरी टॉफी तक पल भर में ही खाली कर दिया और यह पता लगने से पहले ही कि कौन सा खिलौना किसके लिए है, उन्होंने आधे खिलौने तोड़ भी दिए। खास तौर से चंचल तो एक काली आँखों और घुँघराले बालों वाला लड़का था, जो अपनी लकड़ी की बंदूक से मुझे बार-बार गोली मार रहा था। लेकिन अपनी ओर सबसे ज़्यादा लोगों का ध्यान उसकी ग्यारह साल की बहन ने आकर्षित किया। वह वीनस की तरह सुंदर, शांत, ध्यानमग्न, रंगत में थोड़ी पीली सी, बड़ी और गंभीर आँखों वाली बच्ची थी। वह किसी वजह से बच्चों से नाराज़ हो गई थी इसलिए वह उसी बैठक में आ गई जहां मैं बैठा था, और एक कोने में अपनी गुड़िया के साथ खेलने लगी। मेहमान बड़े अदब के साथ एक अमीर ज़मीनदार की तरफ इशारा कर रहे थे जो उसका पिता था और एक

व्यक्ति ने दबी आवाज़ में कहा कि उसके दहेज के लिए तीन लाख रूबल पहले ही रख दिए गए हैं। मैं इस बात में दिलचस्पी दिखाने वाले लोगों को देखने के लिए पलटा तो मेरी निगाह यूलिआन मस्ताकोविच पर पड़ी जो हाथों को पीठ के पीछे बांधे, सर को थोड़ा सा एक तरफ झुकाए बड़े ध्यान से उन लोगों की गपशप को सुन रहा था। बाद में, उपहारों के बंटने के समय मैं मेज़बान दंपति की बुद्धिमता पर आश्चर्य किए बिना न रह सका। सब से बढ़िया गुड़िया उस बच्ची को मिली जिस के पास पहले ही तीन लाख रूबल का दहेज था। उसके बाद माता-पिता के दर्जे के हिसाब से उन सब खुशनसीब बच्चों को निचले दर्जे के उपहार बंटने लगे। आखिरी उपहार लगभग दस साल के दुबले-पतले, छोटे कद के, चेहरे पर झाइओं और लाल बालों वाले लड़के को मिला। यह सिर्फ एक किताब थी जिसमें कहानियाँ थीं प्रकृति की महानता के बारे में, स्नेह के आंसुओं इत्यादि के बारे में। पुस्तक में कोई तस्वीरें नहीं थीं, यहाँ तक कि कोई रेखा-चित्र तक नहीं था। यह बच्चा मालिक के बच्चों की विधवा गवर्नेस का बेटा था और वह काफी दबा और सहमा हुआ सा था। वह एक घटिया सी सूती जैकिट पहने हुए था। पुस्तक मिलने के बाद वह बहुत देर तक दूसरे खिलौनों के आसपास चक्कर लगाता रहा; दूसरे बच्चों के साथ खेलने का उसका बहुत मन था, लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी; साफ दिखाई दे रहा था कि वह अपनी हैसियत को समझता था। मुझे बच्चों के तौर-तरीके देखना बहुत पसंद है। उनमें जीवन की पहली स्वतंत्र अभिव्यक्ति देखना अत्यंत रोचक होता है। मैंने देखा कि दूसरे बच्चों के बढ़िया और सुंदर खिलौनों ने लाल बालों वाले बच्चे को इतना लुभा लिया था, खास तौर से थिएटर ने, जिसमें वह ज़रूर ही हिस्सा लेना चाहता था, कि उसने दूसरों की चापलूसी करने का निर्णय लिया। वह मुस्कुरा रहा था और दूसरे बच्चों की खुशामद कर रहा था। उसने अपना सेब एक मोटे से लड़के को दे दिया, जिस के पास उपहार में मिली चीज़ों से पूरा रुमाल भरा हुआ था। यहाँ तक कि उसने एक बच्चे को अपनी पीठ पर उठा कर भी घुमाया और यह सब इसलिए कि उसे थिएटर से दूर न भगाया जाए। लेकिन कुछ देर बाद एक शैतान बच्चे ने उसे अच्छी तरह से पीट डाला। बच्चे ने रोने तक की हिम्मत नहीं की। उसी समय उसकी गवर्नेस मम्मी वहाँ आई और उसे दूसरे बच्चों के खेल में विघ्न डालने से मना किया। बच्चा उसी बैठक में आ गया जहां वह बच्ची खेल रही थी। बच्ची ने उसे अपने साथ खेलने दिया और वह दोनों बड़े शौक से उस महंगी गुड़िया को सजाने में लग गए।

कोई आधे घंटे से लताओं से घिरी उस बैठक में बैठे हुए मैं गुड़िया से खेलते हुए उन लाल बालों वाले बच्चे और तीन लाख के दहेज वाली सुंदर बच्ची की छोटी-छोटी बातें सुनता हुआ कुछ ऊँघने सा लगा था कि अचानक यूलिआन मस्ताकोविच कमरे में दाखिल हुआ। उसने बच्चों के झगड़े के दृश्य का फायदा उठाया और चुपके से हॉल से निकल गया। मैंने देखा कि एक मिनट पहले वह उस भावी अमीर वधू के पिता के साथ, जिसे वह पहली बार मिला था, एक नौकरी के दूसरी के मुकाबले में फायदे के बारे में बड़ी गर्मजोशी से बात कर रहा था।

अब वह किसी सोच में खड़ा था और ऐसा लगा कि वह उंगलियों पर कुछ हिसाब लगा रहा था।

.. “तीन लाख... तीन लाख,” -- वह बुदबुदाया। -- “ग्यारह... बारह... तेरह... इत्यादि। सोलह - पाँच वर्ष। मान लो सौ पर चार हुए 12, पाँच गुना हुए साठ, मान लो इन साठ के हिसाब से पाँच साल बाद होंगे कुल चार लाख। हाँ, लेकिन यह ठग सौ पे चार तो नहीं लेता होगा। शायद सौ पे आठ या दस लेता होगा। तो समझो कम से कम पाँच लाख हो गए, इतने तो पक्के हैं; और उसके ऊपर कुछ कपड़े लत्तों पर...”

उसने हिसाब खत्म किया, नाक साफ की और कमरे से निकलना ही चाहता था कि अचानक उसकी नज़र बच्ची पर पड़ी और वह रुक गया। पौधों से भरे गमलों के पीछे उसकी नज़र मुझ पर नहीं पड़ी थी। मुझे लगा कि वह काफी बेचैन था। या तो गिनती का उस पर असर पड़ा था या कोई और बात थी, लेकिन वह बार-बार हाथ मसल रहा था और एक जगह पर खड़ा नहीं रह पा रहा था। जब उसने रुक कर भावी वधू पर निर्णायक नज़र डाली तो उसकी उत्तेजना चर्म सीमा पर पहुँच गई। वह आगे बढ़ने लगा, लेकिन पहले उसने चारों ओर देखा। फिर वह दबे पाँव, जैसे खुद को दोषी महसूस कर रहा हो, बच्ची की ओर बढ़ने लगा। मुस्कुराते हुए वह उसके पास आया, झुका और उसके सर को चूम लिया। बच्ची को ऐसे हमले की अपेक्षा नहीं थी और वह डर के मारे चिल्ला उठी।

“अच्छी बच्ची, यहाँ क्या कर रही हैं आप?” उसने दबी आवाज़ में चारों ओर देखते हुए और उसके गाल को थपथपाते हुए पूछा।

“खेल रहे हैं...”

“ओह, इसके साथ?” यूलिआन मस्ताकोविच ने बच्चे की ओर तिरछी नज़र डालते हुए पूछा।

“बच्चे, तुम हॉल में क्यों नहीं चले जाते,” उसने लड़के से कहा। लड़का चुप रहा और उसकी तरफ गौर से देखने लगा। यूलिआन मस्ताकोविच ने फिर से चारों ओर देखा ओर दुबारा लड़की की तरफ झुक गया।

“यह तुम्हारे पास गुड़िया है क्या, प्यारी बच्ची?” उसने पूछा।

“गुड़िया,” बच्ची ने चेहरे पर शिकन डाल कर, थोड़ा घबरा कर कहा।

“गुड़िया... क्या तुम्हें पता है, प्यारी बच्ची, कि आपकी गुड़िया किस चीज़ से बनी है?”

“पता नहीं...” बच्ची ने सर झुका कर फुसफुसाते हुए कहा।

“कपड़े के टुकड़ों से बनी है, प्यारी बच्ची। बच्चे, तुम हॉल में अपने साथियों के पास क्यों नहीं चले जाते,” यूलिआन मस्ताकोविच ने सख्ती से लड़के की तरफ देख कर कहा। बच्ची और बच्चे ने नाक सिकोड़ी और एक दूसरे को जकड़ कर पकड़ लिया। उनका अलग होने का कोई मन नहीं था।

“और क्या आप को पता है, यह गुड़िया आपको क्यों मिली?” यूलिआन मस्ताकोविच ने आवाज़ और धीमी करते हुए पूछा।

“पता नहीं।“

“इसलिए कि पूरा हफ़्ता आप शिष्ट और प्यारी बच्ची बनी रहीं”।

अब यूलिआन मस्ताकोविच ने बहुत घबरा कर चारों ओर देखा और आवाज़ को और भी धीमा करते हुए आखिरकार घबराहट और अधीरता से एकदम मरी हुई आवाज़ में पूछा:

“प्यारी बच्ची, जब में आपके माता-पिता के यहाँ आऊँगा तो क्या आप मुझसे प्यार से पेश आएंगी?”

यह कह कर यूलिआन मस्ताकोविच ने एक बार फिर बच्ची को चूमना चाहा लेकिन लाल बालों वाले बच्चे ने जब यह देखा कि वह रोने ही वाली है तो उसके हाथ

पकड़ लिए और उसके साथ सहानुभूति में रिरियाने लगा। यूलिआन मस्ताकोविच को बहुत गुस्सा आ गया।

"निकल भाग यहाँ से, भाग, भाग जा!" उसने बच्चे से कहा। -- "चल, हॉल में जा, जहां तेरे साथी हैं!"

"नहीं, मत जाओ, मत जाओ। आप यहाँ से जाइए," बच्ची ने कहा।- "यहीं रहने दीजिए इसे, रहने दीजिए!" उसने एकदम रुंधी आवाज़ में कहा।

दरवाज़े के पास कुछ आहट सी सुनाई दी। यूलिआन मस्ताकोविच डर गया, उसने अपने भारी-भरकम शरीर को संभाला और सीधा हो गया। लेकिन लाल बालों वाला बच्चा यूलिआन मस्ताकोविच से भी ज़्यादा डर गया और बच्ची को छोड़ कर, चुपके से दीवार का सहारा लेते हुए बैठक में से डाइनिंग रूम में चला गया। यूलिआन मस्ताकोविच भी वहाँ से डाइनिंग रूम में ही चला गया ताकि किसी को शक न हो जाए। उसका चेहरा टमाटर की तरह लाल हो गया था और शीशे में चेहरा देख कर वह शर्मिंदा सा हो गया। शायद वह अपनी बेचैनी और अधीरता की वजह से खुश नहीं था। या यह भी हो सकता है कि उंगलियों पर लगाए हिसाब ने उसपर इतना प्रभाव डाला, इतना मोहित किया और उकसाया कि अपने सम्मान और महत्व के बावजूद वह एक बच्चे की तरह व्यवहार करने और अपने शिकार पर सीधा धावा बोलने का दुस्साहस कर बैठा; बावजूद इसके कि उसके प्रेम का निशाना पाँच वर्षों से पहले सही मानों में निशाना नहीं बन सकता था। मैं भी उस सम्मानित सज्जन के पीछे-पीछे खाने के कमरे में चला गया और वहाँ मैंने एक अजीब दृश्य देखा। यूलिआन मस्ताकोविच झल्लाहट और गुस्से में लाल बालों वाले लड़के को डरा धमका रहा था और बच्चा उससे बच कर दूर भाग रहा था। डर के मारे उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस तरफ भागे।

"निकल यहाँ से निकम्मे कहीं के, तू यहाँ क्या कर रहा है? हैं!

फल चुरा रहा है क्या यहाँ से? फल चुरा रहा है ना? चल निकल यहाँ से, गंदा, निकम्मा कहीं का, जा अपने साथियों के पास!"

हताश होकर सहमे हुए लड़के ने मेज़ के नीचे घुसने की कोशिश की। यह देख कर बुरी तरह झुँझलाए हुए यूलिआन मस्ताकोविच ने अपना लंबा कैम्ब्रिक का रुमाल निकाला और अब तक बहुत ही सहम चुके बच्चे को रुमाल से मार कर मेज़ के नीचे से

निकालने लगा। यहाँ यह बताना ज़रूरी है कि यूलिआन मस्ताकोविच थोड़ा मोटा था। वह खाया-पिया, सुर्ख, भारी-भरकम, बाहर निकले पेट वाला और मोटी जांघों वाला व्यक्ति था। कुल मिला कर वह गोल-मटोल और मज़बूत था, अखरोट की तरह। वह पसीने में तर था, धौंकनी चल रही थी और उसका चेहरा लाल हो चुका था। अब वह गुस्से से, या हो सकता है (कौन जाने) ईर्ष्या से आग-बबूला था। मैं ठहाका मार कर हंस पड़ा। यूलिआन मस्ताकोविच मुड़ा और अपने ऊंचे रुतबे के बावजूद शर्म से पानी-पानी हो गया। उसी समय सामने के दरवाज़े से मेज़बान कमरे में आ गया। बच्चा मेज़ के नीचे से बाहर निकल आया और अपने घुटने और कुहनियाँ झाड़ने लगा। यूलिआन मस्ताकोविच ने हड़बड़ा कर कोने से पकड़े हुए रुमाल को नाक से लगा लिया।

मेज़बान ने थोड़ी हैरानी से हम तीनों की ओर देखा; लेकिन दीन-दुनिया को समझने वाला संजीदा इंसान होने के नाते उसने अपने मेहमान के साथ अकेले में बात कर सकने के इस मौके का फायदा उठाया। --

“जी यह वही बच्चा है, जिस के बारे में मैंने आप से बात की थी,” उसने लाल बालों वाले लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा।

“क्या?” यूलिआन मस्ताकोविच ने पूछा, जो अभी तक पूरी तरह संभल नहीं पाया था।

“मेरे बच्चों की गवर्नेस का बेटा है,” मेज़बान ने सिफारशी लहजे में बात जारी रखी - “गरीब विधवा औरत है, एक बहुत ही ईमानदार सरकारी मुलाज़िम की पत्नी; और इसलिए, यूलिआन मस्ताकोविच जी, अगर हो सके तो...”

“अरे नहीं भई,” यूलिआन मस्ताकोविच जल्दी से ऊंची आवाज़ में बोला - “माफ़ कीजिएगा फिलिप अलिक्सेएविच जी, यह किसी तरह से न हो पाएगा। मैंने पता किया था। कोई जगह खाली नहीं है, होती भी तो एक सीट के दस उम्मीदवार पहले से ही हैं, जिन का हक इससे कहीं ज़्यादा है... बड़ा अफसोस है मुझे।

“अफसोस” मेज़बान ने दुहराया, -- “बड़ा सीधा-सादा, चुपचाप बच्चा है...”

“बहुत शरारती है, जैसा कि मैं देख रहा हूँ,” यूलिआन मस्ताकोविच ने आवेश में मुंह तिरछा कर के जवाब दिया, -- “जाओ बच्चे, यहाँ क्यों खड़े हो, अपने साथियों के पास जाओ!” उसने लड़के को संबोधित करते हुए कहा।

लगता है यहाँ वह खुद को रोक नहीं पाया और कनखियों से उसने मेरी ओर देखा। मैं भी खुद को रोक नहीं पाया और उसकी ओर देखते हुए ज़ोर से हंस पड़ा। यूलिआन मस्ताकोविच ने उसी समय मुंह फेर लिया और मुझे सुनाने वाले स्वर में मेज़बान से पूछा कि यह अजीब आदमी कौन है। कुछ फुसफुसाते हुए वह कमरे से बाहर निकल गए। मैंने बाद में देखा कि यूलिआन मस्ताकोविच मेज़बान की बात सुनते हुए अविश्वास में सर हिला रहा था।

काफी देर हंसने के बाद मैं हॉल में वापिस चला गया। वहाँ माताओं, पिताओं, मेज़बान और उसकी पत्नी से घिरे हुए यह महानुभव एक महिला को, जिनके पास उन्हें अभी अभी लेजाया गया था, बड़ी गर्मजोशी से कुछ समझा रहे थे। महिला ने उसी बच्ची का हाथ पकड़ा हुआ था, जिसके साथ दस मिनट पहले बैठक में यूलिआन मस्ताकोविच वाला वाकया हुआ था। अब वह उसकी सुंदरता, प्रतिभा, मनोहरता और शिष्टाचार के पुल बांधने में लगा था। ज़ाहिर था कि वह बच्ची की मम्मी को रिझाना चाहता था। माँ के इस तारीफ से खुशी के आँसू निकलने को थे। पिता के होंटों पर मुस्कुराहट थी। मेज़बान सबको खुश देख कर प्रसन्न था। बाकी मेहमान भी खुश हो रहे थे। यहाँ तक कि बच्चों का खेल भी रुकवा दिया गया था ताकि बातों में खलल न पड़े। पूरा श्रद्धा का वातावरण बना हुआ था। बाद में मैंने सुना कि दिल की गहराइयों को छू जाने वाली बातों से प्रभावित होकर बच्ची की मम्मी यूलिआन मस्ताकोविच को चुने शब्दों में अपने घर पधारने का सम्मान देने का न्योता दे रही थीं; मैंने यह भी सुना कि यूलिआन मस्ताकोविच बड़ी प्रसन्नता से न्योता स्वीकार कर रहा था। कुछ समय बाद प्रथा के अनुसार मेहमान अपने-अपने घर जाते समय ज़मीनदार, उसकी पत्नी, बच्ची और खास तौर से यूलिआन मस्ताकोविच की भीनी प्रशंसा करते नहीं थक रहे थे।

“यह सज्जन शादीशुदा हैं?” मैंने ज़रा ऊंचे लहजे में अपने एक परिचित से पूछा जो यूलिआन मस्ताकोविच के बराबर में खड़ा था।

यूलिआन मस्ताकोविच ने मेरी ओर पैनी और ज़हरीली निगाह डाली।

“नहीं!” मेरे परिचित ने उत्तर दिया। वह मेरी इस जान बूझ कर की हुई भद्दी हरकत से बहुत दुखी था।

कुछ दिन पहले मैं *** गिरजाघर के सामने से गुज़र रहा था। भीड़ और जमावड़ा देख कर मैं हैरान था। सभी शादी की बात कर रहे थे। बादल छाए हुए थे, बूँदाबाँदी शुरू हो रही थी; मैं भीड़ के पीछे-पीछे चर्च में दाखिल हुआ और दूल्हे को देखा। वह एक छोटे कद का, गोल-मटोल, खाया-पिया, तोंद वाला बहुत सजा-धजा व्यक्ति था। वह इधर-उधर भागते हुए काम करवा रहा था और कुछ हिदायतें दे रहा था। आखिरकार लोग कहने लगे कि दुल्हन आ गई है। मैं भीड़ को चीर कर आगे बढ़ा और एक अद्भुत सुंदरी को देखा जिसने किशोर अवस्था अभी मुश्किल से पार की थी। लेकिन सुंदरी पीली पड़ी हुई थी और उदास दिख रही थी। वह विचलित दिखाई दे रही थी; मुझे तो यहाँ तक लगा कि हाल ही में रोने की वजह से उसकी आँखें लाल थीं। चेहरे के हर नक्श की उत्कृष्ट असाधारणता उसकी सुंदरता को विशिष्टता और दिव्यता प्रदान कर रही थी। परंतु इस विशिष्टता, दिव्यता और उदासी के पीछे बचपन की मासूम छवि भी झलक रही थी। एक ऐसी भोली-भाली, अल्पायु, अस्थिर छवि जो कि मानो बिना कहे अपने लिए दया की भीख मांग रही हो।

कहा जा रहा था कि वह अभी मुश्किल से सोलह वर्ष की हुई थी। मैंने दूल्हे को ध्यान से देखा तो यूलिआन मस्ताकोविच को पहचान लिया। मैंने उसे पूरे पाँच साल से नहीं देखा था। मैंने एक बार फिर दुल्हन पर नज़र डाली... हे भगवान! मैं जल्दी से चर्च से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। भीड़ में बात चल रही थी कि दुल्हन अमीर है, उसके पास पाँच लाख का दहेज है... और इतनी रकम कपड़े-लत्ते के लिए...

“तो हिसाब बिल्कुल सही था!” मैंने भीड़ को चीर कर गिरजाघर से बाहर निकल कर सोचा...

संदर्भ - Ф.М. Достоевский. Собрание сочинений в 15 томах. Л.: Наука. Ленинградское отделение, 1988. Т. 2. http://az.lib.ru/d/dostoewskij_f_m/text_0220.shtml [10.01.2022]

बबोक

चारुमती रामदास
रुसी अध्ययन विभाग
अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय
हैदराबाद, तेलंगाना

इस बार "एक व्यक्ति के नोट्स" दे रहा हूँ. ये मैं नहीं बल्कि कोई और ही इन्सान है. मेरा ख़याल है कि किसी अन्य प्रस्तावना की ज़रूरत नहीं है.

एक व्यक्ति के नोट्स

सिम्योन अर्दाल्योनविच ने तीसरे दिन मुझसे कहा:

"इवान इवानविच, मेहरबानी करके बताओ, कि क्या तुम कभी होश में रहोगे?"

अजीब माँग है. मैं बुरा नहीं मानता, मैं डरपोक किस्म का आदमी हूँ, मगर, फिर भी उन्होंने मुझे पागल बना दिया. चित्रकार ने संयोगवश मेरा चित्र बना दिया: "बोला, वैसे भी तुम साहित्यकार हो". मैं मान गया. उसने प्रदर्शित कर दिया. मैंने पढ़ा, उसके नीचे लिखा था: "आइये, इस बीमार, पागल जैसे चेहरे को देखिये."

चलो, जाने दो, मगर सीधे छपवा दिया? प्रेस में सब कुछ अच्छा ही जाना चाहिये, कुछ आदर्श होने चाहिये, मगर यहाँ...

कम से कम घुमा-फ़िरा कर ही कहो. शब्द और अभिव्यक्ति तो इसीलिये हैं ना. नहीं, वह घुमा-फ़िरा कर कहना ही नहीं चाहता. आजकल हास्य और अच्छी शैली लुप्त होते जा रहे हैं, और व्यंग्य के स्थान पर गालियों का प्रयोग होने लगा है. मैं बुरा नहीं मानता: ख़ुदा ही जानता है, कि कौन साहित्यकार कब पागल हो जायेगा. लघु-उपन्यास लिखा - नहीं छापा. व्यंग्यात्मक लेख लिखा - अस्वीकार कर दिया. इन व्यंग्यात्मक लेखों

को मैं अनेक प्रकाशकों के पास ले गया, सबने इनकार कर दिया. बोले "आप में वो बात नहीं है, नमक नहीं है."

मैं मज़ाक में पूछता हूँ: "कौनसा नमक चाहिए तुझे? एटिक वाला? (यहां तीक्ष्ण व्यंग्य से तात्पर्य है - अनु.)

उसे समझ में ही नहीं आता. अधिकांशतः मैं पुस्तक विक्रेताओं के लिए फ़्रांसीसी से अनुवाद करता हूँ. व्यापारियों के लिए इश्तेहार भी लिखता हूँ: "दुर्लभ वस्तु! पेश है, लाल-लाल चाय अपने बागानों से...." स्वर्गीय महामहिम प्योत्र मत्वेयेविच के स्तुतिगान के लिए अच्छी खासी रकम मिल गई. पुस्तकविक्रेता के आदेश पर "महिलाओं को लुभाने की कला" लिख डाली. इस तरह की करीब छः पुस्तिकाएँ अपने जीवन में लिख डालीं. वोल्टेयर के व्यंग्यों को संकलित करना चाहता हूँ, मगर डरता हूँ कि हमारे लोगों को फीके न नजर आएं. अब कहां का वाल्टेयर; आजकल तो सभी ठस-दिमाग हैं न कि वाल्टेयर! एक-दूसरे के बचे-खुचे दांत तक निकाल दिए! बस, इतना ही है मेरा साहित्यिक कार्यकलाप. प्रकाशन गृहों में अक्सर मुफ्त में पत्र भेज दिया करता हूँ, अपने पूरे हस्ताक्षर के साथ. हर तरह के उपदेश और सलाह देता हूँ, आलोचना करता हूँ और रास्ता दिखाता हूँ. एक प्रकाशन गृह में तो पिछले दो सालों से पत्र भेज रहा हूँ, पिछले हफ्ते उन्हें चालीसवां पत्र भेजा: सिर्फ डाक टिकटों पर ही चार रूबल्स खर्च कर दिए. स्वभाव से मैं सनकी हूँ, और क्या.

मेरा ख़याल है कि चित्रकार ने साहित्य की खातिर मेरा चित्र नहीं बनाया, अपितु मेरे कपाल पर स्थित दो सममितीय तिलों की खातिर बनाया: जैसे कोई अद्भुत चीज़ हो. कल्पनाशक्ति तो है नहीं, तो अब वे अद्भुत चीजों पर ध्यान देते हैं. और उसके चित्र में मेरे तिल कैसे नजर आ रहे हैं - जैसे बिल्कुल ज़िंदा हों! वे इसे यथार्थवाद कहते हैं.

और जहाँ तक पागलपन का सवाल है, तो पिछले साल हमारे यहाँ अनेक लोगों को पागल करार दे दिया गया. और कहा क्या: "ऐसी मूल प्रतिभा के होते हुए...मगर इसका आख़िरी अंजाम क्या हुआ...वैसे, इसे बहुत पहले समझ जाना चाहिए था..." ये बड़ी चालाकी की बात है; अतः शुद्ध कला की दृष्टी से उसकी तारीफ़ भी की जा सकती है. मगर वे और भी होशियार निकले. हमें तो पागल बनाने पर तुले हैं, मगर किसी को ज़्यादा अक्लमंद भी नहीं बनाया.

मेरे ख़याल से सबसे ज़्यादा अक्लमंद वह है जो महीने में कम से कम एक बार खुद को बेवकूफ़ कहता है. - ये योग्यता आजकल सुनने में नहीं आती! पहले, बेवकूफ़, साल में कम से कम एक बार तो अपने बारे में जानता था कि वह बेवकूफ़ है, मगर अब - बिलकुल नहीं. और बातें इस हद तक उलझ गईं कि बेवकूफ़ और अक्लमंद में फ़र्क ही नहीं कर सकते. ऐसा उन्होने जानबूझकर किया.

एक स्पैनिश व्यंग्य याद आता है, जब फ़्रांसीसियों ने, ढाई शताब्दी पहले अपने यहाँ पहले पागलखाने का निर्माण किया था: "उन्होंने अपने सभी मूर्खों को एक विशेष घर में बंद कर दिया, यह यकीन दिलाने के लिए कि वे खुद अक्लमंद इंसान हैं." इसका सीधे-सीधे यही मतलब हुआ: कि दूसरे को पागलखाने में बंद करके अपनी बुद्धिमत्ता साबित नहीं कर सकते. " 'क' पागल हो गया, इसका मतलब ये हुआ कि अब हम बुद्धिमान हैं". नहीं अभी भी इसका मतलब यह नहीं होता.

खैर, जहन्नुम में जाएँ....और यह, कि मैं अपने दिमाग से बिदा ले चुका हूँ: बड़बड़ाता रहता हूँ, बड़बड़ाता रहता हूँ. यहाँ तक कि अपनी नौकरानी को भी बेज़ार कर दिया है. कल दोस्त आया था: "कहता है, तुम्हारी शैली बदल रही है, टूटी-फूटी हो रही है. तोड़ रहे हो, तोड़ रहे हो - निक्षिप्त उपवाक्य, निक्षिप्त उपवाक्य के साथ एक और निक्षिप्त उपवाक्य, फिर कोष्ठकों में कुछ और रखते हो, और बाद में फिर उसे तोड़ते हो, तोड़ते हो..."

दोस्त सही है. मेरे साथ कुछ अजीब बात हो रही है. और मेरा स्वभाव भी बदल रहा है, और सिर दर्द करता है. मैं अजीब-अजीब चीज़ें देखने और सुनने लगता हूँ. मतलब आवाजे तो नहीं, मगर ऐसे, जैसे मेरे नज़दीक कोई कह रहा हो : "बबोक, बबोक, बबोक!" (*"बबोक" का अर्थ है धरती में पड़ा हुआ बीज, जो प्रस्फुटित भी हो सकता है और नष्ट भी हो सकता है. इस शब्द को ऐसे ही रहने दिया गया है - अनु.)*

कहां का बबोक? दिल बहलाना चाहिए.

दिल बहलाने के लिए निकला था, अंतिम यात्रा में पहुँच गया. दूर का रिश्तेदार. सरकारी अफसर था छठी श्रेणी का. विधवा, पांच बेटियां, सभी कुंआरी. सिर्फ जूतों का खर्चा है, काम चल जाएगा! मृतक ने खूब पैसे ऐंठे, मगर अब - थोड़ी सी पेंशन. फूंक फूंक कर कदम रखेगीं. मेरा उनके यहां हमेशा अप्रियता से स्वागत होता था. इस समय भी मैं नहीं जाता अगर ऐसी आपातकालीन स्थिति न होती. औरों की तरह क़ब्रिस्तान तक गया; सब मुझसे दूर-दूर रहते हैं और बड़ा फ़ख्र महसूस करते हैं. मेरा यूनिफार्म वाकई में बहुत बुरी हालत में है. शायद, मैं क़रीब पिछले पच्चीस साल से क़ब्रिस्तान नहीं गया हूँ; ये भी क्या जगह है!

पहली बात, माहौल. करीब पंद्रह मृतक पहुंचे थे. अलग-अलग कीमत के ताबूतो के ढक्कन; दो खुली ताबूत-गाड़ियां भी थीं: एक किसी जनरल की और दूसरी किसी महिला की. कई मातमी चेहरे थे, और कई बनावटी मातम का मुखौटा ओढ़े, और कई सारे तो खुल्लम-खुल्ला खुश नज़र आ रहे थे. चर्च के कर्मचारियों की तो पूछो ही मत: अच्छी खासी आय हो जाती है. मगर माहौल, माहौल. मैं कभी भी यहाँ का पादरी नहीं बनना चाहता.

अपनी संवेदनशीलता पर भरोसा न करते हुए सावधानी से मृतकों के चेहरे झांक कर देखने लगा. कुछ पर सौम्य भाव हैं, कुछ पर अप्रिय भाव भी हैं. आम

तौर से मुस्कानें अच्छी नहीं हैं, किसी-किसी की तो बेहद अप्रिय हैं. मुझे अच्छा नहीं लगता; सपनों में आते हैं.

प्रेयर के समय चर्च से बाहर खुली हवा में निकल गया; दिन का समय था, बादल छाये हुए थे, मगर सूखा था. और ठंडा भी; ठीक तो है, अक्टूबर आ गया है. थोड़ी देर क़ब्रों के चक्कर लगाये. अलग-अलग श्रेणियाँ हैं. तीसरी श्रेणी तीस रुबल्स में, ठीक-ठाक है और उतनी महंगी भी नहीं है. पहली दो श्रेणियाँ चर्च के भीतर और पोर्च में हैं; पर ये बहुत महंगी हैं. इस बार तीसरी श्रेणी में करीब छः आदमियों को दफ़नाया गया, जिनमें जनरल और महिला भी थे.

क़ब्रों में झाँककर देखा - भयानक: उनमें पानी ही पानी था, और वो भी कैसा पानी! एकदम हरा! और...चलो. ठीक है! क़ब्र खोदने वाला हर मिनट उसे तसले से बाहर उलीच रहा था. जब तक सर्विस चल रही थी, गेट के बाहर घूमने निकल गया. यहाँ अब भंडारघर है, और कुछ आगे एक रेस्टारेंट. रेस्टारेंट ठीक-ठाक ही था: नाश्ते की सामग्री और सभी कुछ था. बिदा देने वालों में से भी बहुत सारे लोग वहां भरे थे. काफी हार्दिक प्रसन्नता और ज़िंदादिली नज़र आई. मैंने थोड़ा सा खाया और पिया.

इसके बाद खुद भी ताबूत को कंधा देकर क़ब्र तक ले जाने में सहायता की. ये मुर्दे ताबूत में इतने भारी क्यों हो जाते हैं? कहते हैं कि किसी निष्क्रियता के कारण, कि शरीर का खुद पर नियंत्रण नहीं रहता...या इसी तरह की बकवास; जो यांत्रिकी और सामान्य ज्ञान के विपरीत है. मुझे अच्छा नहीं लगता कि केवल सामान्य रुप से शिक्षित होने के बावजूद, लोग ना-ना प्रकार के विशेषज्ञों की भांति मसले हल करने में जुट जाते हैं. और हमारे यहाँ तो यह बहुत ही अधिक होता है. सिविलियन्स (गैरफ़ौजी) फ़ौजी और यहाँ तक कि फ़ील्डमार्शल के मामलों पर अपनी राय देने लगते हैं, और इन्जीनियरिंग की शिक्षा पाए हुए लोग ज्यादातर दर्शनशास्त्र और राजनीतिक अर्थशास्त्र के बारे में अपनी राय देते हैं.

फ्यूनरल सर्विस में नहीं गया. मैं स्वाभिमानी हूँ, और अगर मेरा सिर्फ मजबूरी में स्वागत किया जाता है, तो उनके डिनर पर भी क्यों जाना, चाहे वह फ्यूनरल-डिनर ही क्यों न हो? बस, यही समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क़ब्रिस्तान में क्यों रुक गया; एक स्मारक पर बैठ गया और इसी तरह का कुछ सोचने लगा.

मॉस्को- प्रदर्शनी से शुरु किया, और आश्चर्य के बारे में ख़त्म किया, जैसे किसी विषय के बारे में हो. "आश्चर्य" के बारे में मैंने यह निष्कर्ष निकाला:

"हर बात पर आश्चर्य करना, बेशक, बेवकूफ़ी है, और किसी भी बात पर आश्चर्य न करना काफी अच्छा है और न जाने क्यों इसे अच्छी आदत माना जाता है. मगर वास्तव में मुश्किल से ही ऐसा होता है. मेरे ख़याल में किसी भी बात से आश्चर्यचकित न होना ज़्यादा बड़ी बेवकूफ़ी है, बनिस्बत हर चीज़ से आश्चर्यचकित होने के. और इसके अलावा, किसी भी बात पर आश्चर्य न करना करीब-करीब वैसा ही है, जैसे किसी भी चीज़ की इज्ज़त न करना. और बेवकूफ़ आदमी इज्ज़त नहीं भी कर सकता है."

"हाँ, सबसे पहले, मैं इज्ज़त करना चाहता हूँ. मैं इज्ज़त करने के लिए लालायित हो रहा हूँ" मुझसे हाल ही में एक बार किसी परिचित ने कहा था.

वह इज्ज़त करने के लिए लालायित है! ओह खुदा, मैंने सोचा, अगर मैं इसे प्रकाशित करने की गुस्ताखी कर दूं तो तुम्हारा क्या होगा!

और यहीं मैं ख्यालों में खो गया. क़ब्र के ऊपर खुदे हुए शिलालेख पढ़ना मुझे अच्छा नहीं लगता; हमेशा एक ही चीज. 'मेरी बगल में एक पत्थर पर आधा खाया हुआ सैण्डविच पड़ा था: निहायत बेवकूफ़ी और इस जगह के लिए अनुचित. मैंने उसे धरती पर फेंक दिया, क्योंकि यह ब्रेड नहीं बल्कि सिर्फ सैण्डविच है. वैसे धरती पर ब्रेड के टुकड़े फेंकना, शायद पाप नहीं है; फर्श पर फेंकना पाप है. सुवोरिन के कैलेण्डर में देखना पड़ेगा.

शायद मैं काफ़ी देर बैठ गया, बहुत ही ज़्यादा; मतलब, संगमरमर की क़ब्र जैसे लम्बे पत्थर पर लेट भी गया. और, ऐसा कैसे हुआ कि मैं अचानक विभिन्न चीज़ें सुनने लगा? पहले तो मैंने ध्यान नहीं दिया और परवाह भी नहीं की. मगर, बातचीत चलती

रही. सुन रहा हूँ - घुटी-घुटी आवाजें, जैसे मुँह तकियों से बंद किये गए हों; मगर फिर भी वे स्पष्ट और काफी निकट थीं. मैं जाग गया, उठकर बैठा और ध्यान से सुनने लगा.

"महामहिम, ये किसी भी तरह संभव नहीं है. आपने पान का पत्ता डिक्लेयर किया था, मैं ह्विस्ट (*ताश का खेल - कोटपीस - अनु.*) खेल रहा हूँ, और अचानक आपके पास - ईंट की सत्ती. आपको पहले ही ईंट के बारे में बताना चाहिए था."

"ये क्या, मतलब. मुँह-जुबानी खेलना? उसमें क्या मज़ा है?"

"नामुमकिन, महामहिम, बिना ग्यारंटी के बिलकुल नामुमकिन है. किसी बदमाश के साथ खेलना ज़रूरी है, और वो भी सिर्फ 'ब्लैक'.

"खैर, बदमाश को तो यहाँ नहीं ढूँढ सकते."

मगर, कितने मग़रूर लब्ज़ हैं! वो भी अजीब और अप्रत्याशित. एक भारी, दमदार आवाज़ है, दूसरी मुलायम, मीठी; अगर खुद न सुनता तो यकीन नहीं करता. प्रेयर मीटिंग में मैं, शायद, गया नहीं था. और, आखिर, 'प्रेफेरेंस' के बारे में यहाँ कैसे बात हो रही है, और ये जनरल कौन है? इसमें कोई शक नहीं था कि ये आवाजें क़ब्रों के नीचे से आ रही हैं. मैंने झुककर स्मारक पर लिखी इबारत को पढ़ा:

"यहाँ घुड़सवार दस्ते के, फलां-फलां मेडल्स से सम्मानित मेजर-जनरल पेर्वायेदव का पार्थिव शरीर विश्रान्ति ले रहा है." हुँ. मृत्यु इस साल अगस्त में हुई...सत्तावन साल का...लेता रह विश्रान्ति प्यारे पार्थिव, खुशनुमा सुबह होने तक!

हुँ, शैतान ले जाए, वाकई में जनरल! दूसरी क़ब्र पर, जहाँ से चापलूसी भरी आवाज़ आ रही थी, अभी तक स्मारक नहीं था; सिर्फ टाइल थी; कोई नया होना चाहिये. आवाज़ से कोर्ट का कौंसिलर लगता है.

"ओह-हो-हो-हो!" एकदम नई आवाज़ सुनाई दी, जनरल वाली जगह से दस मीटर दूर और बिलकुल ताज़ी क़ब्र के नीचे से. - ये पुरुष की और एक सामान्य आदमी की आवाज़ थी मगर भले-प्यारे अंदाज़ में, नर्म-नाज़ुक.

“ओह-हो-हो-हो!”

“आह, वह फिर से हिचकियाँ ले रहा है!” - अचानक. नकचढ़े अंदाज़ में, उच्च समाज की प्रतीत होती महिला की कर्कश और चिड़चिड़ी आवाज़ आई. “कैसी सज़ा है मेरे लिये इस दुकानदार की बगल में रहना!”

“कोई हिचकी-विचकी नहीं ली मैंने, और कुछ खाया भी नहीं है, यह मेरी आदत ही है. मगर आप, मैडम अपने यहाँ के नखरों से बाज़ नहीं आ सकतीं.”

“तो आप यहाँ लेटे ही क्यों थे?”

“मैं खुद नहीं लेटा था, लिटा दिया मुझे, लिटा दिया बीबी और छोटे बच्चों ने. मृत्यु का संस्कार! आपकी बगल में तो मैं किसी कीमत पर नहीं लेटता, सोने की मुहरों के बदले भी नहीं, अपने पैसे देकर लेटा हूँ, अगर कीमत की तरफ ध्यान दें तो. क्योंकि अपनी क़ब्र को तीसरी श्रेणी में रखना हमारे लिए हमेशा संभव है.”

“जमा किये; लोगों को ठगता रहा?”

“आपको कैसे ठग सकता हूँ, अगर जनवरी से आपकी तरफ से कोई भुगतान ही नहीं हुआ है. दूकान में आपके नाम का खाता है.”

“आहा, ये तो सरासर बेवकूफ़ी है; मेरे ख़याल में, यहाँ, उधारी वसूल करना बहुत बड़ी बेवकूफ़ी है! ऊपर जाओ. भतीजी से पूछो, वह वारिस है.”

“अब कहाँ पूछना और कहाँ जाना. दोनों सीमा तक पहुँच चुके हैं और खुदा के इन्साफ के सामने बराबर के गुनाहगार हैं.”

“गुनाहगार!” मृतक महिला ने तिरस्कारपूर्ण भाव से उसे चिढ़ाया. “मुझसे बात करने की ज़रा भी हिम्मत न करना!”

“ओह-हो-हो-हो-हो!”

“मगर, दुकानदार तो महिला की बात सुनता है, महामहिम.”

“आखिर वो क्यों नहीं सुनेगा?”

“हाँ, जाहिर है, महामहिम, क्योंकि यहां नई व्यवस्था है.”

“ये कैसी नई व्यवस्था है?”

“आखिर, एक तरह से, हम तो मर चुके हैं, महामहिम.”

“आह, हाँ! मगर फिर भी व्यवस्था तो है...”

“हाँ, उधार दिया; कहने की कोई बात ही नहीं है, धीरज बंधाया! अगर यहाँ भी बात इस हद तक पहुँची है, तो ऊपर वाली मंजिल के बारे में कहना ही क्या है? आखिर, कैसी-कैसी बातें हैं! मगर, सुनता रहा, चाहे बेहद नाराजगी से ही सही.”

“नहीं, मैं कुछ और ज़िंदा रहता! नहीं...मैं, पता है...मैं और ज़िंदा रहता!...” अचानक जनरल और चिड़चिड़ी महिला के बीच की खाली जगह से किसी की नई आवाज़ सुनाई दी.

“सुन रहे हैं, महामहिम, हमारा वाला फिर वही कहे जा रहा है. तीन-तीन दिन खामोश रहता है, और अचानक, “मैं और ज़िंदा रहा जाता, नहीं, मैं और ज़िंदा रहा जाता!” और देखिये, ऐसी शिद्दत से, ही-ही!”

“और छिछोरेपन से.”

“ये ख्वाहिश उसे खाए जाती है, महामहिम, और, जानते हैं, वह सो जाता है, बिलकुल सो जाता है, अप्रैल से यहाँ है, और अचानक: “मैं और ज़िंदा रह जाता!”

“मगर, फिर भी, थोड़ा उबाऊ है,” महामहिम ने टिप्पणी की.

“थोड़ा उबाऊ है, महामहिम, क्या अव्दोत्या इग्नात्येवा को फिर से सताया जाए, ही-ही?”

“नहीं, मेहरबानी से जाने दो. इस बदहवास चुड़ैल को बरदाश्त नहीं कर सकता.”

“बल्कि, इसके विपरीत, मैं आप दोनों को बरदाश्त नहीं कर सकती,” चुड़ैल तैश से चीखी. “आप दोनों परले दर्जे के उबाऊ हैं और कोई भी अच्छी बात नहीं कह सकते. मैं, आपके बारे में, महामहिम, - कृपया अकड़ मत दिखाइये, - आपके बारे में एक किस्सा जानती हूँ कि कैसे दरबान ने दम्पत्ति वाले पलंग के नीचे से आपको सुबह झाड़ू से बाहर निकाला था.”

“बेकार औरत!” जनरल ने दांत पीसते हुए कहा. “अम्मा. अव्दोत्या इग्नात्येव्ना,” दुकानदार फिर से बिसूरने लगा, “मालकिन मेरी, कड़वाहट को याद रखे बिना, मुझे बताओ कि मैं ये तकलीफ़ें क्यों झेल रहा हूँ, या कुछ और हो रहा है?”

“आह, ये फिर से शुरू हो गया, मुझे अंदाजा तो था, क्योंकि उससे बू आ रही है, बू, और ये लोट-पोट कर रहा है!”

“मैं लोटपोट नहीं कर रहा हूँ, अम्मा, और मुझसे ऐसी कोई ख़ास बू भी नहीं आ रही है, क्योंकि मैं अपने पूरे जिस्म में हूं, जैसे भी हो, मैंने अपने आप को संभाल कर रखा है, मगर आप, मैडम, सड़ने लग गई हैं, क्योंकि बू वाकई में बर्दाश्त से बाहर है, इस जगह पर भी. सिर्फ शराफत के मारे खामोश हूँ.”

“आह, ज़लील करने वाले शैतान! तुझसे ही बू आ रही है, और वह मुझ पर इलज़ाम लगा रहा है...”

“ओह-हो-हो-हो! कम से कम हमारे चालीसे वाले ही जल्दी आ जाते: आंसुओं से लबालब उनकी आवाजें अपने ऊपर सुनूँगा, बीबी का विलाप और बच्चों का खामोश रोना!...”

“लो, किसलिए रोएंगे: पेट भर के खायेंगे, पियेंगे और चले जायेंगे. आह, कम से कम कोई तो जाग जाता!”

“अव्दोत्या इग्नात्येव्ना,” चापलूस क्लर्क बोला. “ज़रा देर रुक जाईयें, नए लोग बोलने लगेंगे.”

“क्या उनके बीच जवान लोग हैं?”

“जवान भी हैं, अव्दोत्या इग्नात्येव्ना. नौजवान भी है.”

“आह, कितनी अच्छी बात है!”

“क्या हुआ, क्या अभी शुरू नहीं किया?” महामहिम ने जानकारी ली.

“तीसरे दिन वाले भी अभी नहीं जागे हैं, महामहिम, आप गौर फरमाइए, कभी-कभी एक हफ्ता भी खामोश रहते हैं. ये तो अच्छा है कि उन्हें कल, तीसरे दिन और आज एक साथ अचानक ले आये. वरना तो हमारे चारों और पच्चीस मीटर के घेरे में पिछले साल वाले ही हैं.”

“हाँ, बात तो दिलचस्प है.”

“महामहिम. आज सेवारत प्रिवी कौंसिलर तरासेविच को दफनाया गया. मैंने आवाजों से पहचाना. उसका भतीजा मेरा परिचित है, अभी ताबूत को दफनाया.”

“हुँ, यहाँ पर कहाँ है वो?”

“ये रहा, आपसे करीब पाँच कदम दूर, महामहिम, बाईं ओर. करीब-करीब आपके पैरों के पास... महामहिम, आपको मुलाक़ात कर लेना चाहिए.”

“हुँ, नहीं...मैं ही क्यों पहल करूँ...”

“वह खुद ही शुरुआत करेगा, महामहिम. वह चापलूसी भी करेगा, यह काम मुझ पर सौंपिए, महामहिम, और मैं...”

“आह, आह...आह, ये मुझे क्या हो रहा है?” अचानक एक नई, घबराई हुई आवाज़ फूटी.

“नई, महामहिम, नई, खुदा का शुक्र है, और कितनी जल्दी! कभी-कभी तो एक-एक हफ्ता चुप रहते हैं.”

“आह, लगता है, जवान आदमी है,” अव्दोत्या इग्नात्येव्ना चीखी.

“मैं...मैं...मैं किसी जटिलता के कारण और इतने अकस्मात्!” जवान आदमी फिर से बडबड़ाया. “मुझसे शुल्त्स ने शाम को ही कहा था: आपका ‘केस’, बोला, उलझ गया है, और मैं अचानक सुबह मर भी गया. आह! आह!”

“कुछ भी नहीं किया जा सकता है, नौजवान,” प्यार से और स्पष्ट रूप से नवागन्तुक पर खुश होते हुए जनरल ने टिप्पणी की, “अपने आप को धीरज देना होगा! हमारी इस, क्या कहते हैं, जोसेफात घाटी में आपका स्वागत है. हम भले आदमी हैं, जानोगे और सराहोगे. आपकी खिदमत में हाज़िर हूँ, मैं मेजर-जनरल वसीलिय वसील्येव पेर्वायेदव.”

“आह, नहीं! नहीं, नहीं, ऐसा मैं किसी हालत में नहीं कर सकता! मैं शुल्त्स के पास जाता हूँ; मेरा केस, पता है, उलझ गया है, पहले सीने में जकड़न और खाँसी, और फिर ज़ुकाम हो गया: सीना और फ़्लू... और फिर अकस्मात् ...ख़ास बात, एकदम अकस्मात्.”

“आप कह रहे हैं, पहले सीना,” क्लर्क हौले से बातचीत में शामिल हो गया, जैसे नवागंतुक का हौसला बढ़ा रहा हो.

“हां, सीना और बलगम, और फिर अचानक बलगम गायब हो गया और सीना, और सांस नहीं ले पा रहा हूँ ...और जानते हैं...”

“जानता हूँ, जानता हूँ . मगर यदि सीने की तकलीफ है, तो आपको एको के पास जाना चाहिए, न कि शुल्त्स के पास.”

“और मैं, पता है, बोत्किन के पास जाने ही वाला था...और अचानक...”

“मगर बोत्किन जेब पर भारी पड़ता है,” जनरल ने टिप्पणी की.

“आह, नहीं, नहीं वह बिलकुल भी जेब पर भारी नहीं पड़ता है; मैंने सुना है कि वह इतना ध्यान देता है और सब कुछ पहले ही बता देता है.”

“महानुभाव का इशारा उसकी फ़ीस की तरफ़ था,” अफसर ने उसे सुधारा.

“आह, ये आप क्या कह रहे हैं, सिर्फ तीन कलदार (तीन रुबल), और वह इतनी अच्छी तरह जांच करता है, और नुस्खा ...और मैं बिलकुल यही चाहता था, क्योंकि लोगों ने मुझसे कहा था...आपका क्या ख़याल है, महाशयों, मुझे क्या करना चाहिए, एको के पास जाऊँ या बोत्किन के पास?”

“क्या? कहाँ,” प्यारा-सा ठहाका लगाते हुए जनरल की लाश झूमने लगी. क्लर्क ने भी जोर से हँसते हुए उसकी नक़ल की.

“प्यारे बच्चे, प्यारे, खुशगवार बच्चे, मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ!” अव्दोत्या इग्नात्येव्ना जोश से चिल्लाई. “अगर बगल में ऐसे किसीको लिटा दिया जाए तो!”

नहीं, मैं इसकी इजाज़त नहीं दे सकता! और ये मॉडर्न मुर्दा है! खैर, आगे सुनना चाहिए और जल्दी में कोई निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए. ये बच्चा नया है - मैं उसे अभी-अभी ताबूत में देखकर आया हूँ, याद है - घबराए हुए चूजे का भाव, दुनिया में सबसे घिनौना! खैर, सुनें, आगे क्या हो रहा है.

मगर आगे तो इतना हंगामा हुआ कि मैं हर बात याद न रख सका, क्योंकि बहुत सारे मुर्दे एकदम जाग गए: क्लर्क जाग गया, जो शासकीय सलाहकार परिषद से था, और फ़ौरन जनरल से मिनिस्ट्री की नई सब-कमिटी के प्रोजेक्ट के बारे में, वहां के मामलात के बारे में और सब-कमिटी से संबंधित अफसरों के तबादलों के बारे में शुरू हो गया, जिसने जनरल को अधिकाधिक आकर्षित कर लिया. स्वीकार करता हूँ कि मुझे काफी नई बातें मालूम हुईं, कि कैसे-कैसे तरीकों से इस राजधानी में प्रशासकीय समाचार मालूम किये जाते हैं. इसके बाद एक इंजीनियर आधा जागा, मगर बड़ी देर तक निरर्थक बडबडाता रहा, जिससे हमारे लोगों में से किसी ने उसे परेशान नहीं किया, और फिलहाल उसे पड़े रहने दिया. अंत में क़ब्र के उत्साह के लक्षण उस कुलीन महिला में भी प्रकट हुए जिसे सुबह खुली ताबूत-गाड़ी में दफनाया गया था. लेबेज्यात्निकव (जनरल पेर्वायेदव की बगल में दफ़न चापलूस, जिससे मैं नफ़रत करता था, उस कोर्ट-कौंसिलर का यही नाम था). वह

बहुत हड़बड़ी में और हैरान था कि इस बार सब कितनी जल्दी जाग रहे हैं. मानता हूँ कि मैं भी हैरान था; वैसे, जागे हुए कुछ लोग तीन दिन पहले दफनाये गए थे, जैसे, मिसाल के तौर पर एक बेहद जवान, सिर्फ सोलह साल की लड़की, जो हमेशा खिलखिलाया करती थी - गंदी और घिनौनी खिलखिलाहट थी उसकी.

"महामहिम, प्रिवी-कौंसिलर तरासेविच जाग रहे हैं," अचानक बड़ी जल्दबाजी से लेबेज्यात्निकव ने सूचना दी.

"आँ? क्या?" जाग चुका प्रिवी-कौंसिलर अचानक नकचढ़ी और तोतली आवाज़ में बुदबुदाया. उसकी आवाज़ कुछ सनकी, हुकूमतभरी थी. मैं उत्सुकता से सुनने लगा, क्योंकि पिछले कुछ दिनों में मैंने इस तरासेविच के बारे में कुछ सुना था - परले दर्जे का लुभावना और परेशान करने वाला.

"ये मैं हूँ, महामहिम, अभी तक तो सिर्फ मैं."

"क्या कह रहे हो और तुम्हें क्या चाहिए?"

"सिर्फ आपकी सेहत के बारे में जानना चाहता था, महामहिम; आदत न होने की वजह से शुरू में सभी को काफी घुटन महसूस होती है...जनरल पेर्वायेदव आपसे परिचय करने का सम्मान प्राप्त करना चाहते हैं, महामहिम...और उम्मीद करते हैं..."

"नहीं सुना."

"मेहरबानी फरमाइए, महामहिम. जनरल पेर्वायेदव, वसीलिय वसील्येविच..."

"क्या आप जनरल पेर्वायेदव हैं?"

"नहीं, महामहिम, मैं तो सिर्फ कोर्ट-कौंसिलर लेबेज्यात्निकव हूँ, आपकी खिदमत में हाज़िर, और जनरल पेर्वायेदव..."

"बकवास! और आप से विनती करता हूँ कि मुझे अकेला छोड़ दीजिये."

“छोड़ दो,” आखिरकार जनरल पेर्वायेदव ने अत्यंत गरिमा से अपने क़ब्र के मुवक्किल की घिनौनी तत्परता को रोका.

“अभी जागे नहीं हैं, महामहिम, इसी बात का ध्यान रखना होगा, आदत न होने की वजह से वो ऐसा कह रहे हैं: जाग जायेंगे तो दूसरी तरह से...”

“छोड़ो,” जनरल ने दुहराया.

“वसीलिय वसील्येविच! ओहो. ये आप हैं, महामहिम!” अचानक जोर से और जोश से अव्दोत्या इग्नात्येव्ना की ठीक बगल से एक बिलकुल नई आवाज़ चिल्लाई - घमण्डी और धृष्ट आवाज़, फैशन के अनुरूप थकी हुई फटकार और गुस्ताखी भरी - मैं दो घंटे से आप सबको देख रहा हूँ; मैं तीन दिनों से पड़ा हूँ; आपको मेरी याद है, वसीलिय वसील्येविच? मैं क्लिनेविच, हम वलकोन्स्की के यहाँ मिले थे, जहाँ न जाने क्यों आपको भी आने दिया गया था.”

“क्या, काऊंट प्योत्र पित्रोविच...कहीं ये आप ही तो नहीं...और इतनी कम उम्र में...बेहद अफसोस है!”

“हां, मुझे खुद को भी अफसोस है, मगर मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, और मैं हर जगह से हर मुमकिन चीज़ हासिल करना चाहता हूँ. और काऊंट नहीं, सिर्फ सामंत, सिर्फ सामंत. हम गंदी किस्म के छोटे-मोटे सामंत हैं, हरकारों के खानदान से, और नहीं जानता कि ऐसा क्यों, थूकता हूँ. मैं सिर्फ छद्म उच्च समाज का बदमाश हूँ और “प्यारा पुलिसमैन” कहलाता हूँ. मेरा बाप कोई छोटा-मोटा जनरल था और माँ को उच्च समाज में कभी किसी ने गोद लिया था. मैंने यहूदी ज़ीफेल के साथ मिलकर पिछले साल नकली पचास हज़ार के नोट बनाए और उसी की शिकायत कर दी, और पैसे तो यूल्का अपने साथ बोरदो ले गई. और, सोचिये, मेरा तो रिश्ता भी एकदम पक्का हो गया था - शेवालेव्स्काया के साथ, उसकी उम्र सोलह साल से तीन महीने कम थी, इंस्टीट्यूट में पढ़ती थी, एक हज़ार नौ सौ दहेज़ में दे रहे थे. अव्दोत्या इग्नात्येव्ना, याद है, आपने कैसे. पंद्रह साल पहले, जब मैं चौदह साल का छोकरा था, मुझे भ्रष्ट किया था?”

"आह, ये तू है, बदमाश, चलो, खुदा ने कम से कम तुझे तो भेजा, वरना तो यहाँ ..."

"आप बेकार ही में अपने पड़ोसी व्यापारी पर बदबू का शक कर रही थीं...मैं सिर्फ खामोश था और हँस रहा था. असल में तो बदबू मुझसे आ रही है, मुझसे, क्योंकि मुझे ताबूत में कीलें ठोंककर दफ़नाया गया था.

"आह, कितना कमीना है! फिर भी, मैं खुश हूँ; आप यकीन नहीं करेंगे, क्लिनेविच, नहीं करेंगे यकीन कि यहां जिंदादिली और हाज़िरजवाबी की कितनी कमी है."

"हाँ तो, हाँ तो, और मैं यहाँ कोई मौलिक काम करना चाहता हूँ. महामहिम, - पेर्वायेदाव, मैं आपसे मुखातिब नहीं हो रहा हूँ, महामहिम, दूसरे, तरासेविच महाशय, प्रिवी कौंसिलर से कह रहा हूँ! जवाब दीजिये! मैं क्लिनेविच हूँ, जो आपको डाकगाड़ी में मैडम फ्यूरी के पास ले गया था, सुन रहे हैं?"

मैं आपको सुन रहा हूँ, क्लिनेविच, और बेहद खुश हूँ, और यकीन कीजिये..."

"कौड़ी भर भी यकीन नहीं है, और मैं परवाह भी नहीं करता. प्यारे बुढ़ऊ, मैं आपको चूमना चाहता हूँ, मगर शुक्र है खुदा का कि ऐसा नहीं कर सकता. क्या आपको पता है, महानुभावों, कि इस दद्दू ने क्या गुल खिलाये हैं? यह तीन या चार दिन पहले मरा है और, आप कल्पना कर सकते हैं, कि इसने पूरे चार लाख की सरकारी गड़बड़ की है? ये पैसा अनाथों और विधवाओं के लिए था, और पता नहीं क्यों यह अकेला ही उसका 'इनचार्ज' था, जिससे करीब आठ साल से इसका कोई ऑडिट नहीं हुआ. मैं सोच सकता हूँ कि उन सब के चहरे कैसे लम्बे हो गए होंगे और वे इसे किस तरह याद करते होंगे? है ना कैसा दिलचस्प ख़याल! मैं पिछले पूरे साल भर ताज्जुब करता रहा कि कैसे इस सत्तर साल के बुड्ढे, जर्जर, खूसट के पास अभी भी, दुराचारिता के लिये इतनी शक्ति बची हुई है और - और अब भेद खुल गया! ये विधवाएँ और अनाथ - जिनके बारे में ख़याल मात्र ही इसे भस्म करने के लिए काफी था!...मैं इसके बारे में काफी पहले से जानता था, अकेला मैं ही जानता था, मुझे मेडम शापान्तिये [Charpentier (फ़्रांसीसी

उपनाम)] ने बताया था, और जैसे ही मुझे पता चला, मैं इस संत-महात्मा के पीछे पड़ गया, दोस्ताना अंदाज़ में :“मुझे पच्चीस हज़ार दे, वरना कल ही तेरा ऑडिट हो जाएगा”; तो, सोचिये, इसके पास उस समय सिर्फ तेरह हज़ार निकले, तो, मतलब, ये बहुत सही वक्त पर मरा है. दद्दू, दद्दू, सुन रहे हो: “

“डियर क्लिनेविच, मैं पूरी तरह से आपसे सहमत हूँ और आप बेकार में ही... इन तफसीलों के पीछे पड़ गए. ज़िंदगी में इतने कष्ट, इतनी यातनाएँ हैं और इतना कम प्रतिदंड...मैं आखिर में सुकून हासिल करना चाहता था, और, जैसा कि मैं देख रहा हूँ, यहाँ से भी सब कुछ हासिल करने की उम्मीद करता हूँ.....”

“मुझे यकीन है कि उसने पहले ही सब सूंघ लिया है. कतिश बेरिस्तवा को!”

“किसे? कौनसी कतिश को?” बूढ़े की आवाज़ दरिन्दे की तरह थरथराने लगी.

“अ-आ, कौनसी कतिश? अरे, यहाँ, बाएँ, मुझसे पाँच कदम की दूरी पर, और आपसे दस कदम. वह पाँच दिनों से यहाँ है, और अगर आपको पता होता, दद्दू, कि वह कितनी कमीनी है...अच्छे घर की है, अच्छे तौर-तरीके वाली है और - राक्षस, परले दर्जे की राक्षस! मैंने उसे यहाँ किसी को नहीं दिखाया, सिर्फ मुझे ही पता था...कतिश, जवाब दो!”

“ही-ही-ही!” किसी लड़की की फटी-फटी आवाज़ सुनाई दी, मगर उसमें कुछ इंजेक्शन की सुई जैसा था . - “ही-ही-ही!”

“और सुन-हरे-बालों वाली?” दद्दू रुक-रुक कर तीन टुकड़ों में हकलाया.

“ही-ही-ही!”

“मैं... मैं कबसे सुनहरे बालों वाली...करीब पंद्रह साल की लड़की का सपना देख रहा था...और खासकर ऐसे माहौल में...”, गहरी साँस लेकर बूढ़ा बुदबुदाया.

“आह, शैतान!” अव्दोत्या इग्नात्येव्ना चहकी.

"बस!" क्लिनेविच ने फैसला किया, "मैं देख रहा हूँ कि माल बहुत बढ़िया है, हम फ़ौरन यहां के हालात बेहतर बनाएंगे. ख़ास बात ये है कि बचा हुआ समय खुशी से बिताएं; मगर कौन सा समय? अरे, आप, कोई क्लर्क है क्या, लेबेज्यात्निकव, जैसा मैंने सुना है, यही नाम है ना आपका!"

"लेबेज्यात्निक्व, कोर्ट-कौंसिलर, सिम्योन इव्सेइच, आपकी खिदमत में हाज़िर हूँ, बेहद-बेहद-बेहद खुश हूँ."

"आप खुश हैं इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, मगर, लगता है, कि शायद सिर्फ आप ही यहाँ सब जानते हैं. सबसे पहले, यह बताईये (मैं कल से ही हैरान हूँ) हम यहाँ बातें कैसे कर रहे हैं? आखिर हम तो मर चुके हैं, मगर फिर भी बोले जा रहे हैं, ऊपर से, जैसे गतिमान भी हैं, मगर वैसे, न तो बोल रहे हैं और न ही गतिमान हैं? ये कैसी अजीब बात है?"

"ये, सामंत महोदय, अगर आप चाहें तो प्लतोन निकलायेविच मुझसे बेहतर समझा सकते हैं."

"कौन प्लतोन निकलायेविच? ऐसे बुदबुदाइये नहीं, सीधे मुद्दे पर आइये."

"प्लतोन निकलायेविच, हमारा यहाँ का दार्शनिक है, प्रकृतिवादी और स्नातकोत्तर. उसने कई सारी दार्शनिक किताबें निकाली हैं, मगर पिछले तीन महीनों से लगातार सो रहा है, इसलिए अब यहाँ उसे झकझोरना नामुमकिन है. हफ्ते में एक बार कुछ शब्द बुदबुदाता है, जो मुद्दो से असंबद्ध होते हैं."

"मुद्दो से, मुद्दो से!..."

"वह ये सब बेहद आसान तथ्यों के आधार पर समझाता है, मतलब ये, कि ऊपर, जब हम ज़िंदा थे तो गलती से वहाँ की मृत्यु को मृत्यु समझते थे. 'शरीर' यहाँ, जैसे फिर से जीवित हो जाता है, जीवन के अवशेष एक जगह केन्द्रित हो जाते हैं, मगर सिर्फ चेतना में. 'ये' - मैं आपको समझा नहीं सकता - जीवन जैसे 'जड़ता' से चलता रहता है. उसकी

राय में - सब कुछ केंद्रित होता है, मगर सिर्फ चेतना में और करीब दो या तीन महीने चलता रहता है - कभी कभी छः महीने भी... मिसाल के तौर यहाँ कोई है, जो पूरी तरह सड़ चुका है, मगर करीब छः सप्ताह में एक बार वह अचानक बडबडाने लगता है, सिर्फ एक ही लब्ज़, बेशक जिसका कोई मतलब नहीं है, किसी बबोक के बारे में: 'बबोक', 'बबोक'... मगर, उसमें भी, मतलब, किसी चिंगारी की तरह जीवन की गर्माहट मौजूद है. ..."

"निहायत बेवकूफी है. तो, मुझमें क्यों सूंघने की शक्ति नहीं है, बल्कि मैं बदबू महसूस करता हूँ?"

"ये...हे-हे...खैर, हमारा दार्शनिक कोहरे में खो गया है. उसने खासकर सूंघने की शक्ति के बारे कहा था, कि यहां बदबू महसूस होती है, मतलब, नैतिक बदबू - हे-हे! जैसे कि आत्मा की बदबू, जिससे इन दो-तीन महीनों में अपने आप को समझा सके... और ये, मतलब, आख़िरी मेहरबानी है...सिर्फ, मुझे ऐसा लगता है, सामंत, कि यह सब रहस्यमय बकवास है, जो उसकी परिस्थिति में अत्यंत क्षम्य है..."

"बस, और आगे, मुझे यकीन है कि यह सब बकवास है. ख़ास बात यह है कि, ज़िंदगी के दो या तीन महीने और आखिर में - बबोक. मैं सबको सुझाव देता हूँ कि ये दो महीने जितना संभव हो खुशी से बिताएं, और इसके लिए सबको नए सिरे से शुरुआत करनी होगी. महाशयों! मैं सुझाव देता हूँ कि किसी भी बात से न शरमाएँ."

"आहा, चलो, चलो, किसी से भी न शरमाएँ!" अनेक आवाजें सुनाई दीं, और, अचरज की बात है, कि बिलकुल नई आवाज़ें भी सुनाई दीं, मतलब, उनकी भी जो इस दौरान फिर से जाग चुके थे. अब तक पूरी तरह जाग चुके इंजीनियर ने गरजती हुई भारी आवाज़ में विशेष तत्परता से अपनी सहमति दी. छोटी लड़की कतिश खुशी से खिलखिलाई.

"आह, कितनी ख्वाहिश है मेरी किसी भी बात से न शरमाने की!" अव्दोत्या इग्नात्येव्ना जोश से चहकी.

"सुन रहे हैं, अगर अव्दोत्या इग्नात्येव्ना भी किसी भी बात से शरमाना नहीं चाहती हैं..."

"नहीं-नहीं-नहीं, क्लिनेविच, मैं शरमाती थी, मैं वहां शरमाती ही थी, मगर यहाँ मैं शिद्दत से चाहती हूँ कि किसी से भी न शरमाऊँ!"

"मैं समझ रहा हूँ, क्लिनेविच," इंजीनियर भारी आवाज़ में बोला, "कि आप यहाँ की, मतलब, ज़िंदगी को, नए और तर्कसंगत सिद्धान्तों पर बनाने का सुझाव दे रहे हैं."

"खैर, मुझे इसकी परवाह नहीं है! इस मुद्दे पर कुदेयारव का इंतज़ार कर लेते हैं, उसे कल लाये हैं. वह जागेगा और आपको सब समझा देगा. ये ऐसा शख्स है, इतना महान शख्स है! कल, शायद, एक और प्रकृतिवादी को लायेंगे, शायद एक अफसर को और, अगर मैं गलती नहीं कर रहा हूँ, तो करीब तीन-चार दिन बाद एक व्यंग्यकार को, और, शायद, सम्पादक के साथ. वैसे, जाएँ वे जहन्नुम में, मगर हम लोगों का एक अपना झुण्ड जमा हो जाएगा और हर चीज़ अपने आप हो जायेगी. मगर फिलहाल मैं चाहता हूँ कि झूठ न बोलें. मैं सिर्फ इतना ही चाहता हूँ, क्योंकि यह महत्त्वपूर्ण है. धरती पर तो झूठ बोले बिना जीना नामुमकिन है, क्योंकि जीवन और झूठ समानार्थी हैं; मगर यहाँ, हम मज़ाक में भी झूठ नहीं बोलेंगे. शैतान ले जाए, आखिर क़ब्र का भी कोई महत्व है! हम अपनी-अपनी कहानी जोर से सुनाएँगे और किसी भी बात से शरमाना नहीं है. सबसे पहले मैं अपने बारे में बताऊँगा. मैं, पता है, खूंखार शिकारियों में से हूँ. वहां, ऊपर, यह सब सड़ी हुई रस्सियों से बंधा हुआ था. दूर फेंको उन रस्सियों को, और ये दो महीने हम जियेंगे सबसे बेशर्म सच्चाई में! कपड़े उतार दें और नग्न हो जायें!"

"नग्न हो जाएँ, नग्न हो जाएँ!" चारों तरफ से आवाजें आईं.

"मैं बेहद, बेहद चाहती हूँ पूरी तरह नग्न होना!" अव्दोत्या इग्नात्येव्ना चीखी.

"आह...आह...आह, मैं देख रहा हूँ कि यहाँ बहुत खुशगवार होगा, मैं एको के पास नहीं जाना चाहता!"

“नहीं, मैं कुछ और जी लेता, नहीं, पता है, मैं कुछ और जी लेता!”

“ही-ही-ही!” कतिश खिलखिलाई.

“ख़ास बात ये, कि कोई भी हमें रोक नहीं सकता, और हांलाकि मैं देख रहा हूँ कि पेर्वायेदव गुस्सा हो रहा है, मगर वह मुझे पकड़ नहीं सकता. दद्दू, क्या आप सहमत हैं?”

“मैं अत्यंत खुशी से पूरी तरह, पूरी तरह सहमत हूँ, मगर इस शर्त पर कि कतिश सबसे पहले अपना जी-व-न-वृत्तांत सुनाएगी.”

“मैं विरोध करता हूँ, अपनी पूरी ताकत से विरोध करता हूँ,” जनरल पेर्वायेदव ने दृढतापूर्वक कहा.

“महामहिम,” फुर्तीले उत्साह से और अपनी आवाज़ नीची करके कमीना लेबेज्यात्निकव बुदबुदाया और उसे मनाने लगा, “महामहिम, अगर हम सहमत हो गए, तो ये हमारे लिए ज़्यादा फायदेमंद होगा. यहाँ, पता हैं, यह छोटी लड़की...और फिर, ये अलग-अलग तरह की चीज़ें...”

“चलो, मान लेते हैं, छोटी लड़की, मगर...”

“ज़्यादा फायदेमंद है, महामहिम, खुदा की कसम, ज़्यादा फायदेमंद है! खैर, कम से कम मिसाल के तौर पर, कम से कम कोशिश तो करें...”

“क़ब्र में भी चैन नहीं लेने देते!”

“पहली बात, जनरल, आप क़ब्र में प्रेफेरान्स *(ताश का एक खेल - अनु.)* खेलते हैं, और दूसरी बात, हमें आपकी कोई प-र-वा-ह ही नहीं हैं,” क्लिनेविच लफड़ा करने पर उतर आया.

“प्रिय महोदय, विनती करता हूँ कि होश में रहें.”

“क्या? आप तो मेरा कुछ भी बिगाड़ न सकेंगे, मगर मैं यहाँ से आपको चिढ़ाता रहूँगा, यूल्या के कुत्ते की तरह. और, पहली बात, महाशय, यहाँ ये कैसे जनरल हुआ? वहां ये जनरल था, मगर यहाँ खाली बर्तन!”

“नहीं, खाली बर्तन नहीं, मैं यहाँ भी....”

“यहाँ क़ब्र में आप सड़ जायेंगे, और सिर्फ आपके छः ताँबे के बटन बचेंगे.”

“शाबाश, क्लिनेविच, हा-हा-हा!” आवाजें गरजीं.

“मैंने अपने सम्राट की सेवा की है...मेरे पास तलवार है...”

“अपनी तलवार से चूहे काटिए, और वैसे भी आपने उसे कभी बाहर नहीं निकाला है.”

“एक ही बात है, मैं पूरी फ़ौज का हिस्सा था.”

“न जाने कैसे-कैसे हिस्से होते हैं फ़ौज के.”

“शाबाश, क्लिनेविच, शाबाश, हा-हा-हा!”

“मुझे समझ में नहीं आ रहा है, कि तलवार क्या होती है,” इंजीनियर ने मुँह खोला.

“हम प्रशियन्स से चूहों की तरह दूर भाग जायेंगे कि वे कहीं हमारे चीथड़े न उड़ा दें!” दूर से मेरे लिए एक अनजान आवाज़ चीखी, जो जोश से सराबोर थी.

“तलवार, महाशय, होती है इज्ज़त!” जनरल चीख ही रहा था, मगर उसे सिर्फ मैंने ही सुना. इतना लंबा और खतरनाक शोर उठा, हंगामा और झगड़ा होने लगा, और सिर्फ अव्दोत्या इग्नात्येवा की बेसब्र, उन्मत्त चीखें ही सुनाई दे रही थीं.

“अरे, जल्दी करो, जल्दी करो! आहा, हम कब शुरू करेंगे किसी से भी न शरमाना!”

“ओह-हो-हो! वाकई में आत्मा परीक्षा से गुज़र रही है!” आम आदमी की आवाज़ सुनाई दी, और...

और यहाँ मुझे अचानक छींक आ गई. यह अचानक और बिना किसी इरादे के हुआ, मगर इसका प्रभाव बेहद चौंकाने वाला था: सब कुछ खामोश हो गया, जैसे क़ब्रिस्तान में होता है, गायब हो गया, सपने की तरह. सचमुच की क़ब्रिस्तान वाली खामोशी छा गई. मैं नहीं सोचता कि वे मुझसे शरमा गए हों, उन्होंने तो किसी भी बात से न शरमाने का फैसला किया था! मैंने करीब पाँच मिनट इंतज़ार किया और - कोई शब्द नहीं, कोई आवाज़ नहीं. ये भी नहीं मान सकता कि वे पुलिस में शिकायत के डर से घबरा गए; क्योंकि पुलिस यहाँ कर ही क्या सकती है? बेमन से निष्कर्ष निकालता हूँ कि निश्चय ही उनका कोई रहस्य है, जो हम नश्वर लोगों को ज्ञात नहीं है और जिसे वे सावधानी से हर नश्वर से छुपाते हैं.

“अच्छा, मैंने सोचा, मेरे प्यारों, मैं फिर आऊँगा आपसे मिलने”, और इतना कहकर मैंने क़ब्रिस्तान छोड़ दिया.

नहीं, मैं इसकी इजाज़त नहीं दे सकता; नहीं, वाकई में नहीं! बबोक मुझे परेशान नहीं करता (हां, ये बबोक ही तो था!).

व्यभिचार ऐसी जगह पर, आख़िरी उम्मीदों का व्यभिचार, सड़ती हुई और पिलपिली लाशों का व्यभिचार और - चेतना के अंतिम पलों पर भी रहम न खाते हुए! उन्हें दिए गए हैं, उपहार में मिले हैं ये पल और...और ख़ास बात, ख़ास बात, ऐसी जगह पर! नहीं मैं इसकी इजाज़त नहीं दे सकता...

अन्य कतारों में भी जाऊँगा, हर जगह सुनूंगा. कुछ तो है, जिसे हर जगह सुनना चाहिए, न कि सिर्फ एक किनारे से, ताकि कोई अवधारणा बना सकूँ. शायद कोई सांत्वना देने वाली बात भी मिल जाए.

और उन लोगों के पास तो ज़रूर लौटूंगा. उन्होंने अपने जीवन-वृत्तांतों और विभिन्न प्रकार के किस्सों का वादा जो किया है. ऊह! मगर जाऊंगा, ज़रूर जाऊंगा, अंतरात्मा का सवाल है!

"ग्रझ्दानिन" (*एक साहित्यिक पत्रिका - अनु,)* में ले जाऊंगा, वहाँ एक सम्पादक की तस्वीर भी लगाई गई है. शायद, प्रकाशित कर दे.

संदर्भ - Ф.М. Достоевский. Собрание сочинений в 15 томах. Л.: Наука. Ленинградское отделение, 1994. Т. 12.
http://az.lib.ru/d/dostoewskij_f_m/text_0320.shtml [10.01.2022]

ईमानदार चोर

(किसी गुमनाम संस्मरण से)

कुँवर कांत

रुसी अध्ययन विभाग
अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय
हैदराबाद, तेलंगाना

एक दिन सुबह-सुबह जब मैं काम पर जाने के लिए लगभग तैयार हो गया था, तो अग्रफेना जो मेरी रसोईन, धोबिन और घर की देख-रेख करती थी, अंदर आई और आश्चर्य की बात यह है कि वह मुझसे बात करने लगी।

वह एक अधेड़ उम्र की चुपचाप रहने वाली, सीधी-साधी गाँव की औरत थी, जो अब तक केवल रोजमर्रा के दो शब्द जैसे कि क्या बनाना है दोपहर के खाने में, के अलावा पिछले लगभग छः साल मे एक शब्द भी फालतू ना बोली होगी। कम से कम मैंने इससे ज़्यादा तो कुछ नहीं सुना होगा उसके मुँह से।

- वो क्या है मालिक, मैं आपके पास पूछने.... - एकदम से बोल पड़ी - कि आप कोठरी किराए पर देंगे।
- कौन सी कोठरी?
- अरे वही रोसोई के बगल वाली। आप जानते तो हैं कौन सी।
- किसलिए?
- किसलिए! लोग किराएदार तो रखते ही हैं, इसलिए।
- और कौन लेगा इसे किराए पर?
- कौन लेगा! किराएदार लेगा। मुझे पता है।

- अरे उसमें, अम्मा मेरी, एक खाट नहीं पड़ सकती, जगह कहाँ है। कौन रहेगा उसमें?

- रहना क्यों है उसमें! बस सोने को जगह मिल जाए, और वह खिड़की पर पड़ा रहेगा।

- किस खिड़की पर?

- पता ही है किस पर, जैसे कि जानते ही नहीं हैं! उसी पर, जो सामने वाली ड्योढ़ी में है। वो वहां बैठा रहेगा, सिलाई या फिर कुछ और कर लेगा।... और कुर्सी पर बैठ लेगा। उसके पास कुर्सी है; और मेज भी है; सब कुछ है।

- कौन है वो?

- भला मानुष है, दुनिया देखा हुआ आदमी है. मैं उसके लिए खाना पकाउंगी. और रहने खाने के लिए महीने के तीन चांदी के रूबल लूंगी...

आख़िरकार, बड़ी मशक्कत के बाद, पता चला कि किसी अधेड़ उम्र के आदमी ने अग्रफेना को मना लिया है, कैसे भी फुसला लिया है कि वह रसोई में उसके रहने खाने का बंदोबस्त कर दे। जो अग्रफेना के दिमाग़ में आ गया उसे पूरा कर देना चाहिए; नहीं तो, मुझे पता है कि वो मुझे चैन नहीं लेने देगी। अगर जो ऐसा हुआ कि कभी कुछ उसके मन मुताबिक नहीं हुआ, तो वह उसी समय से ऐसा न विचारमग्न हो जाएगी, उदास बैठी रहेगी, और फिर यह अवस्था दो या तीन सप्ताह तक जारी रहेगी। उस समय से खाना बेस्वाद, कपड़े की तो बात ही न करें, फ़र्श पर पोंछा नदारद, - संक्षेप में कहुं तो बड़ी मुश्किल होती है। मैने बहुत पहले से यह ध्यान दिया था कि यह बेज़बान औरत ख़ुद अपने बल पर कभी कोई समाधान देने की स्थिति में नहीं है। परन्तु अगर उसके कमजोर दिमाग़ में संयोग वश किसी बात ने घर कर लिया, कोई व्यवसाय, तो उसको मना करने

का मतलब है कुछ समय के लिए उसकी नैतिक हत्या। इसी कारण से, सच पूछें तो अपनी ख़ुद की शांति का ध्यान रखते हुए, मैं उसी समय सहमत हो गया।

- कम से कम उसके पास कोई पहचान पत्र तो होगा, पासपोर्ट या कुछ ऐसा?
- क्यों नही! बिल्कुल है। भला मानुष है, दुनिया देखा हुआ आदमी है; तीन रूबल देने का वादा किया है।

दूसरे ही दिन मेरे बैचलर ग़रीबखाने में नया किरायेदार नम्बुदार हुआ; पर मैं झुंझलाया नहीं, बल्कि अपने आप में खुश ही हुआ। मैं असल में अकेला रहता हूँ, बिल्कुल एकांतिक। जान पहचान वाले लगभग ना के बराबर हैं; बाहर भी बमुश्किल ही निकलता हूँ। दस साल मूक-बधिरों का सा जीवन जीने के बाद, अब एकांत की आदत-सी पड़ गयी है। और दस, पंद्रह साल, या फिर उससे ज़्यादा ऐसा ही एकांत, अग्रफेना के साथ इसी बैचलर मकान में बिताना, - बिल्कुल,नीरस बात होगी! इसलिए ऐसे माहौल में एक और धीर-गंभीर आदमी का होना - उपरवाले की कृपा ही है!

अग्रफेना ने ठीक कहा था: मेरा किराएदार दुनिया देखा हुआ आदमी था। पासपोर्ट के अनुसार, वह भूतपुर्व सैनिक था। यह तो मैं पासपोर्ट देखे बिना ही चेहरे पर पहली नजर पड़ते ही समझ गया था। यह समझना आसान था। अस्तापी इवानविच, मेरा किराएदार, अपने लोगों के बीच अच्छे वालों में से था। हम साथ में ठीक से ही रहने लगे। पर जो सबसे बढ़िया बात थी वह ये कि अस्तापी इवानविच के पास अपने जीवन से जुड़े किस्से सुनाने की जबरदस्त कला थी। मेरी दिनचर्या की हमेशा की बोरियत के मद्देनजर ऐसे किस्सागो का मिलना किसी गड़े खजाने के मिलने जैसा ही था। एक बार उसने मुझे ऐसा ही एक किस्सा सुनाया। इसका मुझ पर कुछ तो प्रभाव रह गया। तो यह कहानी कुछ इस तरह सामने आई।

एक बार मैं घर पर अकेला था: अस्तापी और अग्रफेना किसी काम से बाहर गए थे। अचानक दूसरे कमरे में कुछ आहट हुई, लगा जैसे कोई अंदर घुस आया हो, मुझे ऐसा आभास हुआ कि यह कोई अनजान है; मैं बाहर निकला: सच में बैठके में एक अनजान

आदमी खड़ा था, छोटा सा, कद ज़्यादा नहीं था, सिंगल फ्राक कोट में, जबकि मौसम में पतझड़ की ठंड थी।

- क्या चाहिए तुम्हे?

- क्लर्क अलेक्सांद्रव; यहीं रहता है?

- ऐसा कोई नहीं रहता यहाँ, भाई; बाहर चलिए।

- ऐसा कैसे, दरबान ने तो कहा कि यहीं रहता है, - सावधानी से दरवाजे से अलग हटते हुए आगंतुक ने कहा।

- अरे जाओ, जाओ भाई; बाहर चलो।

दूसरे दिन दोपहर के खाने के बाद, जब अस्ताफी इवानविच मेरे फ्राक-कोट का माप ले रहे थे, जो वो सिल रहे थे, पुनः कोई ड्योढ़ी में घुसा। मैने थोड़ा दरवाज़ा खोला।

वही कल वाले महाशय ने, मेरी आँखों के सामने ही, खुंटी पर से मेरा बिकेश (लेदर कोट) उतारा, कांख में दबाया और झट फ्लैट से बाहर निकल गया। अग्रफेना पूरे समय उसे ही देख रही थी, अचरज से मुँह फाड़े रहने के अलावा मेरे बिकेश (लेदर कोट) को बचाने के लिए उसने कुछ भी नहीं किया। अस्ताफी इवानविच बदमाश के पीछे लपके और दस मिनट के बाद खाली हाथ पूरा हांफते हुए लौटे। भाग गया बदमाश। एकदम गायब ही हो गया।

- हुं, कोई बात नहीं, अस्ताफी इवानविच। अभी गनीमत है, कि ओवरकोट रह गया हमारे पास। नहीं तो, उस बदमाश ने भारी मुसीबत में डाल दिया होता।

अस्ताफी इवानविच इस वाकये से ऐसे सकते में थे, कि उनकी तरफ़ देखकर मैं चोरी की बात भूल ही गया। जैसे होश गुम हो गए हों उनके। जो काम कर रहे थे, कभी उसे छोड़ देते तो कभी दुबारा उसी वाकये को दोहराने लगते, कि कैसे वह वहीं खड़े थे, यह सब उनकी आँखों के सामने दो कदम की दूरी पर देखते ही देखते हो गया। बिकेश उड़ा लिया गया और पकड़ने का कोई चांस ही नहीं बचा। बाद में फिर काम पर बैठते; और

फिर सब छोड़ देते, और मैने देखा कैसे वो दरबान के पास सब कुछ बताने और चेताने गये कि कैसे उसके रहते ऐसी गड़बड़ हो रही है। बाद में लौटे और अग्रफेना को बुरा-भला कहने लगे। बाद में फिर काम पर बैठे, और देर तक अपने आप में ही कुछ बड़बड़ाते रहे कि यह सब कैसे हो गया, कैसे वो यहाँ खड़े थे और मैं वहां और देखते ही देखते, दो कदम की दूरी पर, कोट उड़ा ले गये इत्यादि-इत्यादि। संक्षेप में कहुं तो अस्ताफी इवानविच, काम के तो पक्के थे, पर बड़ा भारी मीन-मेख निकालने वाले और बेचैन किस्म के आदमी थे।

- चकमा दे गया हम दोनों को, अस्ताफी इनानविच, शाम को चाय की गिलास थमाते हुए और थोड़ी बोरियत के कारण वही लेदर कोट की चोरी वाली कहानी छेडने के मन से मैने कहा उनसे जो कि अब बार-बार दोहराए जाने के कारण और किस्सागो की ग़ज़ब मासुमियत के कारण रोचक हो गई थी।

- चकमा दे दिया, साहब! मामला किसी और का है पर मूड मेरा ख़राब हो गया है। जबकि मेरा कपड़ा नहीं गायब हुआ था। मेरे हिसाब से इस दुनिया में चोर से बड़ा कमीना कोई और नहीं। दूसरा तो वही लेगा जो आप उठा कर दे देंगे। जबकि यह तुम्हारा श्रम, पसीना जो उसके लिए बहाया, तुम्हारा समय तुमसे चुराता है... धिनौनी बात है, थू! बोलने का मन नहीं कर रहा, गुस्सा आ रहा है। ऐसा कैसे साहब, आपको अपने सामान का मलाल नहीं है।

- हाँ, बात तो ठीक है, अस्ताफी इवानिच; चीज-सामान जल जाए वो ठीक, पर चोर ले जाए तो कोफ़्त होती है, ये कतई मंजूर नहीं।

- भला किसको मंजूर होगा, चोर तो चोर ही है... पर साहब, एक वाक्या ऐसा हुआ मेरे साथ कि एक ईमानदार चोर से पाला पड़ा।

- क्या बात करते हो, ईमानदार चोर से! भला कौन सा चोर ईमानदार होता है, अस्ताफी इवानिच?

- बात तो आपकी, साहब, सही है! भला कौन चोर ईमानदार होगा, और ऐसा होता भी नहीं है। मैं तो बस इतना कहना चाहता हूँ, कि ईमानदार, मेरे ख़्याल से, वह व्यक्ति था, जिसने चोरी की। बस दया आती है उसपे।

- ये सब हुआ कैसे, अस्ताफी इवानविच?

हुआ, साहब, कोई दो साल पहले की बात है। तब मुझे कोई साल से थोड़ा कम बिना किसी ठिकाने के बिताना पड़ा था, जब ठिकाना छूटने को ही था कि मेरे साथ एक बेसहारा आदमी भठियारखाने में टिका था। ऐसा पियक्कड़, लंपट, परजीवी था। पहले कहीं काम करता था और उसकी इसी पीयक्कड़ी के कारण बहुत पहले ही निकाल बाहर किया गया था। ऐसा नालायक था! भगवान ही जाने वह पहनता क्या था। कभी तो ऐसा भी लगेगा कि उसके ओवरकोट के अन्दर कमीज़ है भी कि नहीं, जो लेकर आएगा सब पी जाएगा। हुड़दंगी नहीं था; स्वभाव का शांत था, एकदम मधुर, सहृदय। कभी मांगता नहीं था, अपने में सकुचाए रहता: तुम ख़ुद देखते हो, बेचारे को पीने का मन है, और उसे लाकर दे दोगे। तो ऐसे ही मैं उसके साथ हो लिया, मने कि वह मेरे पीछे लग गया ...एक ही बात है। और कैसा आदमी था! जैसे कुत्ते का पिल्ला पीछे लगता है, तुम वहां गए - और वो तुम्हारे पीछे; बस एक ही बार तो मिले थे हम, हड्डी का ढांचा था! पहले रात गुजारने की बात हुई - चलो, मान लिया; पासपोर्ट देखा, आदमी ठीक ठाक लगा! दूसरे दिन भी रात गुजारने दिया, और तीसरे दिन फिर धमक पड़ा, पूरे दिन खिड़की पर बैठा रहा, रात को फिर रुक गया। सोचता हुं, ये तो मेरे पीछे ही पड़ गया: पिलाओ भी और खिलाओ भी इसको, और फिर रात को सोने भी दो - एक तो मैं ख़ुद ही बड़ी मुश्किल से गुजर-बसर कर रहा था, उपर से यह टुकड़तोड़ गर्दन से चिपट गया। इसके पहले भी वह, मेरी ही तरह, एक कर्मचारी के पास आता-जाता रहा था, उससे चिपट गया था, दोनों साथ पीते; फिर वह ऐसा न घोर शराबी हो गया और किसी ग़म में चल बसा। उसका नाम इमिलेइ, इमिल्यान इलिच था। मैं सोचने लगा कि इसके साथ क्या करना चाहिए। खदेड़ना - अच्छा नहीं लगता, तरस आता है : ऐसा बेचारा, लाचार इंसान है कि भगवान भरोसे। एकदम बेज़ुबान, कुछ मांगता नहीं है, बस बैठा रहता है, किसी कुत्ते के पिल्ले की तरह तुम्हारी आँखों में

टुकुर-टुकुर देखता रहेगा। कुल मिलाकर शराबखोरी इंसान को ऐसे बर्बाद करती है! अपने बारे में सोचने लगा: कैसे कहुंगा मैं उससे: अब जाओ तुम, इमिल्यानुष्का, अपना रास्ता देखो; मेरे पास तुम्हारा कोई काम नहीं; सही आदमी नहीं पकड़ा तुमने; अपने ख़ुद के लाले पड़े हैं, उपर से तुम्हे अपने खर्चे पर कैसे रखुं? बैठेकर सोचने लगा कि फिर वो क्या करेगा, जब यह बात मैं उससे कहुंगा? ख़ुद से ही विचार कर रहा हूँ, कैसे वो मेरी बात सुनकर देर तक मेरी ओर देखेगा, कैसे वह एक भी शब्द समझे बिना देर तक वैसे ही बैठा रहेगा और फिर बाद में, जब बात उसके पल्ले पड़ेगी तो खिड़की से उठेगा, अपनी गठरी उठाएगा, खानेदार, लाल रंग की, छेददार, जिसमें भगवान जाने क्या लपेट कर सब जगह लिए फिरता था, कैसे अपने ओवरकोट को संभालेगा, ताकि थोड़ा देखने में भी ठीक लगे, ठंड से भी बचाव हो, और छेद भी दिखाई न दे - आदमी विनम्र था। कैसे फिर दरवाज़ा खोलकर डबडबाई आंखे लिए सिढ़ियां उतरेगा। कहीं कुछ उल्टा सीधा हो गया तो ... तरस आने लगा। फिर मैने सोचा कि मेरा ही क्या ठिकाना है। रुक जा, इमिल्यानुष्का, अब ज़्यादा समय रोटी नहीं उड़ा पाएगा मेरे यहाँ; जल्दी ही निकलना है, तब कहाँ ढुंढेगा। तो ऐसा हुआ, साहब कि हमने वो जगह छोड़ दी; तब अलिक्सांद्र फिलिमोनविच, ठाकुर साहब (अब तो नहीं रहे, उनकी आत्मा को शांति मिले), कहने लगे मैं तुमसे बहुत खुश हूँ, अस्ताफी, जब गांव से लौटेंगे, भूलेंगे नहीं तुमको, फिर रख लेंगे। मैं उनके यहाँ बटलरी करता था - मालिक दयालु थे - परन्तु उसी साल चल बसे। तो उनसे विदा लेकर, मैने अपना बोरिया-बिस्तर समेटा, जो दो-चार आने थे, सोचा कि अब थोड़ा आराम करुंगा, एक बुढ़िया के यहाँ गया और एक कोना घेर लिया। वैसे भी उसके यहाँ वही एक कोना खाली भी था। कहीं आया रही थी और अब पेंसन पाती थी और अकेले रहती थी। फिर विचार आया, अलविदा इमील्यानुष्का, भले मानुष, मुझे तूम ढूंढ नहीं पाओगे। आपको क्या लगता है, मालिक? मैं शाम को लौटा (एक परिचित से मिलने चला गया था) और सबसे पहले नज़र पड़ी तो इमील्या पर, मेरे यहाँ संदूक पर बैठा था, चेकदार गठरी बगल में पड़ी थी, ओवरकोट पहने हुए, मेरी प्रतीक्षा करते हुए ... बोर हो रहा था तो बूढ़ी दाई से चर्च की किताब ले ली, वो भी उल्टी पकड़ रखी थी। लो हो गई खेती! मेरा तो मूड ऑफ हो गया

बिल्कुल। सोचता हूँ, अब कुछ नहीं हो सकता, - पहले ही क्यों नहीं खदेड़ा? छूटते ही पूछा: “पासपोर्ट तो ले आए, इमील्या?”

तो ऐसा हुआ, मालिक, मैं बैठ गया और सोचने लगा: ये, घूमता प्राणी, काम में बाधा तो नहीं बनेगा? फिर मन ही मन सोचा कि कुछ ख़ास नहीं, चलो देखा जाएगा।। खाने को तो चाहिए इसे, सोचता हूँ मैंने सोचा। रोटी का एक टुकड़ा सुबह, चटनी तर हो इसके लिए प्याज खरीदनी पड़ेगी। दोपहर को फिर रोटी और प्याज दे सकता हूँ; शाम को फिर प्याज के साथ क्वास और रोटी, अगर रोटी खाने को बोले तो। कभी शोरबे-वोरबे का भी इंतज़ाम हो गया तो हम दोनों का पेट भरा ही समझो। मैं तो वैसे ही बहुत नहीं खाता और पियक्कड़ लोग तो सबको पता ही है कितना खाते हैं: उन्हे तो बस ब्रांडी या वाईन चाहिए। पियक्कड़ई में ही कहीं मेरा भठ्ठा न बैठा दे, सोच ही रहा था कि तभी एक दूसरी बात दिमाग़ में आई और फिर उस विचार ने पूरी तरह से मूझे अपनी गिरफ्त में ले लिया। बात ऐसी थी मुझे लगा कि अगर ईमिल्या चला गया तो फिर जीवन में कुछ उमंग नहीं रह जाएगा ... और तब मैने उसका गौड-फादर बनने का निश्चय किया। एक बद्तर मौत मरने से बचा लुंगा इसे। फिर धीरे से उसकी पियक्कड़ई छुड़ा दुंगा। अच्छा रुको, मैने सोचा: चलो ठीक है, इमील्या, रह ले लो, बस अपनी आदत सुधारनी होगी, और मेरा कहा मानना पड़ेगा!

फिर मन ही मन सोचने लगा: अबकी बार शुरु- शुरु में उसे कुछ काम अलौट कर दुंगा, एकदम से नहीं पहले थोड़ा घूम-टहल ले, और तब तक मैं थोडा देखता भी रहुंगा कि आख़िर ये कौन सा काम ठीक से कर पाएग। क्यों कि आपको तो पता ही है, साहब, किसी भी काम के लिए आदमी के अंदर हुनर भी होना चाहिए। और फिर मैं उस पर चुपके से थोड़ी नज़र रखने लगा। इतना तो जान गया कि ये इमिल्यानुष्का एकदम हताश आदमी है। तो मालिक मैने शुरुआत में मीठा-मीठा बोला: ईधर-उधर की बात बनाते हुए, कहता हूँ, इमिल्यान इलिच, अरे तुम थोड़ा अपना भी ध्यान रखो। बहुत हुई घुमक्कड़ी! ज़रा देखो, चीथड़ों में घूमते हो, ये तुम्हारा ओवरकोट तो, कहने में बुरा लग रहा है, छलनी का काम कर सकता है; ये ठीक नहीं है! आत्म सम्मान भी कोई चीज होती है।

वो बैठा रहा, सिर झुकाए, मुझे सुनता रहा, मेरा इमिल्यानुष्का। क्या बताउं मालिक! हालत ऐसी थी, कि जैसे कंठ ही न हो, एक शब्द साफ़ बोल नहीं सकता था। तुम उससे खीरे की बात करो तो वो बीन्स की बात करेगा। सुनता रहा मुझे, देर तक सुनता रहा और फिर गहरी सांस खींचने लगा।

- अब सांस क्या खींच रहे हो, मैं कुछ पूछ रहा हूँ, इमिल्यान इलीच?

- हाँ बस ऐसे ही, कुछ ख़ास नहीं, अस्ताफी इवानिच, आप परेशान मत हों। वो ऐसा हुआ कि आज दो औरतें, अस्ताफी इवानिच, सड़क पर भीड़ गईं, ग़लती से एक ने दूसरे की क्रेनबेरी की टोकरी उलाट दी।

- तो, क्या हो गया?

- तो दूसरी ने जानबूझ कर पहले वाली की क्रेनबेरी की टोकरी उलाट दी और फिर लगी उन्हे पांव से कुचलने।

- तो, क्या हो गया, इमिल्यान इलिच?

- नहीं, हुआ कुछ भी नहीं। अस्ताफी इवानिच, मैं तो बस ऐसे ही।

- "कुछ नहीं हुआ, बस ऐसे ही। हुंह! सोचता हुं, इमिल्या, बेचारा इमिल्युष्का! पियक्कड़ी और घुमक्कड़ी में अपना दिमाग़ खराब कर लिया है! ..।"

- एक साहब का बैंकनोट ग्रख़वाया गली या तो सादवाया गली में पेवमेन्ट पर गिर गया। एक बंदे ने देखा और कहा कि मेरे नसीब में है; तभी दूसरे ने देखा और कहता है: नहीं मेरे नसीब में है। तुमसे पहले मैंने देखा था...

- तो, इमिल्यान इलिच।

- तो दोनों बंदे भिड़ गए, अस्ताफी इवानिच। तभी पुलिस वाला आया और उसने बैंकनोट उठाकर उन साहब को दे दिया, और उन दोनों बंदों को धमकाया कि जेल में डाल देगा।

- तो क्या हो गया? इसमें ऐसी कौन सी महान बात है, इमिल्यानुष्का?
- नहीं मैं तो बस ऐसे ही, लोग हँस रहे थे, अस्ताफी इवानिच।
- उफ, इमिल्यानुष्का! तुमने तांबे की अल्तीन के लिए अपनी आत्मा बेच डाली। जानते हो, इमिल्यान इलिच, मैं क्या कहुंगा तुम्हे क्या, अस्ताफी इवानिच? कोई काम क्यो नहीं करते, सच कहता हूँ, कुछ करो। सौ बार कहता हूँ, कुछ करो, अपने उपर तरस खाओ!
- भला मैं कौन सा काम कर सकता हुं, असताफी इवानिच? मुझे तो पता ही नहीं की मैं भला कौन सा काम कर सकता हूँ और मुझे काम पर रखेगा कौन, अस्ताफी इवानिच।
- इसिलिए तो तुम्हे काम से निकाल दिया, इमिल्या, पियक्कड़ आदमी हो तुम!
- और हाँ आज व्लास-कैंटीन वाले को औफिस में बुलाया था, अस्ताफी इवानिच।
- भला क्यो, मैने पूछा, उसे क्यों बुलाया था, इमिल्यानुष्का?
- ये तो मुझे भी नहीं मालूम, अस्ताफी इवानिच। मतलब, कोई ज़रूरत रही होगी, इसिलिए बुलाया होगा ...
- "उफ़! मैं सोचने लगा, हम दोनों के ही भाग फूटे हैं, इमिल्यानुष्का! हमारे पापों के लिए वह ईश्वर हमें सजा दे रहा है।" अब आप ही बताइए मालिक कि ऐसे आदमी के साथ क्या किया जाए।

चालाक तो एक नम्बर का था। सुनता था, मेरी बात सुनता था, पर फिर, मुझे लगा कि पक गया, जैसे ही देखता कि मेरा पारा बढ़ रहा है, ओवरकोट उठाता और सरक लेता, कोई अता-पता नहीं। दिन भर भटकता और शाम होते-होते एकदम टुल्ल हो कर आता। किसने पिलाया उसे, पैसे कहाँ से मिले, उपरवाला जाने। मेरा इसमें कोई हाथ नहीं।

- नहीं, मैने कहा, इमिल्यान इलिच, इस सब का हस्र बहुत बुरा होगा। बहुत हुआ! बहुत हुआ पीना, सुन रहे हो तुम, बहुत हुआ। अगली बार अगर पी कर लौटे, तो सिढ़ियों पर रात गुजारनी पड़ेगी, घुसने नहीं दुंगा!

सजा की बात सुनकर, मेरा इमिल्या, एक दिन बैठा, दो दिन, पर तीसरे दिन फिर सरक लिया। मैं राह देखता रहा, पर वह नहीं लौटा। मैं यह मानुंगा कि मैं डर गया, मैं दुखी भी हो गया। ऐसा मैने क्या कर दिया उसके साथ। मैने डरा दिया उसे। पर अब वह कहाँ गया, अभागा? हे प्रभु कहीं कोई अनहोनी न हो। रात हो गई, वह नहीं लौटा। सुबह मैं ड्योढ़ी में निकला, तो देखता हूँ कि वहीं ड्योढ़ी में है। सीढ़ी पर सिर रख कर लेटा है, पाले के कारण बिल्कुल अकड़ गया है।

- ये क्या बात हुई, इमिल्या? भगवान भला करें। कहाँ चले गए थे?

- वो क्या है, अस्ताफी इवानिच, आप नाराज़ हो गए थे, कहा था कि मुझे ड्योढ़ी में सोने भेज देंगे तो मेरी अंदर आने की हिम्मत नहीं हुई, अस्ताफी इवानिच, तो मैं यहीं लेट गया ...

मुझे गुस्सा भी आ रहा था और तरस भी आ रहा था।

- तुम, इमिल्यान, कोई और काम कर लेते, मैने कहा। सीढ़ियों की रखवाली क्या करनी!

- कौन सा दुसरा काम, अस्ताफी इवानिच?

- और कुछ नहीं तो, अभागे आदमी, मैने कहा (एकदम दिमाग़ खराब हो रहा था). कुछ नहीं तो दर्जी का ही काम सीख लेते। देखो तुम्हारे ओवरकोट की क्या हालत हो रही है। चीथड़ा हुआ पड़ा है यही क्या कम है कि उससे सिढ़ियों पर पोंछा लगा रहे हो। सुई उठाकर छेद का ही रफु कर लेते, थोड़ी इज़्ज़त की बात होती। हुंह पियक्कड़ आदमी हो तुम।

क्या कहुं मालिक! उसने सुई ले लिया, मैने तो मज़ाक में कहा था, और उसने सच में उठा लिया। ओवरकोट उतारा और सुई में धागा डालने लगा। मैं उसे देख रहा था, होना क्या था-पता ही है, आँखें उनींदी और लाल हो गईं, हाथ कांप रहे थे। वह डालता रहा, डालता रहा पर धागा डल ही नहीं रहा था। वह आँखें मिचमिचाता, रगड़ता, हाथों मे ऐंठता रहा पर नहीं आख़िर फेंक दिया और मेरी ओर देखने लगा।

- तो, इमील्या, बड़ा एहसान किया तुमने मुझ पर! अगर सबके सामने ये सब होता तो जाने क्या किया होता। अरे मैने तो तुम्हे, भले मानस, मज़ाक में, चिढ़ कर कहा था... सुधर जाओ, भगवान भला करें तुम्हारा। ऐसे ही बैठे रहो पर ये शर्मिंदा करने वाले काम मत करो, सिढ़ियों पर रात मत गुजारो, मुझे शर्मिंदा मत करो!..

- मैं करुं तो क्या करुं, अस्ताफी इवानिच; मुझे ख़ुद पता है, कि हमेशा नशे में धुत रहता हूँ, किसी काम का नहीं हूँ!.. सिर्फ़ आपको, अपने ऐहसान करने वाले को ही बिना मतलब परेशान कर रहा हूँ।

अचानक उसी समय उसके नीले होंठ ऐसे कंपकंपाने लगे, सफेद गाल पर आंसु ढलका, यह आंसु उसकी बढ़ी हुई दाढ़ी पर थरथराया, ढलका कि तभी बिचारा इमिल्यानुष्का फफक-फफक कर रोने लगा। हे भगवान! जैसे किसी ने मेरे सीने में छुरा भोंक दिया हो।

"ओह, ऐसा भावुक आदमी होगा मैने सोचा नहीं था। कौन जानता था, किसको अंदाजा होगा? नहीं, मैने सोचा, इमिल्या, बिल्कुल अलग हट जाउंगा, जो करना है करो!.."

तो साहब, लम्बी कहानी क्या सुनाना! और यह सब बिल्कुल खोखली बात है, तुच्छ, एक शब्द के लायक नहीं, कहने का मतलब आप, साहब, मैं वैसे कहुं तो, आप इसके लिए दो फूटी कौड़ी भी नहीं देते, जबकि मैं तो बहुत कुछ दे देता, अगर मेरे पास ज़्यादा होता तो, सिर्फ़ इसलिए कि यह सब न हुआ होता! मेरे पास न, साहब, एक पतलून थी, एक नम्बर की, क्या पतलून थी, नीली चेकदार, जमींदार ने मंगवाए थे, जो यहाँ आए थे, फिर पीछे हट गए, कहने लगे कि चुस्त है; तो फिर वह मेरे हाथो में ही रह गयी। सोचा कि माल तो महंगा है। पुराने कपड़ों के हाट में, हो सकता है पूरे पांच चांदी के रुबल ही दे दें,

नहीं तो पितिरबुर्ग की साहबों के लिए दो पैंट बनाने के बाद, उपर से मेरे वेस्ट कोट के लिए भी कुछ बच जाएगा! इमिल्यानुष्का के लिए वो समय बड़ी ही मुश्किल घड़ी थी, उदास। देखा तो: पूरे दिन नहीं पीया, दूसरे दिन भी नहीं पीया, तीसरे दिन भी उसने नशे को मुँह नहीं लगाया, उल्लु की तरह एकदम शांत, देख कर बुरा लग रहा था, चुप बैठा रहा जैसे कि किसी शोक में हो। फिर ख़्याल आया: या तो माल नहीं है तुम्हारे पास, या तो अपने आप ही दुरुस्त रास्ते पर आ गया, विवेक जाग गया। तो, मालिक, जब तक ये सब हुआ, तो उसी समय एक बड़ा त्योहार पड़ा। मैं शाम के प्रेयर के लिए चला गया; लौटा तो - मेरा इमेल्या खिड़की पर बैठा है, नशे में झूल रहा है। हूँह! सोचता हूँ, इस आदमी का कुछ नहीं हो सकता! पता नहीं क्यों मैं संदूक के पास गया। देखा तो पतलून दिखी नहीं!.. मैने इधर-उधर देखा: गायब तो नहीं कर दिया। ऐसा कैसे मैने सब खंगाल डाला पर कहीं पता नहीं, - मेरा तो जैसे दिल ही निचुड़ गया! मैं बूढ़ी दाई के पास लपका, पहले उसपे आरोप लगाया, पाप ही कमाया, इमेल्या पर बिल्कुल शक नहीं किया। जबकि सबूत भी सामने था कि आदमी टुल्ल होकर बैठा है।"नहीं, - मेरी बूढी दाई ने कहा - हे भगवान, साहब, पतलून का भला मैं क्या करुंगी, पहनुंगी क्या? मेरी तो ख़ुद की स्कर्ट, आपके भाई की दी हुई, नहीं मिल रही.. कहने का मतलब, मुझे नहीं पता, मैने नहीं देखा" - उसने कहा। - "कौन यहाँ आया था, मैने कहा, कौन आया था?" - "कहती है, - कोई भी तो नहीं आया था, साहब, मैं तो यहीं थी। हाँ, इमिल्यान इलिच बाहर गए थे, फिर वापस आए; वो बैठे हैं! उनसे पूछताछ करिए"। - "इमिल्या ने, कहीं किसी ज़रूरतत वश, मेरी नई पतलून तो नहीं ली, याद है जो जमींदार के लिए बनाई थी।"? - "कहता है - नहीं, अस्ताफी इवानिच; बिल्कुल नहीं देखी मैने, मेरा मतलब, उन्हे नहीं लिया"?

क्या ग़ज़ब वाकया हुआ! फिर ढुंढना शुरु किया, सब तरफ़ ढुंढ लिया - कहीं पता नहीं! उधर इमिल्या बैठा झूल रहा था। साहब, मैं उसके सामने बैठा था, संदूक के उपर उकड़ु कि अचानक उसे कनखियों से देखा ... बड़ी मुश्किल है! सोच में पड़ा हूँ: छाती में ह्रदय के भीतर पीड़ा उठ रही थी; गुस्से से लाल-पीला हो रहा था . अचानक इमिल्या ने भी मेरी ओर देखा।

- नहीं, कहता है, अस्ताफि इवानिच, मैने आपकी पतलून नहीं ली, हो सकता है, आपको लग रहा है कि उसे, पर मैने उन्हे नहीं लिया।

- तो आख़िर कहाँ गायब हो गए वे, इमिल्यान इलिच?

- कहने लगा, नहीं, अस्ताफि ईवानिच; मैने बिलकुल नहीं देखा।

- इमिल्यान इलिच, आपको पता है कि वो नहीं हैं वहाँ, अपने आप ही तो नहीं गायब हो गए?

- हो सकता है कि ख़ुद ही गायब हो गए हों, अस्ताफि इवानिच। मैने उसकी बात सुनी, - उठा, खिड़की तक गया, रौशनी जलाई और सिलाई करने बैठ गया। हमारे नीचे रहने वाले क्लर्क की सदरी ठीक करनी थी। पर अंदर से मन एकदम बेचैन था, सीने में हलचल सी मची थी। अच्छा हो कि सारे कपड़े उठा कर भट्ठी में झोंक दूं। इमिल्या को इसकी भनक लग गई थी कि मेरा माथा खराब है। वो कहते हैं न मालिक, जब इंसान के मन में पाप हो तो, मुसीबत को दूर से ही सूंघ लेता है, जैसे तूफान के पहले आसमान का पंछी।

- वो क्या है, अस्ताफी इवानविच, - इमिल्युष्का शुरु हो गया (उसकी ख़ुद की आवाज़ कांप रही थी), - आज कम्पाउंडर अंतीप प्रोखरिच ने कुछ दिनों पहले मरे, कोचवान की बीबी से शादी करली ...

मैने, मानिए कि, ऐसे देखा उसकी ओर, एकदम गुस्से से, देखा ... इमेल्या समझ गया। देखता हूँ: उठा, पलंग की तरफ़ बढ़ा और उसके पास ही कुछ टटोलने लगा।.मैं इंतज़ार करने लगा - बड़ी देर लगा रहा है, और ख़ुद से कुछ बड़बड़ा रहा है: "नहीं कैसे नहीं, कहाँ जा सकते हैं, नासपीटे!" मैं राह देख रहा हूँ, कि अब क्या होगा, देखता हूँ तो वह घुटनों के बल पलंग के निचे सरक गया। अब मुझसे और रहा नहीं गया।

- मैने कहा - इमिल्यान इलिच ये आप घुटनो के बल क्यों सरक रहे हैं?

- वो पतलून नहीं मिल रही न, अस्ताफि इवानिच। देख रहा हूँ कहीं इधर तो नहीं सरक गई।

- आप भी, साहब (झुंझलाहट में उसे कहने लगा) आपको साहब मुझ जैसे ग़रीब साधारण इंसान के लिए घुटनों के बल चलने की क्या आवश्यकता है।

- क्या कहते हैं अस्ताफी इवानिच, मैं तो बस ऐसे ही ... थोड़ा ढूंढना पड़ेगा, कही न कही मिल ही जाएगी।

- हम्म .. मैं क्या कह रहा हूँ; सुनो तो सही, इमिल्यान इलिच!

- क्या कह रहे हैं, अस्ताफी इवानिच? -

- मैने कहा कि कहीं तुमने ही तो किसी चोर या उठाईगिरे की तरह मेरे नमक का कर्ज़ अदा करते हुए उसे चुरा तो नहीं लिया न? मुझे गुस्सा इस बात से आ रहा था कि वह वहीं मेरे सामने घुटनों के बल रेंग रहा था और तमाशा कर रहा था।

- क्या कहते हैं ... अस्ताफी इवानविच ...

वह ख़ुद, पहले की ही भांति पलंग के नीचे ही औधे मुंह देर तक पड़ा रहा; फिर सरक कर बाहर निकला। देखता हूँ तो चादर की ही तरह एकदम पीला पड़ा था। उठ खड़ा हुआ और फिर मेरे ही बगल में खिड़की पर करीब दस मिनट बैठा रहा।

- नहीं, अस्ताफी इवानिच, - फिर अचानक खड़ा हो गया और मेरी ओर बढ़ा, मुझे अब भी याद है कैसा भयानक दिख रहा था।

- कहने लगा, नहीं अस्ताफी इवानिच. मैं आपकी पतलून लेने की हिमाकत नहीं कर सकता।

ख़ुद पूरा हिल रहा था, कांपती अंगुली अपने सीने में चुभा रहा था, आवाज़ तो उसकी ऐसे कांप रही थी कि मालिक, मैं ख़ुद सहम गया और खिड़की से बिल्कुल चिपक गया।

- मैने कहा, अरे, अरे इमिल्यान इलिच, जैसा आप कहें, मुझे माफ़ करें, गोया कि मैं ही मूर्ख आदमी हूँ, बिना बात आपको परेशान किया। पतलून गुम हो गई तो हो गई, बिना पतलून के हम मर थोड़ी न जाएँगे। भगवान की कृपा से, हाथ है, चोरी नहीं करेगे ... किसी दूसरे गरीब के यहाँ टुकड़खोरी नहीं करेंगे; अपनी रोटी का इंतज़ाम ख़ुद करेंगे ...

इमिल्या ने मेरी बात पूरी सुनी, मेरे सामने काफ़ी देर तक खड़ा रहा, फिर देखा कि बैठ गया। वैसे ही पूरी शाम बैठा रहा, हिला नहीं; फिर मैं सोने चला गया, इमेल्या उसी जगह बैठा रहा। सुबह देखा तो बिल्कुल फ़र्श पर अपने ओवर कोट में सिमटा लेटा था, ऐसा टूट गया था कि पलंग पर लेटने नहीं आया। तो साहब, इस दिन के बाद मेरा मन उससे उचट गया, सही कहुं तो शुरुआत के दिनों में उससे घृणा होने लगी थी। सही-सही कहुं तो, ये कुछ ऐसा था जैसे कि, मेरे अपने बेटे ने ही चोरी की हो और मेरा घोर अपमान किया हो। मन में बस इमेल्या, इमेल्या चलता रहा। जबकि इमेल्या, मालिक, लगभग दो सप्ताह बेधरान पीता रहा। कहने का मतलब, एकदम बावला हो गया, अंधाधुंध पीता रहा। सुबह निकल जाता, रात देर से लौटता, और इन दो हफ्तों में अगर एक शब्द भी मैने उसके मुंह से सुना हो। मतलब कि, ज़रूर, या तो दुख ने डुबाया हो या फिर ख़ुद को ख़त्म करने का पूरा मन बना लिया था उसने। आख़िर माल ख़त्म हो गया, मतलब सब पी गया और फिर आकर खिड़की पर बैठ गया। मुझे याद है, बैठा रहा, चुप-चाप तीन दिनों तक; अचानक, देखता हूँ: ये आदमी तो रो रहा है। मतलब कि बैठा है, मालिक, और रो रहा है, ग़ज़ब है! मतलब कि एकदम इनार, ख़ुद को भी नहीं खबर, ऐसा आंसु बहा रहा है कि बस पूछिए मत। मुश्किल होता है, मालिक, देखना, जब कोई आदमी, उपर से बूढ़ा आदमी, इमेल्या के जैसा, दुख से रोने लगे।

- ये क्या, इमेल्या?

- वह पूरा हिल गया। वह वैसै ही थरथरा रहा था। मैने, मतलब कि, उस समय के बाद पहली बार उससे बात की थी।

- कुछ नहीं ... अस्ताफी इवानिच।

- भगवान भला करे, इमेल्या, जो चला गया वो चला गया। ये क्या तुम ग़म में बैठे हो? - मुझे उस पर तरस आने लगा।

- बस ऐसे ही, अस्ताफी इवानिच, बात वो नहीं है। कोई काम करना चाहता हूँ, अस्ताफी इवानिच।

- कैसा काम, इमिल्यान इलिच?

- कोई भी। हो सकता है कि पहले की ही तरह कोई ओहदा मिल जाए; मैं फिदसेइ इवानिच के पास गया था... अस्ताफि इवानिच आपको परेशान करना मुझे अच्छा नहीं लगता है। मैं, असताफी इवानिच, जैसे ही कोई काम मिलता है तो आपको सब लौटा दुंगा, आपने जो भी खर्चा-पानी किया है सब हर्जाने सहित दे दुंगा।

- बस, इमेल्या, बस; हो गई गलती, तो हो गई! मिट्टी डाल! फिर से पहले की ही तरह रहेंगे।

- नहीं, अस्ताफी इवानिच, आपको लगता है, सब, वो ... पर मैं आपकी पतलून नहीं ले सकता ...

- जैसा तुम चाहो; भगवान तुम्हारा भला करें, इमिल्यानुष्का!

- नहीं, अस्ताफी इवानिच। मैं, साफ़ है, अब आपका किराएदार नहीं रहा। आप मुझे माफ़ कर दिजिए, अस्ताफी इवानिच।

- भगवान भला करें, मैने कहा; कौन तुम्हे, इमिल्यान इलिच, बुरा भला कह रहा है, घर से भगा रहा है, मैं क्या?

- नहीं, पर आपके साथ ऐसे रहना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। बेहतर होगा मैं चला ही जाउं ...

मतलब कि बुरा मान गया, दिल पर ले लिया. मैं उसको देख रहा हूँ, सच में उठा, कंधों पर ओवरकोट डाल ली।

- अरे अब कहाँ चल दिए, इमिल्रयान इलिच? बुद्धि से काम लो; ये क्या हो गया है तुम्हे? कहाँ जाओगे तुम?

- नहीं, अब मुझे जाने दिजिए, अस्ताफी इवानिच, अब मुझे रोकिए मत (ख़ुद ही फिर बिसुरने लगा); मेरा जाना ही उचित है, अस्ताफी इवानविच, अब आप वैसे नहीं रहे। अब आप बदल गए हैं।

- कैसे वैसे नहीं रहे? वैसे, हुंह! तुम किसी छोटे बच्चे जैसे हो, भोले, अकेले गुज़ारा नहीं होगा इमिल्यान इलिच।

- नहीं, अस्ताफी इवानिच, आप बाहर जाते हैं तो अब संदूक पर ताला मार देते हैं, और मैं अस्ताफी इवानिच देख कर रोना आता है ... बेहतर होगा आप मुझे जाने दे, अस्ताफी इवानिच, आपके साथ रहते हुए जो भी भूल-चूक हुई हो माफ़ किजिएगा।

क्या कहुं, मालिक? वह निकल गया। दिन भर राह देखी, सोचा, शाम तक लौट आएगा - पर नहीं! दूसरे दिन भी नहीं, तीसरे दिन भी नहीं। डर गया मैं, उदासी छाने लगी, न पीने का मन, न खाने का, न सोने का। विवश कर दिया इस आदमी ने। चौथे दिन मैं ख़ुद निकला, सारे ठेके छान मारे, पता लगाया - कुछ खबर नहीं, कुछ हो तो नहीं गया, इमिल्यानुष्का को। क्या ख़ुद को ज़िंदा रख पाया होगा? - मैने सोचा - हो सकता है कि पीकर कहीं बाड़ के पास उलट गया हो और किसी ओदे लठ्ठे की तरह पड़ा हो। थक हार कर मैं घर लौटा। अगले दिन फिर ढुंढने का निश्चय किया। मैं ख़ुद को ही कोस रहा था, आख़िर मैने उसे जाने क्यों दिया, वह मूर्ख आदमी अपनी मर्जी से मेरे पास से चला गया। देखता रहा: जैसे ही उजाला हुआ, पांचवें दिन, (कोई तयोहार था), दरवाज़ा चरमराया। देखता हुं तो इमेल्या घुस रहा है: नीला पड़ गया था, बाल कींचड़ में सने हुए, बिल्कुल जैसे सड़क पर सोता रहा हो; बिल्कुल दुबला हो गया था सूखी तिल्ली के जैसा;

उसने ओवरकोट उतारा, मेरे समीप संदूक पर बैठ गया, मेरी ओर देखने लगा। मैं खुश हो गया, पर दिल में पहले से भी ज़्यादा उदासी पसर गई। बात ऐसी है, मालिक, अगर ऐसा कुछ मेरे साथ हुआ होता तो क़सम से कहता हुं: कुत्ते की मौत मर जाता पर लौट कर नहीं आता। पर इमिल्या लौट आया था! जाहिर-सी बात है, आदमी को ऐसी हालत में देखना कष्टदायक है। मैं उसको पुचकारने, दुलारने, ढाढस बंधाने लगा। "तो, कहा मैने, इमिल्यानुष्का, मैं खुश हूँ कि तुम वापस आ गए। अगर थोड़ा और देर की होती तो मैं आज तुम्हे ठेकों पर ढूंढने जाने वाला था। तुमने खाया कुछ?"

- खाया, अस्ताफी इवानिच।

- ठीक से तो खाया न? देख भाई, कल का शोरबा थोड़ा बचा है, मीट भी था, बढिया है; और ये ब्रेड के साथ प्याज पड़ी है। मैं कहता हुँ, खा लो, सेहत के लिए कोई नुक़सान नहीं है।

मैने दिया फिर उसको, और फौरन समझ गया, कि हो न हो, तीन दिन से इस आदमी ने कुछ खाया नहीं है, - ऐसी भुख लगी थी। इसका मतलब ये भूख ही थी जो उसे मुझ तक खींच लाई थी। उसकी ओर देख कर दिल पसीज गया। मैने सोचा, लाओ भागकर ठेके जाता हूँ। ले आता हूँ इसके लिए, थोड़ा मन हल्का हो जाएगा और सब सही से सुलटा लेंगे। कोई शिकवा नहीं है तुमसे, इमिल्यानुष्का! वाइन ले आया। मैने कहा, इमिल्यान इलिच, चलो त्यौहार के मौके पर दो-दो जाम हो जाए। पीयोगे? फायदा है।

हाथ बढ़ाया उसने, एकदम ललचा के बढ़ाया, उठा लिया, तभी रुक गया, थोड़ा इंतज़ार किया; मैं देख रहा था, उठाया, होठों तक ले गया, उसके आस्तीन पर वाइन छलका। होठ तक तो ले गया, पर नहीं और उसी समय वापस मेज पर रख दिया।

- क्या हुआ, इमिल्यानुष्का?

- नहीं, कुछ नहीं, मैने उसे ... अस्ताफी इवानिच।

- पीयोगे नहीं क्या?

- हाँ, अस्ताफी इवानिच, ऐसा है कि ... मैं अब और नहीं पीउंगा, अस्ताफी इवानिच।

- तो क्या तुमने हमेशा के लिए छोड़ने का फ़ैसला किया है, इमिल्युष्का, या सिर्फ़ आज नहीं पीयोगे।

चुप रहा, मैं देख रहा था: मिनट भर बाद उसने माथा हाथ पर टिका लिया।

- क्या हुआ, कहीं तुम बीमार तो नहीं हो इमील्या?

- बस ऐसे ही, तबीयत थोड़ी ठीक नहीं लग रही, अस्ताफी इवानिच।

मैने उसे उठाया और बिस्तर पर लिटा दिया। मैने ख़ुद देखा, सच में स्थिति ठीक नहीं थी: माथा जल रहा था, और ख़ुद बुखार से कांप रहा था। दिन भर मैं उसके पास ही बैठा रहा; रात होते- होते और बुरा हाल था। मैने उसे क्वास में बटर डाल कर और प्याज के साथ ब्रेड दिया। मैने कहा: खा लो, ठीक लगेगा! उसने सिर हिलाया। नहीं, कहता है, मैं आज दोपहर का खाना नहीं खाउंगा, अस्ताफी इवानिच।" उसके लिए चाय बनवाई, बूढ़ी दाई को परेशान कर दिया, - न, कोई फायदा नहीं था। मुझे लगा कि स्थिति ठीक नहीं है। तीसरे दिन सुबह मैं डाक्टर के पास गया। पास ही मेरी जान-पहचान वाला एक डॉक्टर, कस्तप्रावव, रहता था। पहले जब मैं बसम्यागिन मालिक के यहाँ रहता था तब हमारी जान-पहचान हुई थी; उसने मेरा इलाज़ किया था। डाक्टर आया, देखा, "न, स्थिति ठीक नहीं है। कहा कि उसे बुलाने का कोई फायदा नहीं। कहें तो इन्हे पावडर दे देता हूँ।" पावडर तो मैने नहीं दिया; मुझे लगा, डाक्टर ने बस दिल बहलाने के लिए कहा है और इस तरह पांचवा दिन शुरु हुआ।

लेटा था वह, मालिक, मेरे सामने, खतम हो गया। मैं खिड़की पर हाथ में काम लिए बैठा था। बूढ़ी आई भट्ठी सुलगा रही थी। सब चुप थे। मेरा तो, मालिक, उस आवारा इंसान के लिए कलेजा ही फट पड़ा: बिल्कुल ऐसा लगा जैसे मैं अपने सगे बेटे को दफना रहा हूँ। मुझे पता था, कि इमेल्या अब मेरी ही ओर देख रहा था, सुबह से ही देख रहा था, जैसे कि हिम्मत जुटा रहा हो, कुछ कहना चाहता है, दिख रहा था कि कह नहीं पा रहा था। आख़िरकार मैने उसकी ओर देखा; तो देखता हुँ, बेचारे की आँखों में घोर उदासी

थी, मेरे उपर से नज़र हटा नहीं रहा था, जब देखा कि मैं उसी को देख रहा हूँ, तो तुरंत बोल पड़ा।

- अस्ताफी इवानविच!

- क्या, इमिल्युष्का?

- मान लिजिए कि अगर मेरे ओवरकोट को हाट में ले जाएँ तो उसके बदले में कितना मिल जाएगा, अस्ताफी इवानिच?

- हूँ, मैने कहा, कुछ कह नहीं सकता कि कितना मिलेगा। हो सकता है कि तीन रूबल की एक नोट मिल जाए इमिल्यान इलिच।

सच में अगर ले जाओ तो कुछ भी नहीं मिलेगा, बल्कि तुम्हारा मज़ाक अलग से उड़ाएंगे, कि ऐसी भद्दी चीज बेच रहे हो। वो तो उस मरनासन्न आदमी के लिए, उसकी सादगी को जानते हुए, ढाढस बंधाने के लिए कहा।

मुझे तो लगा, असताफी इवानिच, कि इसके बदले तीन चांदी के मिलेंगे, बनात का है, अस्ताफी इवानिच। कैसे सिर्फ़ तीन रूबल देंगे, बनात का है?

- मैं नहीं जानता, बस कह रहा हुँ, इमिलयान इलिच; अगर ले जाना चाहते हो तो, तीन रूबल पहले ज़रूर मांगना।

इमील्या थोड़ी देर चुप रहा; फिर बोला:

- अस्ताफी इवानिच!

- क्या इमिल्यानुष्का? मैने पूछा

- जब मैं मर जाउं तो ये ओवरकोट आप बेच दिजिएगा और मुझे इसमें मत दफनाइएगा। मैं वैसे ही लेट जाउंगा: यह एक कीमती सामान है, हो सकता है आपके काम आ जाए।

इस बात पर, मालिक, मेरा दिल ऐसा कांपा कि कह भी नहीं सकता। साफ़ दिख रहा था कि मृत्यु के पहले की उदासी व्यक्ति पर हावी हो रही थी। फिर से सब चुप हो गए। इस तरह एक घंटा बीत गया। मैं उसकी ओर कनखियों से देख रहा था: वह सिर्फ़ मुझे ही देख रहा था, जैसे ही आँख मिली तो नज़र नीची कर ली।

- पानी पीने का मन नहीं कर रहा, इमिल्यान इलिच?
- दीजिए, भगवान आपका भला करे, असताफी इवानिच।
- मैने उसे पानी दिया। उसने पी लिया।
- आभार, अस्ताफी इवानिच - उसने कहा।
- और कुछ तो नहीं चाहिए, इमिल्यालनुष्का?
- नहीं, अस्ताफी इवानविच; नहीं कुछ नहीं चाहिए, पर मैने वो
- क्या?
- वो क्या है कि ...
- बात क्या है, इमिल्युष्का?
- वो पतलून ... क्या है कि ... वो तब आपके पास से मैने ही उठाया था... अस्ताफी इनाविच...
- अरे कह रहा हूँ न, भगवान तुम्हे माफ़ कर देंगे, इमिल्यानुष्का, अभागे हो तुम! हल्के मन से विदा होओ ... और ख़ुद मेरा, मालिक, गला रुंध गया और आँखों से आंसु बहने लगा; कुछ समय के लिये मैंने मुँह फेर लिया।
- अस्ताफी इवानिच ...

देखता हूँ: इमेल्या मुझसे कुछ कहना चाह रहा है; ख़ुद ही उठने की कोशिश कर रहा है, ज़ोर लगा रहा है, होंठ कंपकंपा रहे हैं... अचानक पूरा लाल पड़ गया, मेरी ओर

देख रहा है... अचानक देखता हुँ तो फिर पीला पड़ने लगा, पीला पड़ने लगा, क्षण भर में गिर पड़ा, गर्दन पीछे के ओर लटका दी, एक गहरी सांस ली और देह त्याग दिया .....

संदर्भ- Ф.М. Достоевский. Собрание сочинений в 15 томах. Л.: Наука. Ленинградское отделение, 1988. Т. 2. http://az.lib.ru/d/dostoewskij_f_m/text_0210.shtml [10.01.2022]

मगरमच्छ

एक विचित्र घटना

ऋषिका कात्यायन
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम, केरल

एक सच्ची घटना कि कैसे एक अज्ञात उम्र के सज्जन को पसाझ में एक मगरमच्छ ने जीवित निगल लिया था और फिर इसके बाद उससे क्या निकला।

ओह लैम्बर्ट! कहाँ हो लैम्बर्ट? क्या किसी ने लैम्बर्ट को देखा है?

I

१३ जनवरी वर्ष १८६५ की सुबह इवान मतवेयेविच की धर्मपत्नी एलेना इवानोव्ना ने घड़ियाल देखने की इच्छा जाहिर की, जो कि किसी ज्ञात शुल्क पर प्रसिद्ध पस्साज में दिखाया जा रहा था। इवान मतवेयेविच एक सुशिक्षित व्यक्ति है, मेरे साथ काम करते हैं एवं दूर के रिश्तेदार भी है। वह पहले से ही अपनी जेब में विदेश जाने का टिकट रखे हुए (किसी बीमारी की वजह से नहीं बल्कि जिज्ञासा से) उस दिन अपनी सेवा से छुट्टी पर थे इसलिए उस सुबह बिल्कुल खाली से बैठे हुए इवान मतवैविच ने अपनी पत्नी की इच्छा का विरोध न करते हुए उन्होंने निश्चिन्त होकर कहा कि बहुत बढ़िया विचार है, आज हम सब घड़ियाल देखने चलेंगे। यूरोप जाना ही है तो उनके मूल निवासियों से जान पहचान करने में कोई हर्ज़ नहीं है, और इतना कहने के बाद, तुरन्त ही अपनी धर्मपत्नी का हाँथ थामते हुए वो उसी वक्त पशुवाटिका की तरफ निकल पड़े।और मैं एक पारिवारिक दोस्त की तरह उनके साथ चल पड़ा। मैंने इवान मतवेयेविच को कभी भी इस प्रसन्न मुद्रा में नहीं देखा था, जैसे कि कोई अत्यधिक यादगार सुबह

हो। यह ध्रुव सत्य है कि हम अपने भाग्य विधि को पहले से नहीं जानते। वह पशुवाटिका में प्रवेश करते ही वहॉ की ऊँची-ऊँची इमारतों की भव्यता की प्रसंशा करने लगे, और दुकान के थोड़ा पास जाकर,जहाँ पर ही विचित्र जीवों की प्रदर्शनी लगी थी, जिन्हे राजधानी से लाया गया था, वह स्वयं मेरे लिए भी पशुवाटिका का टिकिट लेना चाहते थे, जो आज से पहले कभी नहीं हुआ था। एक छोटे से कमरे में प्रवेश करने पर हमने देखा कि वहां मगरमच्छ के अलावा एक विदेशी नस्ल (ककाड़ू) का तोता भी था, और एक तरफ बंदरों का खास झुण्ड भी अलमारी में था। पशुवाटिका के प्रवेश द्वार के बायीं तरफ एक बहुत ही बड़ा टिन का डिब्बा था जो रुसी स्नानागार के समान प्रतीत हो रहा था, वो लोहे की जालियों से ढका हुआ था एवं उसके निचले तल पर कुछ पानी था। इसी छोटे से उथले पोखर में विशालकाय मगरमच्छ को रखा गया था, जो लकड़ी के विशाल खण्ड की भॉति स्थूल सा पड़ा हुआ था मानो उसकी सारी शक्ति क्षीण हो गयी हो, यहॉ के वातावरण में जैसे कि वह सामंजस्य ही स्थापित नहीं कर पा रहा हो। इस विशालकाय विचित्र जीव ने हममें से किसी को भी जिज्ञासावश इतना उत्तेजित नहीं किया जितना कि इलेना इवानोव्ना को।

आश्चर्यचकित होकर कहने लगी, अच्छा तो ये मगरमच्छ है! बहुत ही हतप्रद आवाज में कहा लेकिन मैं तो सोचती थी कि वह कुछ तो अलग ही होगा।

संभवतः वह सोच रही थी कि वह हीरा का है। एक जर्मन व्यक्ति जो कि मगरमच्छ का मालिक था उसने कमरे में प्रवेश किया और बड़े ही गर्व से हमारी तरफ देखा।

- वह सही है। ऐसा फुसफुसा कर इवान मतवेयेविच बोले

और वह यह भी जानता है कि पूरे रूस में वह अकेला ही है जो कि मगरमच्छ की प्रदर्शनी करता है। उसकी यह बिल्कुल ही बेवकूफी भरी टिप्पणी थी मैं उसकी शालीनतापूर्ण मनोदशा के मूल में उसके एक अच्छे मन का श्रेय देता हूँ। लेकिन वह अन्य मामलों में बहुत ही ईर्ष्यालु स्वभाव का व्यक्ति था।

- मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आपका मगरमच्छ जीवित नहीं है, फिर से एलेना इवानोव्ना ने मालिक से जिद करते हुए कहा लेकिन उसकी जिद से खफा होकर उस मालिक ने कहा, महिलाओं की एक पैंतरेबाज़ी के साथ सुंदर मुस्कान के साथ कहा, ताकि उस खड़ूस व्यक्ति को थोड़ी तमीज़ सीखा सके।

- नहीं नहीं मैडम, उसने अपनी टूटी-फूटी रूसी भाषा में उत्तर दिया, और उसी समय वह बाडे की जाली को ऊपर उठाकर मगरमच्छ के सर पर एक छोटी सी लोहे की छड़ी से कुरेदने लगा।

तत्काल इस विशालकाय खतरनाक जीव ने अपने जीवित होने का प्रमाण देने के लिए अपने पूँछ और पंजों को थोड़ा सा हिलाने लगा, अपने थुथने को थोड़ा उठाया और जोर-जोर से सॉस लेने लगा।

- अच्छा-अच्छा ठीक है नाराज़ मत हो, मेरे कर्लहान! जर्मन ने उसे पुचकारते हुए एवं आत्मसंतुष्टि से लबालब वह बोल पड़ा।

- कितना अप्रिय है यह मगरमच्छ, मै तो डर ही गयी थी, अदाओं से भरे अंदाज़ में एलेना इवानोव्ना ने कहा, अब वह मुझे सपने में भी दिखेगा।

- लेकिन मैडम सपने में वो आपको काटेगा नहीं, विनोदपूर्ण ढंग से बोलते हुए जर्मन अपने ही शब्दों पर हंस पड़ा। परन्तु हममें से किसी ने भी उसे जवाब नहीं दिया।

- चलिए चलते है सिम्योन सिम्योनिच, एलेना इवानोव्ना ने सिर्फ मेरी तरफ देखते हुए कहा

-इससे बेहतर है हम बन्दर देख ले।मुझे बन्दर अत्यधिक पसंद है। वे इतने प्यारे होते है और मगरमच्छ इतने भयानक।

- ओह, डरो मत मेरी प्रियतमा, ओह! अपनी अर्धांगिनी के समक्ष अपने आप को बहादुर की तरह पेश करते हुए, हमारे पीछे इवान मतवेयेविच चिल्लाये। ये फराओ जगत का

सुस्त प्राणी हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता, और खुद संदूक के पास खड़े रहे। और फिर वो अपना दस्ताना निकाल कर उसे मगरमच्छ के नाक में घुसेड़ने लगें ताकि वो फिर से सिसकारी भरेगा, ऐसा उन्होंने खुद स्वीकार किया। मालिक, एलेना इवानोव्ना के पीछे अलमारी की तरफ बंदरो के झुण्ड को देखने के लिए चल पड़े।

इस प्रकार सब कुछ अच्छा रहा और कुछ भी पूर्वानुमान लगाना मुश्किल था, एलेना इवानोव्ना ने खूब मज़े किये, बंदरो के साथ खेली और ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो खुद को उन्हें सौंप दिया हो। वह ख़ुशी से झूम उठी, बार-बार मुझसे बाते करते हुए जैसे वो मालिक की तरफ ध्यान ही नहीं देना चाह रही हो और उन बंदरो की समानता अपने कुछ परिचितों और दोस्तों से करके ठहाके लगाने लगी। मै भी हंस पड़ा क्योंकि यह समानता स्पष्ट थी। जर्मन (मालिक) समझ नहीं पाया उसे हंसना चाहिए या नहीं इसलिए अंततः उसने भौहें चढ़ा ली। बस इसी क्षण एक बहुत ही डरावनी एवं असहजसी चीख ने कमरे में मौजूद सभी लोगों को विचलित कर दिया। मैं उस पल कुछ सोच नहीं पा रहा था, पहले मैं हतोत्साहित हो गया था, कि एलेना इवानोव्ना की चीत्कार ने मेरा ध्यान आकर्षित किया, मैं जल्दी से उस तरफ मुड़ा और ... - मैं यह क्या देख रहा था! मैंने देखा.....! -हे भगवान, मैंने अभागे इवान मतवेयेविच को मगरमच्छ के खूंखार जबड़े के भीतर पाया, जिनके धड़ को उसने दबोच रखा था और हवा में ऊपर उठा दिया था, वो उग्रतापूर्वक अपने पैरों को फड़फड़ा रहे थे। कुछ ही क्षण उपरांत वह वहां नहीं थे। परन्तु मैं विस्तारपूर्वक सारी घटना सुनाऊंगा, क्योंकि मैं पूरे समय बिना हिले-डुले वही खड़ा रहा और पूरी घटना अपने सामने घटते हुए बहुत ही ध्यान और कौतुहल से देखी, इतनी उत्कंठा से जो मुझे अब याद भी नहीं है। -क्योंकि, मैं इस अशुभ घडी में सोचने लगा, -क्या होता यदि इवान मतवेयेविच की जगह ये सब मेरे साथ हुआ होता,-क्या बदकिस्मती होती तब मेरी!" फिर काम की बात करते हैं। मगरमच्छ ने कुछ इस तरह शुरुआत की; पहले बेचारे इवान मतवेयेविच को अपने जबड़ो में पैरो कि तरफ से दबोचा और सबसे

पहले उनके पैरो को निगल गया, इसके बाद उसने इवान मतवेयेविच को थोड़ा बाहर की तरफ निकाला जो बाहर कि तरफ कूदने की एवं अपने हाँथ से संदूक को छूने की कोशिश कर रहे थे, उसने उन्हें फिर से कमर से ऊपर वाले हिस्से को अपने अंदर समाहित कर लिया। इसके बाद उसने थोड़ा बाहर निकाला और फिर से बार बार उन्हें निगल गया। इस प्रकार इवान मतवेयेविच हमारी आँखों के सामने विलुप्त हो गए। अंततः मगरमच्छ ने मेरे सुशिक्षित मित्र को पूरी तरह से अपने अंदर सोख लिया और इस बार बिना किसी अवशेष के। उसकी ऊपरी सतह पर इवान मतवेयेविच के चलने की मुद्राओं को स्पष्ट तौर पे देखा जा सकता था। मैं चीखने ही वाला था तब तक भाग्य ने एक बार फिर चकमा देना चाहा, मगरमच्छ इतनी विशालकाय वस्तु के बोझ से थोड़ा लचक गया, दुबारा उसने अपनी खूंखार जबड़े को खोला,इवान मतीविच का सिर एक सेकंड के लिए जबड़े से थोड़ा बाहर की तरफ झुका हुआ था, बहुत ही व्याकुल भाव चेहरे पर थे, जबकि उनका चश्मा शीघ्रता से उनके नाक से संदूक की पेंदी में गिर गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह व्याकुल चेहरा सिर्फ इसलिए ही बाहर आया था ताकि वो नज़र भर सभी जीवित एवं स्थिर बस्तुओं को देख ले और मन ही मन सभी सांसारिक मोह-माया से अलविदा कह सके। परन्तु वो अपने मनसा में कामयाब नहीं हो पाएं, मगरमच्छ फिर से पूरा जोर लगाकर उन्हें निगल गया और क्षण भर में वह गायब हो गया, इस बार हमेशा के लिए। किसी मनुष्य के सिर का बार बार प्रकट होना और गायब होना बहुत ही व्याकुल कर देने वाला था और इसके साथ ही इन सारी घटनाओं का तेज़ी से या अकस्मात् घटित होने के कारण, फिर चश्मे का नाक से नीचे गिरना, ये सब बहुत ही विनोदपूर्ण वाक़या था। मै अचनाक ही हंस पड़ा, लेकिन तुरंत ही मेरा ध्यान इस बात पर गया कि एक पारिवारिक मित्र की हैसियत से इस पल मेरा हंसना उचित नहीं होगा,उसी वक्त मैंने सहानुभूतिपूर्ण भाव से एलेना इवानोव्ना से कहा।

- अब हमारे इवान मतवेयेविच नहीं बच पायेंगे!

इन सभी घटनाओ के दौरान एलेना इवानोव्ना की व्याकुलता को मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता। शुरुआत में पहली चीख के बाद वो तो जैसे अपनी जगह पे स्तंभित हो गयी और अपने सामने इस सारे अनुमानित झमेले को संभवतः उदासीनतापूर्ण भाव से लेकिन निहायत ही फटी आँखों से देखती रही। इसके बाद फिर वह दिल दहला देने वाली चीख में फूट पड़ी,लेकिन मैंने उनके हाँथ थाम लिए। उसी क्षण मालिक ने सबसे पहले संवेदनशून्य भाव से अपने हांथो को झटका और फिर आसमान कि तरफ देखकर चिल्लाना शुरू किया।

- ओ, मेरे मगरमच्छ, ओ मेरे अलेरलिबेस्टर करलखेनं!! मुटर, मुटर, मुटर!

इस आवाज़ पर पीछे का दरवाज़ा खुला और टोपी पहने हुए गुलाबी गाल वाली मुटर(माँ) दिखी, वयोवृद्ध किन्तु बिखरे हुए बाल,जर्मन के पास चीखते हुए जल्दी गयी।

और यहीं घोटाले की उथल-पुथल शुरू हो गयी: एलेना इवानोव्ना उन्मुक्त हो चली थी, सिर्फ एक ही शब्द बड़बड़ा रही थी -चीर दो! चीर दो!" फिर निस्वार्थ भाव से संभवतः विनती करते हुए मालिक और मुटर के पास दौड़कर चली जाती थी, किसी को चीर दो किसी चीज़ के लिए। मालिक और मुटर किसी ने भी हममें से किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया, वे दोनों बछड़े की भांति संदूक के समीप विलाप करते रहे।

-- वह फट जायेगा, वही अभी फूल जायेगा क्योंकि वो एक क्लर्क को निगल गया है, मगरमच्छ का स्वामी चिल्लाता रहता

- हमारा करलखेनं, हमारा अलेरलिबेस्टर करलखेनं!

- मालकिन चिल्ला रही थी अब हम अनाथ हो गए और रोटी को भी तरस जायेंगे!

- उसे चीर दो, चीर दो! एलेना इवानोव्ना रोते हुए जर्मन के कोट से लिपटते हुए बोली।

- वे मगरमच्छ को छेड़ रहे थे,

- आपके पतिदेव मगरमच्छ को क्यों छेड़ रहे थे! -लड़ते हुए जर्मन चिल्लाया -आप भुगतान करेगी अगर कार्लसन फूल जायेग। - वो मेरा बेटा था, वो मेरा इकलौता बेटा था।

मै स्वीकार करता हूँ कि मै जर्मन की ऐसी स्वार्थपरायणता और उसकी माँ की ह्रदय उदासीनता देख कर बहुत ही हताश हो गया था, इसके अतिरिक्त निरंतर आती हुयी एलेना इवानोव्ना की आवाज़: "चीर दो, चीर दो!" और भी ज्यादा मेरी घबराहट को बढ़ा रहीं थीं, मेरा ध्यान उस तरफ खींच रही थी अतः मैं काफी डरा हुआ था... मैं पहले ही बता देना चाहता हूँ। उनकी चीत्कार को मैं एक विचित्र सपना समझ रहा था और ये कि एलेना इवानोव्ना अपना विवेक खो बैठी है, हालाँकि स्वयं को संतुष्ट करने के लिए अपने प्रिय इवान मतवेयेविच के मरने पर एलेना इवानोव्ना ने मगरमच्छ को चाबुक से दंड देने का सुझाव दिया। इतने में उसने कुछ और ही सोचा। बिना किसी शंका के मैंने दरवाज़े की तरफ देखा और एलेना इवानोव्ना से शांत होने के लिए खासकर इतना संवेदनशील शब्द "चीर दो" को नहीं इस्तेमाल करने के लिए मिन्नतें करने लगा। इसका कारण यह था कि ऐसी पश्चिगमी इच्छा: यहाँ, पूरे शिक्षित समाज के बीच में, इस प्रेक्षागृह से दो कदम की दूरी पर, जहाँ मिस्टर लावरोव ने उसी समय शायद भाषण दिया होगा, यह घटना सिर्फ असंभव ही नहीं बल्कि कल्पनातीत थी और बहुत जल्दी ही हम व्यंग के पात्र एवं मिस्टर स्टीपन के व्यंग चित्र बन सकते थे। अपनी घबराहट के कारण, मैं अपने संदिग्ध सोच में तुरंत ही सही साबित हुआ, अचानक पर्दा हिला जो मगरमच्छ के कमरे को छोटी कोठरी से अलग कर रहा था जिसमें चवन्नी जमा किये जाते थे, चौखट पर कोई काया सी नज़र आयी जिसकी दाढ़ी थी और हाँथ में रुसी टोपी फुरझका, उसके शरीर का अगला हिस्सा बहुत ज्यादा झुका हुआ था तथा बड़े ही बुद्धिमानी से वो अपने पैर चौखट पे जमाये हुए था, ताकि वो टिकिट के लिए भुगतान करने का हक़ न खो दे।

- ऐसी प्रतिक्रियावादी पश्चिगमी इच्छा, मालकिन! किसी भी तरह से हमसे मेल जोल न बढ़ने की और चोखट पर खड़े रहने की कोशिश करते हुए, किसी अपरिचित ने कहा, - ये आपके विकास के लिए अच्छा नहीं है और ऐसा करने से आपके मस्तिष्क में फास्फोरस की कमी हो सकती है।फ़ौरन ही आप हमारे क्रॉनिकल में और हमारे व्यंग कॉलम में हास्य की पात्र होंगी।

लेकिन उसने अभी तक अपनी बात ख़तम नहीं की थी: मालिक ने जैसे ही मगरमच्छ की कोठरी में उस आदमी को बोलते हुए देखा जिसने टिकट भी नहीं लिए थे, आग बबूला होकर उस प्रगतिशील सोच रखने वाले अपरिचित पर बरस पड़ा और उसका गिरेबान पकड़कर उसे धक्का दिया। एक मिनट के लिए दोनों हमारी आँखों से परदे के पीछे ओझल हो गए, और यहाँ मैं समझ गया कि सारे फ़साद की जड़ कुछ नहीं थी; एलेना इवानोव्ना पूर्णतः निर्दोष थीं: जहाँ तक मैं समझ पा रहा था वो मगरमच्छ को चाबुक से पश्चिगमी और अपमानजनक दंड न देकर,सिर्फ ये चाहती थी कि उसके पेट को चाकू से चीर दिया जाये और इस तरह उसके भीतर से इवान मतवेयेविच को आजाद कर दिया जाये।

-- क्या! आप चाहतीं हैं कि मेरा मगरमच्छ ख़तम हो जाये! फिर से मालिक तेज़ी से चौकड़ी भरते हुए चिल्लाया, - नहीं,चलिए फिर आपके पति सबसे पहले ख़तम हो जाये और फिर मगर!.. मेरे पिता जी मगरमच्छ की प्रदर्शनी करते थे,मेरे दादा जी मगरमच्छ की प्रदर्शनी करते थे,मेरा बेटा मगरमच्छ की प्रदर्शनी करेगा और मै भी मगरमच्छ की प्रदर्शनी करूँगा! सभी मगरमच्छ की प्रदर्शनी करेंगे! मैं पूरे यूरोप में प्रसिद्ध हूँ और आप पूरे यूरोप मे प्रसिद्ध नहीं हैं और आप मुझे जुर्माना देंगी। जुर्माना, करलहीन को फोड़ने के लिए।

- मैं, मैं! खड़ूस जर्मन औरत ने बोलना शुरू किया, - हम आपको ऐसे नहीं जाने देंगे।

- हाँ और चीरना बेकार हैं, धीमे से मैंने कहा, ताकि एलेना इवानोव्ना को जल्दी घर ले जा सकूं, क्योंकि हमारे प्रिय इवान मतवेयेविच बहुत हद तक संभव हैं कि किसी दूसरे साम्राज्य में उड़ रहे होंगे।

- मेरी प्रियतमा! इसी पल अकस्मात् हमें बहुत ही चौंका देने वाली, इवान मातीयीविच कि आवाज़ आयी,- मेरी प्रिय, मेरा विचार हैं अभी ही कुछ करना होगा अधीक्षक के माध्यम से नहीं तो ये जर्मन बिना पुलिस की मदद लिए सच को नहीं समझ पाएगा।

ये शब्द इतनी गंभीरता के साथ कहे गए थे जो एक अजीब जीवात्मा कि उपस्थिति का अहसास करा रही थी और पहले तो हमें इतना हैरान कर दिया कि हम अपने कानों पर विश्वास नहीं कर पाए।

लेकिन, ये स्वाभाविक हैं,कुछ लोग उसी समय संदूक के पास प्रार्थना करते हुए पहुंचे और कुछ अविश्वास के साथ अभागे बंदी को सुन रहे थे। उनकी आवाज़ काफी धीमी, पतली थी, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो काफी दूर से आ रही हो। ये बिल्कुल वैसा था जब कोई मसखरा दूसरे कमरे में जाकर साधारण तकिये से अपना मुँह दबाकर चिल्लाना शुरू करता हैं ये सोच कर कि दूसरे कमरे में सभी उसे सुन रहे हैं,जैसे दो आदमी किसी रेगिस्तान में एक खाई द्वारा अलग हो गयें हों, जैसा कि मुझे एक बार क्रिसमस पर अपने एक परिचित के यहाँ सुनने का अवसर मिला।

- इवान मातीयीविच मेरे दोस्त, इसका मतलब तुम जिन्दा हो! इलेना इवानोव्ना बड़बड़ायी।

- जिंदा और एकदम ठीक, इवान मातीयीविच ने जवाब दिया। - और ऊपर वाले की कृपा से बिना किसी नुकसान के निगला गया हूँ। सिर्फ एक बात की चिंता हैं कि इस प्रकरण को प्रबंधन (हेड ऑफिस) किस तरह से आंकेगा कि विदेश का टिकिट पाकर चला गया मगरमच्छ के भीतर ये तो बिल्कुल विलक्षण रहित हैं।

- लेकिन मेरे प्रिय तुम इस सन्दर्भ में मत सोचो सबसे पहले तुम्हें यहाँ से कैसे भी निकालना होगा, इलेना इवानोव्ना ने बीच में टोका।

- निकालना! मालिक जोर से चिल्लाया - मै मगर को चीरने नहीं दूंगा। अब इसके बारे में हम प्रकाशित करवाएंगे और भी ज्यादा लोग आयेंगे।

- ये सही हैं, धीरे से इवान मातीयीविच ने कहा,

- आर्थिक सिद्धांत मेरी प्रियतमा सबसे पहले आता हैं।

- मेरे दोस्त मैं चिल्लाया, अभी मैं हेड ऑफिस जा रहा हूँ और शिकायत करूँगा नहीं तो मुझे ऐसा लग रहा है कि हम ये अकेले नहीं कर पाएंगे।

- और मैं भी यही सोचता हूँ, इवान मतवेयेविच ने कहा। - लेकिन बिना पैसे के हमारे ज़माने में व्यापार बहुत मुश्किल हैं और फिर मगरमच्छ का पेट चीरना एक समस्या यह भी हैं।

- मालिक मगरमच्छ के बदले में क्या लेगा? और दूसरा कौन हमें पैसे देगा? तुम तो जानते हो कि मेरे पास कुछ हैं नहीं।

- और शिकायत करने पर, मैंने संकोचपूर्वक कहा, किन्तु मालिक ने उसी वक्त मुझे टोक दिया कि

- मै मगरच्छ को बेचूंगा नहीं, मैं तीन हजार में नहीं बेचूंगा, मै चार हज़ार में भी नहीं बेचूंगा।हम अब प्रकाशित करेंगे, काफी लोग आयेंगे। मै पांच हज़ार में भी नहीं बेचूंगा!

एक शब्द में कहे तो वो गुस्से से तमतमा रहा था, लालच और धनलोलुपता उसकी आँखों में चमक रहे थे।

- जा रहा हूँ! मैं गुस्से में चिल्लाया।

- और मैं! और मैं भी! मैं जा रही हूँ।

- मैं जा रही हूँ, मैं उस अन्द्रेई ओसीपोविच के पास, उन्हें अपने आंसुओं से पिघलाने की कोशिश करुँगी,कराहते हुए एलेना इवानोव्ना ने कहा। - ऐसा मत करना मेरी प्रियतमा, जल्दी से इवान मातीयीविच ने टोका, क्योंकि बहुत पहले से ही वो अपनी पत्नी को लेकर अन्द्रेई ओसीपोविच से जलते थे और जानते थे कि वो खुश होकर उस सुशिक्षित इंसान के सामने रोयेगी क्योंकि आंसू उसके व्यक्तित्व के अनुकूल भी हैं। -और हाँ, मेरे दोस्त मैं तुम्हे ये सलाह नहीं दूंगा, वो मुझसे बोले,-क्या जरुरत हैं ऐसे ही अचानक वहां जाने की और इससे क्या होगा। और तुम जाओ तिमोफेई सिमयेनीच के पास अलग से बातचीत करने के लिए। वो एक रूढ़िवादी और संकीर्ण ख्याल के आदमी हैं,परन्तु गंभीर हैं और सबसे महत्वपूर्ण -हाज़िरजवाब हैं। मेरी तरफ से उन्हें नमस्कार करना और उन्हें सारा वृतांत सुनाना। और क्योंकि मुझे उन्हें ७ रूबल लौटने हैं जो मैंने पिछली बार कार्ड खेलने के लिए लिया था,वो तुम उन्हें दें देना इस मौके पर यह उस खड़ूस बूढ़े को थोड़ा ठंडा कर देगा। किसी भी हाल में उनकी राय हमें रास्ता दिखाने का काम करेगी। और अब एलेना इवानोव्ना को ले जाओ यहाँ से। - शांत हो जाओ, मेरी प्रियतमा, उसने कहा, - मैं शोर गुल और इन औरतों के बकबक से काफी थक गया हूँ और थोड़ा सोना चाहता हूँ। यहाँ गरम भी हैं और मुलायम भी, जबकि मै इस अचानक से मिले हुए शरणस्थल के चारो तरफ अच्छे से नहीं देख पाया हूँ।

- चारों तरफ देखना! क्या सच में वहाँ रोशनी हैं! घबराहट मे एलेना इवानोव्ना चिल्लाई।

- मेरे चारों तरफ काली रात हैं, बिचारे बंदी ने कहा।- लेकिन मै छू सकता हूँ, कहना चाहता था कि हांथों से महसूस कर सकता हूँ। अलविदा, शांत रहना और अपने मनोरंजन में किसी प्रकार की कमी मत करना, कल मिलते हैं! और तुम सेम्योन सेम्योनिच शाम को मेरे पास आना अभी तुम बहुत विचलित हो और भूल सकते हो इसलिए गांठ बांध लो।

मैं ये स्वीकार करता हूँ कि मैं भी जाने की बात सुनकर खुश था, क्योंकि मैं बहुत ज्यादा थक गया था और ऊब भी गया था। एलेना इवानोव्ना का हाँथ थामे हुए मैं जल्दी से उन्हें मगरमच्छ वाली कोठरी से बाहर लाया।उनके चेहरे की रौनक दुःख और परेशानियों के कारण धूमिल हो गयी थी।

- शाम में अंदर जाने के लिए फिर से २५ कोपयेक लगेंगे! हमारे पीछे से मालिक चिल्लाया

- हे भगवन ये कैसे लालची लोग हैं, अपने आप को पसाझ के दीवारों पर लगे सारे आइनो में निहारते हुए एलेना इवानोव्ना ने कहा, मन ही मन शायद ये स्वीकार कर रही थी कि वो और अच्छी दिखने लगी हैं।

- आर्थिक सिद्धान्त, मैंने अपनी महिला मित्र पे गर्व करते हुए थोड़ी घबराहट के साथ सभी राहियों के सामने कहा।

- आर्थिक सिद्धान्त, जो अभी इवान मातीयीविच ने इस विपरीत आर्थिक सिद्धांत के बारे में, इकनोमिक प्रिंसिपल के बारे में बात की, मैं कुछ समझी नहीं, बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण आवाज़ में उसने कहा।

- मैं आपको समझाऊंगा, मैंने जवाब दिया और जल्द ही विदेशी मुद्रा को अपने देश में लाने के लाभदायक परिणाम के बारे में उन्हें बताने लगा जिसके बारे में मैंने सुबह ही "पीटर्सबर्ग न्यूज़" और "वोलोसे" में पढ़ा था। थोड़ी देर सुनने के बाद उसने टोका

- ये सब कितना अजीब हैं! - हो गया अब बस कीजिये, आप भी क्या बकवास कर रहे हैं। - अच्छा, बताइये क्या मैं लाल हूँ?

- आप बहुत सुन्दर हैं, लाल नहीं, मैंने मौका देखकर प्रशंसा किया।

- बदमाश! आत्मसंतुष्टी से वो बड़बड़ायी। - बिचारे इवान मातीयीविच, यही कोई एक मिनट पश्चात् अदाओं से कंधे को सर से झुकाते हुए फिर से बोली, - सच में मुझे बहुत

बुरा लग रहा है, हे भगवान! वो फिर से चिल्लाई, - अच्छा बताइये, वो भला आज खाना कैसे खाएंगे वहाँ.....और ....और वह कैसे करेंगे .....अगर उन्हें कुछ दिक्कत आती है तो?

- यह सवाल अप्रत्याशित है। मैंने उत्तर दिया और पेचीदा भी है। सच में यह मेरे दिमाग में आया ही नहीं की औरतें घरेलू समस्याओं का हल ढूंढने में हम, आदमियों से इतनी ज्यादा व्यावहारिक हैं!

- बिचारे, कैसे वो इन सब में फंस गये - और वहाँ मनोरंजन के लिए भी कुछ नहीं है है तो सिर्फ अँधेरा ...कितने दुःख की बात है कि उनकी कोई फोटो भी मेरे पास नहीं है। ...और अब मैं एक विधवा की भांति हूँ। उसने एक आकर्षित मुस्कान के साथ कहा, इससे सपष्ट था कि अपने नए दर्ज़े के सन्दर्भ में काफी उत्सुक थी। - हम्म्म, फिर भी मुझे उनके लिए बुरा लग रहा है।

एक शब्द में कहे तो, उसने एक बहुत ही स्पष्ट और जायज़ शोक जाहिर किया जैसे एक जवान और दिलचस्प बीवी अपने स्वर्ग सिधार गये पति के बारे में करती है। मैं उसे घर लाया, उसे शांत किया और उसके साथ दोपहर का भोजन करने के बाद खुशबूदार कॉफी पीकर मैं ६ बजे तिमोफेई सेम्योनिच के यहाँ निकल पड़ा यह आशा करते हुए कि इस समय सभी पारिवारिक लोग अलग अलग कारोबार से ताल्लुक रखने वाले अपने अपने घरों में बैठे या लेटे होंगे।

अपने पहले पन्ने पर एक अक्षर लिख कर, बहुत ही अच्छे से पूरी घटना का वर्णन किया, मैं आगे भी अक्षर का इस्तेमाल करूँगा लेकिन बहुत ही उत्कृष्ट कोटि का नहीं बल्कि ज्यादा सहज है जिसके बारे में मैं पहले से ही पाठकों को बता रहा हूँ। वर्णित घटना के लिए उपर्युक्त शैली में यह अध्याय लिखने के बाद, मैं शैली का उपयोग जारी रखने का इरादा रखता हूं, हालांकि इतना उदात्त नहीं, लेकिन अधिक स्वाभाविक, जिसके बारे में मैं पाठक को पहले से सूचित करता हूं।

II

प्रतिष्ठित तिमोफेई सेम्योनिच बहुत ही जल्दी में और थोड़े घबराये हुए से मुझसे मिले, वे मुझे अपने छोटे से केबिन में मिलवाने लेकर आये और दरवाज़े को जोर से बंद किया: - «ताकि बच्चे परेशान न करे», चेहरे पर व्याकुल भाव लाते हुए बोले, इसके बाद मुझे कुर्सी पर राइटिंग डेस्क के सामने बैठाया और खुद आराम कुर्सी पर बैठ गये, फिर अपने पुराने सूती लबादा को लपेट लिया कोट को सूंघे और फिर ऑफिसियल की भांति कठोर अभिव्यंजना लाये, जबकि वो मेरे या इवान मतवेइच के हेड नहीं थे, मैं उन्हें अब तक एक साधारण और परिचित सहकर्मी समझता था।

- सबसे पहली बात, उन्होंने शुरू किया, - ध्यान में रखिये कि मैं आपका हेड नहीं हूँ और वैसे ही हूँ जैसे आप और इवान मतवेइच। मैं अलग हूँ और इन सब में नहीं पड़ना चाहता।

मैं चकित था कि वो ये सब पहले से ही जानते है। इसके बावजूद मैंने उन्हें सारा वृतांत सुना दिया।और मैं ये सब व्याकुल होकर कह रहा था, इसलिए भी क्योंकि एक सच्चे मित्र का फ़र्ज़ निभा रहा था।वो सारी बातें बिना किसी आश्चर्य के, लेकिन सन्देहपूर्वक सुन लिए।

- मान लो, पूरा सुनने के बाद बोले, मैं हमेशा से ये जानता था कि उसके साथ ऐसा अवश्य होगा।

- ऐसा क्यों, तिमोफेई सेम्योनिच यह घटना तो अपने आप में ही बहुत असाधारण है।

- हाँ मैं सहमत हूँ। लेकिन इवान मतवेयेविच अपने पूरे सेवा के दौरान इस परिणाम की तरफ अभिमुख थे।

- यह प्रगति और अलग विचारधारा कहाँ लेकर जाएँगी! हाँ, ये घटना सभी विचारशील धाराओं के व्यक्तियों के लिए काफी असाधारण है, एक सामान्य नियम के तहत इस घटना को किसी भी तरह रोका नहीं जा सकता था।

- नहीं, हो सकता और ये ऐसा ही है। और आप देख रहे है ये सब अत्यधिक शिक्षण से हो रहा है, मेरा विश्वास कीजिये। इसलिए ऐसे पढ़े लिखे लोग हर जगह घुस जाते है, खासकर वहाँ जहाँ उनको बिल्कुल नहीं बुलाया जाता। इसके अतिरिक्त, हो सकता है आपको ज्यादा जानकारी हो। ऐसा लगा मानो कुपित होते हुए बोले। - मैं बहुत ज्यादा शिक्षित नहीं हूँ और बहुत बुजुर्ग भी नहीं हूँ, मैंने सिपाहियों के बच्चो के साथ सेवा शुरू किया और इस साल मेरी सेवा को ५० साल हो गये।

-अरे नहीं, तिमोफेई सिम्योनिच दया कीजिये। इसके विपरीत इवान मातीयीविच आपके सलाह को लालायित हैं, आपके मार्गदर्शन को लालायित हैं। और मैं इतना कह सकता हूँ कि उनकी ऑंखें भर आयी थीं।

- ऑंखें भर आयी थीं? हम्म, ये आंसू उनके घड़ियाली आंसू है और उनके ऊपर बिल्कुल विश्वास नहीं किया जा सकता। और मुझे ये बताइये कि वो विदेश क्यों जाना चाहते थे?और हाँ किस पैसे से? और हाँ शायद उनके पास तो पैसे हैं भी नहीं?

- जमा किये हुए पैसों से, तिमोफेई सेम्योनिच, पिछले बोनस से, मैंने कारुणिक ढंग से उत्तर दिया। - सिर्फ ३ महीनों के लिए जाना चाहते थे, स्वीट्ज़रलैंड ... विल्गेल्म तेल के जन्म स्थान

- विल्गेल्म तेल? - हम्म,

- वो वसंत ऋतु नियापोली में बिताना चाहते थे। - संग्रहालय, जानवर और वहाँ के रीति-रिवाज़ देखने के लिए।

-हम्म, जानवर? -और मेरे ख्याल से थोड़ी गौरवपूर्ण भाव से। - कौन से जानवर? जानवर? क्या हमारे यहाँ कम जानवर हैं? हमारे यहाँ जानवर, संग्रहालय और ऊंट हैं। भालू तो पीटर्सबर्ग के उपनगर में रहते हैं। और ये देखो वो खुद ही मगर के भीतर जाकर बैठ गया।

- तिमोफेई सिम्योनिच, दया कीजिये, वो इंसान दुःख में है, वो आदमी मदद मांग रहा है एक मित्र के नाते, एक सम्बन्धी के नाते, सलाह के लिए लालायित है और आप भर्त्सना कर रहे हैं..... - कम से कम एलेना इवानोव्ना के ऊपर तो तरस कीजिये!

- ये आप उनकी पत्नी के बारे में बात कर रहे हैं? - दिलचस्प औरत हैं, शायद अपनी भूख को तम्बाकू की सुगंध से थोड़ा शांत करते हुए तिमोफेई सेम्योनिच बोले। - अत्यधिक सुन्दर काया वाली हैं। -और जैसी खाते पीते घर की हो और उनका सर बहुत प्यारा है, बहुत प्यारा है .... बहुत अच्छी हैं। - अन्द्रेई ओसीपोविच तीसरे दिन भी ज़िक्र कर रहे थे।

- ज़िक्र कर रहे थे?

- ज़िक्र कर रहे थे और उनका हाव भाव काफी चापलूसी से भरा हुआ था।

- छाती... - कहता है, नज़र और केशविन्यास शैली... -वो औरत नहीं बल्कि चॉकलेट है और फिर हंस पड़े। - वो लोग अभी जवान हैं। - तिमोफेई सेम्योनिच ने जोर से फूंक मारी - और इसके अलावा यह एक जवान व्यक्ति है और कौन सा पेशा चुने है अपने लिए।

- हाँ, लेकिन यहाँ बिलकुल अलग है तिमोफेई सेम्योनिच।

- हाँ, हाँ।

- और फिर कैसे होगा, तिमोफेई सेम्योनिच?

-हाँ और मैं इसमें कर भी क्या सकता हूँ?

- कुछ सलाह दीजिये, मार्गदर्शन कीजिये एक अनुभवी के तौर पे, एक रिश्तेदार की हैसियत से! -क्या करना चाहिए? क्या प्रबंधन के पास जाना चाहिए या फिर .....

- प्रबंधन के पास? बिलकुल नहीं - जल्दी से तिमोफेई इवानोविच बोले। -अगर आपको सलाह चाहिए तो सबसे पहले यह सारी बातें हमें गुप्त रखनी होंगी फिर आगे कुछ करना होगा, अगर यूँ कहें तो एक गैरसरकारी व्यक्ति की तरह। यह घटना संदेहास्पद है और अनोखी है। - सबसे महत्वपूर्ण यह है कि यह घटना अनोखी है और इस तरह की घटना का कोई उदाहरण अब तक नहीं था, और हाँ न के बराबर किसी के द्वारा अनुशंसित किया जाने वाला है .....इसलिए सबसे पहले सतर्कता जरूरी है ..... उसे वहाँ लेटे रहने दो। हमें इंतज़ार करना होगा,इंतज़ार करना होगा। .....

अच्छा, कैसे इंतज़ार करना होगा, तिमोफेई सेम्योनिच? और हाँ अगर उनका दमघूंटने लगेगा वहाँ तो?

- अच्छा, ऐसा क्यों? आपने ही तो कहा कि वो वहाँ काफी आराम से रह रहे हैं?

मैंने फिर से पूरा वृतांत सुनाया।

तिमोफेई सिम्योनिच सोचने लगे,

- हम्म! हाँथ में नसवार की डिबिया घुमाते हुए हुए बोले - मेरे ख्याल से ये अच्छा है कि वो विदे के बजाय वही पड़े रहे कुछ समय के लिए। उनको इस खाली समय में वहाँ सोचने दीजिये,विचार करने दीजिये, दम घुटना नहीं चाहिए और इसलिए उनके स्वास्थ्य के लिए कुछ उचित कदम उठाना होगा: वहाँ खांसी वगैरह से सावधान रहना होगा .....और जहाँ तक जर्मन का सवाल है तो मेरे ख्याल से वह अपनी जगह सही है, क्योंकि उसके मगरमच्छ के अंदर बिना अनुमति के कोई घुंस गया है, न कि वो इवान मतवेयेविच

के मगरमच्छ के अंदर घुंसा है, जिसके पास जहाँ तक मुझे याद है कोई मगरमच्छ नहीं है। और हाँ ये मगर एक सम्पति है बिना हर्ज़ाना के उसको फाड़ना सही नहीं है।

- इंसानियत को बचाने के लिए, तिमोफेई सेम्योनिच।

- ये तो पुलिस का काम है। वहां इस बात को बताना होगा

- हो सकता है कि हमे इवान मतवेयेविच की जरुरत पड़े। उसके बारे में पूछ सकते हैं।

- इवान मतवेयेविच की जरुरत होगी? ह, ह (धीरे धीरे हंसने की आवाज़)! क्योंकि सभी समझते है कि वो छुट्टी पर है, हम इस बात को टाल सकते हैं उनको तब तक यूरोप की धरती घूमने दो। दूसरी बात है कि अगर अवकाश समाप्त होने तक उपस्थित नहीं होते हैं तो फिर हम पता लगायेंगे....

- ३ महीने हैं! तिमोफेई सिम्योनविच, दया कीजिये!

वो खुद ही दोषी है। और कौन उसे वहाँ धक्का दिया? - और इस तरह हो सकता है उसे कोई जल्लाद भाड़े पर करना पड़े और ये कार्य दाल के अनुसार नहीं हो सकता। - और सबसे महत्वपूर्ण बात मगरमच्छ एक सम्पति है, और यहाँ आर्थिक सिद्धान्त लागू होता है। और इकनोमिक प्रिंसिपल सबसे पहले आता है। दो दिन पहले ही इगनती प्रोकोफीच लुका अंद्रेईच की पार्टी में कह रहे थे, इगनती प्रोकोफीच को आप जानते हैं? पूंजीवादी, व्यवसाय में, और जानते हैं सहज रूप से बोले: "हमें अभी जरूरत है, कहने लगे, उद्योग, हमारे यहाँ उद्योग बहुत कम है। हमें उत्पादन करना होगा, हमें पूंजी उत्पन्न करना होगा, इसका मतलब है, मध्यम वर्ग,तथाकथित बुर्जुआ उत्पन्न करना होगा। और जैसा कि हमारे पास पूंजी है नहीं तो उसे विदेश से लाना होगा। सबसे पहले हमें विदेशी कंपनियों को हमारे देश में जमीन खरीदने के लिए सहमति देनी होगी,जिस तरह दूसरे देशो ने भी किया है। सम्प्रदायवाद सांप्रदायिक सम्पति ज़हर की तरह है,

कहने लगे, मृत्यु के सामान है! - और जानते हैं, काफी आक्रोश में आकर बोलने लगे: और हाँ उनके लिए व्यवसायी ज्यादा अच्छे हैं।

-संप्रदाय के साथ, बोलना शुरू किया, न ही व्यवसाय और न कृषि आगे बढ़ सकता है। हमें ये चाहिए कि विदेशी कंपनियां हमारे सारे जमीनों के टुकड़ें को ख़रीदे और इसके बाद इनको छोटे टुकड़ों में बाँट दे, टुकड़ों में बाँट दे, जितना संभव हो उतने टुकड़ों में बाँट दे, और जानते है - और जानते है, सुदृढ़ता के साथ कहने लगे, - टुकड़े करना चाहिए और फिर निजी सम्पति के तौर पर बेंच देना चाहिए। और हाँ सिर्फ बेच ही नहीं, उसे सिर्फ किराये पर भी दे सकते हैं। कहने लगे, जब सारी जमीन बुलाये गये विदेशी कम्पनियों के पास होगी, मुहँ-माँगा दाम किराये का वसूल किया जा सकता है। और इस प्रकार एक किसान सिर्फ रोटी के लिए तीन आदमी के बराबर काम करेगा, और उसे जब मन करे ज़मीन से निकाल भी सकते हैं। और जानते हैं, वो ऐसा महसूस करेगा जैसे मालिक के अधीन हो और उसी मेहनतताना पर तीन आदमी के बराबर काम करता है। और अब उसे समुदाय में क्या मिलेगा! वो जानता है कि भूख से नहीं मरेगा, इसलिए आलसपन करता है और शराब पीता है। और इसी दौरान हमारे पास पैसे आएंगे, कैपिटल होगा और बुर्जुआ आएगा। और ये देखिये अंग्रेजी की पोलिटिकल और लिटरेरी समाचार पत्र " टाइम्स" हमारे अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करते हुए हाल में ही प्रतिक्रिया दिया कि क्यों हमारी आमदनी नहीं बढ़ रही है, क्योंकि हमारे पास मध्यम वर्ग नहीं है, बड़े जमा पूंजी नहीं है, श्रमजीवी वर्ग, जो सेवा के लिए तैयार है, हमारे यहाँ नहीं है ....."बहुत अच्छा बोलते हैं इगनती प्रोकोफेविच। वक्ता हैं। वो खुद ही हेड ऑफिस की आलोचना करना चाहते है और फिर इस बारे में समाचार पत्र में छपवाना चाहते हैं/ ये कोई कविता नहीं है इवान मतवेयेविच की तरह

- अच्छा और इवान मतवेयेविच कैसे हैं? - मैं पीछे मुड़ा, दो बूढ़ो को बात करने दिया। तिमोफेई सेम्योनिच कभी कभी गप्पे हांकना पसंद करते थें और ये दिखाना चाहते थे की वो इन सबसे दूर नहीं हुए है बल्कि उन्हें भी सब पता है

- अरे इवान मातीयेविच कैसे हैं? -हाँ, मैं उसी बात पे आ रहा था। हम खुद ही विदेशी पूंजी देश में लाने के लिए बात कर रहे हैं और खुद ही तय कीजिये कि विदेशी मगर वाले का इवान मतवेयेविच की वजह से कितना पूंजी दुगुना हुआ होगा और हम इस विदेशी मालिक की प्रसंशा करने की बजाए उसके प्रमुख पूंजी का ही पेट चीरने को तैयार हैं।और क्या यह उचित है? मेरे विचार से इवान मतवेयेविच वतन के सच्चे सपूत हैं, उन्हें इस बात से खुश होना चाहिए और गर्व महसूस करना चाहिए कि उन्होंने खुद से इस मगर की कीमत दुगुनी कर दी है और शायद तिगुना और वहाँ वो व्यवस्थित ढंग से रह रहे हैं। -और ये विदेशी दान को लाने के लिए जरूरी है। और तुम देखना ये होगा, एक आ जायेगा, फिर दूसरा मगरमच्छ के साथ आएगा और तीसरा, दो या तीन एक ही बार में और इनके द्वारा पूंजी जमा होगी। और ये है बुर्जुआ। हमे इसे अवश्य प्रोत्साहन देना चाहिए।

- दया कीजिये, तिमोफेई सेम्योनिच! मैं जोर से चिल्लाया - और हाँ, आप बेचारे इवान मतवेयेविच से एक बहुत ही असहज त्याग देने को कह रहे है।

- मैं कुछ नहीं मांग रहा और सबसे पहले आपसे आग्रह कर रहा हूँ, जैसे पहले भी कर चुका हूँ। - ये सोचिये कि मै हेड ऑफिस हूँ। मैं वरीष्ठ अधिकारी नहीं हूँ मतलब मासिक "मातृभूमि के सुपुत्र" पत्रिका से नहीं, लेकिन फ़कत मातृभूमि के सच्चे पुत्र के रूप में कहता हूँ। और इसलिए मैं कुछ भी किसी से भी नहीं मांग रहा हूँ। अपनी मातृभूमि के सच्चे सपूत होने कि हैसियत से कह रहा हूँ।और किसने उनसे कहा था मगरमच्छ के अंदर जाने को? वो एक मजबूत व्यक्तित्व के,हैसियत वाले पद पर और क़ानूनी रूप से विवाहित व्यक्ति हैं, और अचानक ऐसा कदम! -क्या ये सही है?

- लेकिन ये दुर्घटना तो अनजाने में हो गयी।

- ये कौन जानता है? और फिर मगरमच्छ के मालिक को हर्ज़ाना कहाँ से देंगे, ये बताइये?क्या हम तनख्वाह से देंगे?

- क्या हम इसकी शिकायत नहीं कर सकते, तिमोफेई सेम्योनिच?

- क्या वह हमे मिल जायेगा? क्या हम तनख्वाह से देंगे?

- नहीं मिलेगा, तिमोफेई सिम्योनोविच - काफ़ी नहीं होगा, मैंने दुखी होकर उत्तर दिया। मालिक पहले तो डर गया कि मगरमच्छ फट जायेगा और जब निश्चिन्त हो गया कि सब ठीक है खूब इतराने लगा और उसकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था कि अब वो कीमत दुगुना कर सकता है।

- तिगुना कर सकता या फिर चौगुना भी! पब्लिक का ताँता लग जायेगा और मगरमच्छ के मालिक कौशलपूर्ण लोग हैं। इसके अतिरिक्त वे मांस खाने वाले लोग हैं,रंगरलियां मनाने वाले लोग हैं इसीलिए मैं फिर से दोहरा रहा हूँ, सबसे पहले इवान मतवेयेविच को चुपके से पर्यवेक्षण कर लेने दीजिये, वो घबराए नहीं वहां।जल्दी न करें। - सभी को ज्ञात हो जाने दीजिये कि वो मगर के अंदर है,लेकिन आधिकारिक तौर पर किसी को पता न लगे।इस तरह इवान मातीयीविच बहुत ही अच्छे और सुरक्षित माहौल में हैं, क्योंकि सभी सोचते हैं कि वो विदेश में हैं। हम बोलेंगे कि वो मगर के अंदर हैं तो नहीं विश्वास करेंगे। हम इस तरह से कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण ये है कि उन्हें इंतज़ार करने दीजिये थोड़ा .. और वैसे भी उन्हें कहाँ जल्दी है?

- और, अगर।

- लेकिन चिंता मत कीजिये, वो हठ्ठे-कठ्ठे हैं।

- और बाद में जब इंतज़ार करेंगे?

-लेकिन मैं आपसे छिपाऊँगा नहीं ये मामला बहुत पेचीदा है।इसके बारे में अंदाज़ा लगाना मुश्किल है, सबसे बड़ी मुश्किल ये है कि ऐसी घटना पहले नहीं घटी। - हमारे पास ऐसा कोई उदहारण नहीं है। अगर होता तो उससे थोड़ा मार्गदर्शन मिल ही जाता। लेकिन यहाँ तो ऐसा कुछ है ही नहीं, कैसे इसका हल निकाला जाये? कुछ भी सोचो तो और भी जटिल हो जाता है।

एक बहुत ही बढ़िया ख्याल मेरे दिमाग में आया।

-ऐसा नहीं कर सकते, मैंने कहा कि अगर ऐसा ही होना है तो, और यदि उनके नसीब में मगरमच्छ के भीतर ही रहना लिखा है तो भगवान करें मगरमच्छ का उदर सुरक्षित रहे,क्या वो इस बारे में एक अर्ज़ी नहीं डाल सकते कि उन्हें सेवा में भर्ती कर लिया जाए?

-हम्म .....छुट्टी के रूप में और बिना वेतन के।

- नहीं, क्या वेतन से संभव है?

- किस आधार पर?

-. एक व्यापार यात्रा के रूप में

- कैसी व्यापार यात्रा और कहाँ?

- अंदर ही मगरमच्छ के अंदर ही .....कहा जा सकता है कि प्रमाणपत्र के लिए गये है, तथ्यों की जानकरी के लिए गये हैं ..सच में ऐसा तो पहली बार होगा, लेकिन यह बहुत प्रगतिशील है और इसके साथ। इसके बावजूद भी विकास के प्रति ये एक दायित्व का बोध कराती है ....

तिमोफेई सेम्योनोविच सोचने लगे।

- किसी एक विशेष मुनीम को प्रशिक्षण देना, वो अंत में बोले - मगरमच्छ के अंदर किसी विशेष अध्ययन के लिए मेरे विचार से, अनर्थक तो नहीं है। -लेकिन समुदाय के अनुसार ये उचित नहीं है। और हाँ, यहाँ क्या अध्ययन हो सकता है?

-हो सकता है प्रकृति के वास्तविक अध्ययन के लिए उसी के अंदर रहकर, जानवर के अंदर। -आजकल सभी कुछ प्राकृतिक विज्ञान के अंदर आता है, वनस्पति विज्ञान.. -वो सिर्फ वहाँ बैठे होंगे और सूचना देते रहेंगे, वहा पर पाचन क्रिया के बारे में या फिर सिर्फ शिष्टाचार, नैतिक शास्त्र के बारे में। फैक्ट्स इकठ्ठा करने के लिए

-इसका मतलब ये कुछ हद तक स्टेटिस्टिक्स भी है। -पर मै इसमें मजबूत नहीं हूँ और न ही मैं दार्शनिक हूँ।

-आप तथ्यों की बात कर रहे हैं,-हम इसके बिना ही तथ्यों से लदे हुए हैं और समझ नहीं आता इनका क्या करे। और इसके अलावा ये स्टैटिक्स भी खतरनाक है।

- कैसे?

- खतरनाक है। इसके बावजूद आप मेरी बात मानिये,वो तथ्यों की सूचना लेटे हुए देते रहेंगे। और क्या लेट कर कोई सेवा करना या सेवा में होना संभव है?-और ये फिर से एक नयी प्रक्रिया है, इसके अलावा खतरनाक भी है,फिर इसका भी कोई उदाहरण अब तक नहीं था। और यदि कोई हमारे पास ऐसा छोटा सा उदाहरण होता तो मेरे विचार से प्रशिक्षण देना संभव था।

-पर जीवित मगरमच्छ को भी तो अब तक नहीं लाया गया था, तिमोफेई सेम्योनोविच।

-हम्म,हाँ ...वो फिर सोच में पड़ गयें। - यदि आप सोचे,तो आपका पक्ष तर्कसंगत है और आगे की कार्यवाही के लिए आधार बन सकता है। - लेकिन सोचिये यदि इस मगरमच्छ के आने से हमारे कर्मचारी गायब होने लग गए और इसके बाद, कि वहां

अंदर गर्म और नरम है सभी वहां प्रशिक्षण की मांग करने लगेंगे, और फिर पड़े रहेंगे। -आप खुद सोचिये ये अनुपयुक्त उदाहरण होगा। -और इस प्रकार शायद कोई भी व्यक्ति वहां चला जायेगा मुफ्त में पैसे लेगा।

-कृपा कीजिये तिमोफेई सेम्योनोविच! और हाँ असल में इवान मतवेयेविच ने मुझे जुए के येर्लाश खेल में हारे हुए ७ रूबल वापिस देने को कहा है।

-आह, वो कुछ दिन पहले निकिफोर निकिफोरीच के यहाँ हार गए थे! और मुझे याद है उस वक्त वो कैसे खुश रहते थे, हंस रहे थें,और अब! बुजुर्ग सचमुच द्रवित हो गए।

- कृपा कीजिये, तिमोफेई सेम्योनोविच।

- हाँ, देखता हूँ। मैं ये बात व्यक्तिगत तौर पर कह रहा हूँ आपकी मदद के लिए। - दरअसल आप अनौपचारिक तौर पर पता कीजिये कि मालिक अपने मगरमच्छ के लिए कितने पैसे लेगा?

तिमोफेई सेम्योनोविच लगभग विनम्र हो गए।

- जी, निश्चित तौर पे, मैंने उत्तर दिया, - और उसी समय मैं रिपोर्ट लेकर आपके पास आऊंगा।

-उनकी पत्नी तो अकेली है अब? याद करती होगी?

-आप आते तो अच्छा होता, तिमोफेई सिम्योनोविच।

- हाँ आऊंगा, मैंने अभी सोचा कि ये अवसर भी सही है ...

और क्यों उन्हें क्या खुजली हो रही थी मगर देखने की!पर वास्तव में। मैं खुद देखना चाहता हूँ।

- बेचारे को देखने आइये, तिमोफेई सिम्योनोविच।

- हाँ, आऊंगा। सचमुच मैं अपने इस कदम से आपकी उम्मीद नहीं बढ़ाना चाहता। - मैं वहां एक साधारण व्यक्ति की तरह वहाँ आऊंगा। - ठीक है, विदा दीजिये, मैं तो फिर से निकिफोर निकिफोरिच के यहाँ जा रहा हूँ,चलेंगे?

- नहीं, मैं बंदी के पास जा रहा हूँ।

- हाँ, अब मैं बंदी के पास जा रहा हूँ! -आह, कितनी मूर्खता है!

मैंने बुजुर्ग से विदा लिया। बहुत सारे विचार मेरे मन में उठ रहे थे। दयालु और बहुत ही ईमानदार व्यक्ति है तिमोफेई सिम्योनोविच, पर उनके यहाँ से निकलते वक्त मैं खुश था कि वो पहले ही ५० साल के है और अब ऐसे व्यक्ति हमारे यहाँ काफी गिने-चुने ही हैं। यह स्वाभाविक है कि मैं उस समय इन सबके बारे में बिचारे इवान मातीयीविच को बताने के लिए सीधे पसाझ गया। और हाँ मैं उत्सुक भी था ये जानने के लिए कि वो वहां कैसे रह रहे है और मगरमच्छ के अंदर रहना कैसे संभव है? और हाँ क्या वास्तव में कोई मगर के अंदर रह सकता है? कभी-कभी तो मुझे ऐसा लग रहा था कि ये सब कोई भयानक सपना है, और फिर ये सब बात भयानक जानवर की तो थी ही ....

III

किन्तु यह एक सपना नहीं था बल्कि निस्संदेह एक वास्तविकता थी। अन्यथा क्या मैं ये पूरी कथा सुनाता! फिर भी, आगे बढ़ता हूँ ...

पसाझ में मैं बहुत देर से पहुंचा, करीब ९ बजे और मगर की कोठरी में मुझे पीछे के दरवाजे से जाना पड़ा क्योंकि जर्मन ने इस बार दुकान समय से पहले ही बंद कर दिया था। वह एक घरेलू व पुराने तैलिये कुर्ते में वहां टहल रहा था,लेकिन वो सुबह की तुलना में तिगुना प्रसन्नचित था। यह साफ जान पड़ता था कि वो बिल्कुल ही किसी बात से नहीं डर रहा है। उसकी मां बाद में आयी, ये तो पता था कि क्यों आयी है,

मुझ पर नज़र रखने के लिए / जर्मन और उसकी माँ अक्सर फुसफुसाते रहते थें। इसके बावजूद कि दुकान बंद हो गया था उसने मुझसे पचीस कोपेक वसूले।और इतना जरूरत से ज्यादा सावधानी क्यों!

-आपको हर बार भुगतान करना होगा, हम इसे प्रकाशित कर देंगे फिर लोग १ रूबल में खरीदेंगे टिकिट और आप पचीस कोपेक क्योंकि आप अपने अच्छे मित्र के अच्छे मित्र है और मैं आपको अपना मित्र समझता हूँ ....

- तुम जीवित हो, जीवित हो मेरे सुशिक्षित दोस्त, मगर के करीब जाते हुए ये आशा करते हुए कि मेरे शब्द दूर से ही इवान मातीयीविच को सुनाई दे जायेंगे और उनके स्वप्रेम को और बढ़ा देंगे, मैं जोर से चिल्लाया।

- स्वस्थ और ठीक हूँ, वो उत्तर दिए ऐसा लग रहा था जैसे मुझसे बहुत दूर हो या किसी पलंग के नीचे हो, जबकि मैं उनके बिल्कुल समीप खड़ा था, स्वस्थ और सही हूँ, लेकिन इसके बारे में बाद में बात करते हैं... क्या हाल है?

मैंने जान बूझकर उनकी बातों को अनसुना करके खुद उनसे पूछताछ करने लगा कि वो कैसे हैं, मगर के भीतर सब कैसा है और सच में मगरमच्छ के अंदर कैसा है? इसके लिए बहुत ही हित-बुद्धि और भद्रता की अपेक्षा थी। लेकिन वो असंतुष्ट और दुखी होकर बीच में बोल पड़े।

- क्या हाल है? वो हमेशा की तरह अपनी कर्कश एवं बहुत ही भद्दी आवाज़ में मेरे ऊपर बरस पड़े।

मैंने तिमोफेई सिम्योनोविच के साथ हुए अपने सारे वार्तालाप का वृतांत उन्हें सुना दिया। पूरा वृतांत सुनाते हुए मैंने अपने लहज़े को असन्तोषपूर्ण रखने की कोशिश की।

- बुजुर्ग सही है, इवान मतवेयेविच ने फैसला कर लिया जैसे वो हमेशा की तरह मुझसे बातचीत करने के दौरान करते थे। व्यावहारिक लोग मुझे पसंद हैं और चिकनी चुपड़ी बातें करने वालो को मैं पसंद नहीं करता। -मैं ये मानने के लिए तैयार हूँ कि तुम्हारा प्रशिक्षण का प्रस्ताव बिल्कुल अनुचित नहीं है।- वास्तव में मैं यहाँ से काफी कुछ वैज्ञानिक और नैतिक सूचनाओं को बता सकता हूँ। लेकिन अब ये सब एक नया और अलग रूप लेगा और सिर्फ वेतन के लिए इतनी परेशानी उठाने की जरूरत नहीं है। ध्यान से मेरी बात सुनो। - तुम बैठे हो?

- नहीं, खड़ा हूँ।

- बैठ जाओ कहीं, फर्श पर ही बैठ जाओ और ध्यान से सुनो।

मैंने गुस्से में कुर्सी लिया और फर्श पर धड़ाम से पटक दिया।

- सुनो, कड़कती आवाज़ में उन्होंने बोलना शुरू किया, - आज जनता कोठरी में खचाखच भरी हुयी थी। शाम तक जगह बाकि नहीं थी और नियंत्रण के लिए पुलिस आयी थी। शाम को आठ बजे यानी समय से पहले ही मालिक को दुकान बंद करना उचित लगा और प्रदर्शनी को भी उसने रोक दिया ताकि इकठ्ठा किये हुए पैसों की गिनती कर सके और कल की तैयारी कर पाए। मैं जानता हूँ कि कल फिर पूरा मेला इकठ्ठा होगा।और इसलिए ये अनुमान लगा सकते हैं कि राजधानी के सारे सुशिक्षित लोग, बड़े खानदान की महिलाएं, विदेशी राजदूत, वकील और दूसरे लोग यहाँ आए।

और इतना ही नहीं अद्भुत साम्राज्य के विभिन्न राज्यों से लोग यहाँ आएंगे। इसके परिणाम स्वरूप मैं तो सबके सामने रहूँगा, छुपा हुआ ही सही लेकिन मैं अगुआई करूँगा। गुणगान करती हुयी भीड़ को मैं ज्ञान दूंगा। अपने सीखे हुए अनुभव से नियति के सामने महानता और विनम्रता की मिसाल बनूँगा। - मैं,एक प्रकार से एक विभाग बन जाऊंगा, जहाँ से मानव जाति को शिक्षा दूंगा। और इससे भी काफी महत्वपूर्ण है कि मैं सिर्फ प्राकृतिक विज्ञान की जानकारी इस विचित्र प्राणी के अंदर रहते हुए दे सकता हूँ। और

इसलिए मैं इस दम घुटने वाली दुर्घटना से बिल्कुल आहत नहीं हूँ बल्कि मैं एक उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

- क्या ये सब उबाऊं नहीं है?- मैंने जहरीले रूप मेंध्यान दिया।

और सबसे ज्यादा मुझे इस बात से चिढ आ रही थी कि उन्होंने पुरुषवाचक सर्वनाम का इस्तेमाल लगभग बंद कर दिया था। इस हद तक वो अपने आप की महत्ता समझ रहे थे। इसके अतिरिक्त इन सारी बातों ने मुझे उलझन में डाल दिया। "यह विचारशून्य दिमाग क्या बकवास कर रहा है! मैं दाँत पीसते हुए बड़बड़ाया। - यहाँ रोना चाहिए अकड़ना नहीं चाहिए "

- नहीं, उन्होंने मेरे विचार पर कड़े शब्दों में उत्तर दिया,

- क्योंकि मैं महान विचारों से भरा हूँ, अब मैं सिर्फ आराम करते हुए ही मानव जाति के विकास के बारे में सोच सकता हूँ, अब मगर के अंदर से सिर्फ सत्य और बोध ही बाहर आएंगे।- निस्संदेह मैं स्वयं एक अर्थव्यवस्था से सम्बंधित नया सिद्धांत इज़ाद करूँगा और इस पर गर्व करूँगा, जो अब तक मैं कार्य से छुट्टी नहीं मिलने के कारण और कुत्सित मौज़ की वजह से नहीं कर पाया। मैं सब खंडित कर दूंगा और नया फुरियर बन जाऊंगा। बहरहाल तुमने ७ रूबल तिमोफेई सेम्योनोविच को दे दिए?

- हाँ, ये दर्शाते हुए कि मैंने अपने पैसों में से उन्हें दिया, मैंने खुद दे दिया, मैंने कहा

- हिसाब कर लेंगे, वो बड़प्पन दिखाते हुआ बोलें। - मैं वेतनवृद्धि का अवश्यमेव इंतज़ार कर रहा हूँ, क्योंकि किसका वेतन वृद्धि करेंगे, मेरा छोड़कर? मै बहुत काम आ सकता हूँ। हाँ, अब काम की बात। मेरी पत्नी?

- तुम शायद एलेना इवानोव्ना के बारे में पूछ रहे हो?

- पत्नी?! वो इस बार चीखते हुए बोले। कुछ नहीं कर सकते थे!

शांति से लेकिन दाँत पीसते हुए मैंने बताया कि कैसे एलेना इवानोव्ना को गंतव्य स्थान तक पहुँचा आया हूँ। वो ये बात पूरी तरह सुना भी नहीं।

- मैं उसे अलग तरह से देखता हूँ,उसने आतुरतापूर्वक कहा। - अगर मैं यहाँ प्रसिद्ध हो गया, तो चाहता हूँ कि वह वहाँ प्रसिद्ध हो जाये। वैज्ञानिक, कवि,दार्शनिक, विदेशी मिनेरोलॉजिस्ट, सरकारी कर्मचारी सुबह की मेरे साथ बैठक के बाद शाम को उसकी संगोष्ठी में जायेंगे, और आनेवाले सप्ताह से संगोष्ठी हर शाम होनी चाहिए। दुगुनी तनख्वाह हमें मेजबानी के लिए धन देगा और क्योंकि मेजबानी के लिए सिर्फ चाय और कुछ नौकर तक ठीक है, तो फिर सारी व्यवस्था अच्छी है।और यहाँ और वहाँ मेरे बारे में लोग बातें करेंगे। इस दिन का मैं बहुत समय से इंतज़ार कर रहा था कि लोग मेरे बारे में बातें करे,लेकिन कभी ये पूरा नहीं हुआ, किसी ने ज्यादा तरजीह नहीं दी और न ही कोई प्रतिष्ठित पद मिला। और अब ये सब एक साधारण मगरमच्छ के निगल जाने से मुझे मिल गया है। मेरा हर एक शब्द लोग ध्यान से सुनेंगे, हर एक भाषण पर चिंतन करेंगे, एक दूसरे को बताएँगे और प्रकाशित करेंगे। और मैं लोगों द्वारा पहचाना जाने लगूंगा। लोग अंततः समझ जायेंगे कि कैसी प्रतिभा है जिसने मुझे इस विचित्र प्राणी के भीतर विलुप्त कर दिया।

"ये आदमी विदेश मंत्री बन सकता था और राज्य को संभाल सकता है ", कुछ लोग बोलेंगे। -और मैं कैसे, कैसे किसी गारण्यो, पझेसिशकी या किसी और से निकृष्टतर हूँ? .....मेरी पत्नी मेरे साये की तरह होनी चहिये। - मेरे पास प्रज्ञता है, उसके पास रूप और स्नेह है। "वो बहुत सुन्दर है, तभी उसकी पत्नी है "।- कुछ कहेंगे। "वो बहुत सुन्दर है, क्योंकि उसकी पत्नी है ", दूसरे सुधारेंगे। कल किसी हाल में एलेना इवानोव्ना को विश्वकोष खरीदने दो जो अन्द्रेई क्राएव्स्की के प्रकाशन में छपा है ताकि उसे सारे विषयों के बारे में बोलना आ जाये। ज्यादातर उसे प्रीमियर-पोलीटिक पढ़ने दो " सेंट पीटर्सबर्ग समाचार से " प्रतिदिन " वोलोस" पर एक नज़र डाल ले।मैं आशा करता हूँ कि मालिक

कभी-कभी मुझे मगर के साथ अपनी पत्नी के भव्य संगोष्ठी में ले जाने के लिए सहमत हो जायेगा। मैं बक्से में खड़ा रहूँगा वैभवशाली बैठक कक्ष के बीच में। -सरकारी कर्मचारी को अपने प्रोजेक्ट के बारे में बताऊंगा, कवियों के साथ तुकबंदी में बात करूँगा, औरतों के साथ दिलचस्प बातें करूँगा और विनम्र रहूँगा, क्योंकि मैं उनके पतियों के लिए कोई खतरा नहीं हूँ। और बाकि सबके लिए मैं भाग्य को और ईश्वर की मर्ज़ी को सर्वोपरि मानने वाला उदाहरण पेश करूँगा। - अपनी पत्नी को मैं प्रतिभाशाली साहित्यिक महिला बनाऊंगा,मैं उसे आगे बढ़ाऊंगा और उसके बारे में जनता को बताऊंगा कि मेरी पत्नी कैसी है, मेरी पत्नी के रूप में उसे प्रतिभापूर्ण होना चाहिए और यदि अन्द्रेई अलेक्सांद्रोविच को रूसी अल्फ्रेड दे म्यूसे बुलाना सही है तो और भी सही होगा यदि उसे (मेरी पत्नी) रूसी एवगेनिया तुर बुलाया जायेगा।

मैं ये मानता हूँ कि सारा खेल हमेशा की तरह इवान मतवेयेविच को कुछ कुछ जंच रहा था,जबकि मेरे दिमाग में एक बात आयी कि उसे अभी बुखार है और वह भ्रांतिमूलक है। ये वही साधारण इवान मतवेयेविच थे, जिन्हे शीशे के अंदर देखा जा रहा था वो भी बीस गुना बड़े आकार में।- मेरे दोस्त, मैंने उससे पूछा, - क्या तुम आशा करते हो कि अमर हो? और वैसे भी बताओ : क्या तुम स्वस्थ हो? तुम कैसे खा रहे हो, कैसे सो रहे हो, कैसे साँस ले रहे हो? मै तुम्हारा मित्र हूँ और यह बात तो तुम भी मानोगे कि यह घटना विचित्र है और इसलिए मेरी जिज्ञासा काफी स्वाभाविक है।

- यह जिज्ञासा निष्क्रिय है बस और कुछ नहीं, वो संवेदनशील होते हुए उत्तर दिए, - लेकिन तुम संतुष्ट हो जाओगे। - तुम पूछ रहे हो कि मैं यहाँ इस विचित्र प्राणी के अंदर कैसे रह रहा हूँ? सबसे पहले तो मैं देखकर दंग रह गया कि मगरमच्छ एकदम ही खाली था। जैसे उसका भीतरी हिस्सा विशालकाय खाली रबड़ की पोटली से बना हो, एक प्रकार के ऐसे रबड़ से जो हमारे यहाँ गोरोखोवाया, मोरस्काया और यदि मैं गलत नहीं

हूँ तो वज़निसेंसकी प्रोस्पेक्ट पर फैला हुआ है /ये सोचो अन्यथा,क्या मैं यहाँ अंदर समां सकता था?

- क्या ये संभव है? मैं जाहिर से आश्चर्य में चिल्लाया।

- क्या सच में मगर बिल्कुल खाली है? - बिल्कुल खाली, काफी कड़क आवाज़ में इवान मातीयीविच ने जोर देकर कहा। - और शायद यह संभव है कि उसे कुदरत ने बनाया ही ऐसा है। मगरमच्छ का स्वभावतः सिर्फ मुँह होता है जिसके अंदर नुकीले दाँत होते हैं। इसके अलावा काफी लम्बी पूंछ होती है बस। और दोनों अंतिम भाग के बीच में खाली जगह होता है जो रबर जैसे किसी चीज़ का बना होता है संभवतः वो रबर ही है।

-और पसली की हड्डी, पेट, आंत, यकृत और हृदय? मैं बीच में क्रोधित होकर बोल पड़ा।

- कुछ नहीं, यह सब कुछ नहीं है और शायद कभी था भी नहीं। - ये सब अनुपयुक्त कपोल कल्पना है अल्हड मुसाफिरों की। जैसे हेमोरोइडल तकिये को फुलाते है ठीक वैसे ही मैं अपने आप से इस मगरमच्छ को फुलाता हूँ। वह काफी फ़ैल जाता है,वैसे तुम भी एक पारिवारिक मित्र की हैसियत से मेरे बगल में यहाँ समां सकते हो, अगर तुम में उदारता हो, और तुम्हारे यहाँ आने के बाद भी कुछ जगह बच जाता। - मैं तो सोच रहा हूँ कि आपात स्थिति में एलेना इवानोव्ना को भी यही बुला लूँ। इसके अलावा मगरमच्छ के अंदर की खाली जगह की जो संरचना है पूरी तरह से प्राकृतिक विज्ञान के अनुसार उपयुक्त है। - ये सोचो कि अगर तुम्हे कोई नया मगरमच्छ बनाना हो तो, तुम्हारे मन में जाहिर सी बात है यह सवाल आएगा, मगरमच्छ का मूलभूत स्वभाव/ गुण क्या है? उत्तर स्पष्ट है: लोगों को निगलना। उस की संरचना कैसी हो कि वो लोगों को निगल पाए? उत्तर और भी स्पष्ट है: उसे बिल्कुल खाली तैयार करके। बहुत समय पहले ही भौतिक विज्ञान के अनुसार यह हल निकल चुका था कि प्रकृति शून्यता को बर्दाश्त नहीं करती है। ठीक उसी प्रकार मगरमच्छ का भीतरी हिस्सा रिक्त होना चाहिए, ताकि वो

खाली न रहे और परिणामस्वरूप लगातार वह सभी को निगलता रहे जो उसके नज़दीक आए। और यही सिर्फ एक उचित कारण है जिससे सारे मगरमच्छ हमारे भाइयों को निगल रहे हैं। मानव संरचना इस तरह की नहीं है: जितना ही खाली, उदाहरण के तौर पर, इंसान का सिर होगा, उतनी ही कम उसे तृष्णा होगी उसे भरने की और ये जनसाधारण के द्वारा बनाये गए नियमों में इकलौता अपवाद है। और ये सब अब मुझे बिलकुल साफ दिन की तरह नज़र आ रहा है और ये सब मैं अपनी बुद्धिमता से, अपने अनुभव से,एक प्रकार से प्रकृति की गोद में उसके आंतरिक स्पंदन को सुनते हुए,समझ पाया। यहाँ तक कि शब्द - लोलुपता मुझसे सहमत है क्योंकि यह नाम ही "क्राकाज़ील"का मतलब है अतिपूर्ण। मगरमच्छ - यह एक शब्द है, स्पष्ट है कि यह आधुनिक इतालवी भाषा है, हो सकता है कि प्राचीन फराओ की मिस्री भाषा हो और निस्संदेह फ्रेंच भाषा के मूलशब्द croquer से उत्पन्न हुआ हो जिसका मतलब होता है खाना खाना, चबाना या आमतौर पर खाने में उपयोग लाना। और ये सारी बातें मैं अपने पहले व्याख्यान में एलेना इवानोव्ना की संगोष्ठी में आये हुए जनता के समक्ष पेश करने का इरादा रखता हूँ जब मुझे वहां संदूक में ले जाया जायेगा।

- मेरे मित्र, क्या तुम्हे अभी विरेचक औषधि नहीं लेनी चाहिए! मैं अनजाने में भयभीत होकर चिल्ला पड़ा:"उसे बुखार है, बुखार, वो बुखार से तप रहा है!" मैं खुद से इन शब्दों को घबराहट में दुहराता रहा।

- क्या अनाप सनाप बक रहे हो! वो घृणापूर्वक बोलें,- इसके अतिरिक्त अभी इस हालत में यह बिल्कुल अयोग्य है। इसके अलावा मैं जान रहा था कि तुम विरेचक औषधि के बारे में बात कर रहे हो।

- और मेरे दोस्त, तुम कैसे .... तुम कैसे खा रहे हो? तुमने आज जलपान किया या नहीं?

- मेरा पेट काफी भरा हुआ है और संभवतः अब मैं कभी खाना नहीं खाऊंगा। -और यह भी पूर्णतः स्पष्ट है, अपने द्वारा मगरमच्छ को पूरी तरह से भर दिया हुआ और इस प्रकार उसका पेट हमेशा भरा रहेगा। अपितु,वह वास्तव में अपने शरीर का जीवन रस मुझे दे देगा, ये उसी प्रकार है जैसे कुछ नाज़ुक गंडास्थि अपने आप को और अपनी संरचनाओं को चर्बीदार कटलेट से घेरे हुए रहता है फिर बाद में सुबह सुबह नहाकर बिलकुल तारो ताज़ा, छाया-युक्त,नरम और आकर्षित हो जाता है।

इसलिए जिस तरह मैं मगरमच्छ के लिए आहार हूँ, मुझे भी उससे खुद के लिए भोजन मिल जाता है; अतः हम पारस्परिक रूप से एक दूसरे के लिए आहार हैं। लेकिन जैसा कि मगरमच्छ के लिए भी ऐसे इंसान को पचाना मुश्किल है, मेरे जैसा, फलतः ये स्वाभाविक है कि उसे पेट में थोड़ा भारीपन महसूस होगा, जो कि उसका नहीं है, और इसीलिए कि मैं उसका दर्द और न बढ़ाऊ मैं एक करवट से दूसरे करवट कभी कभार पलटता हूँ, मै ऐसा कर सकता था किन्तु इंसानियत के नाते नहीं करता हूँ। यही एक खामी है जिस स्तिथि में मैं हूँ उसमें, और तिमोफेई सेम्योनोविच का मुझे प्रतीकात्मक अर्थ में " लेटे रहने वाला इंसान " बोलना तर्कसंगत है। -परन्तु मैं ये साबित कर दूंगा कि लेटे रहने के अतिरिक्त, कि सिर्फ लेटे हुए ही मैं मानव जाति का भाग्य बदल सकता हूँ। हमारे समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के सारे महान विचार और विचारधारा लेटे हुए या पड़े हुए इंसान के द्वारा ही प्रकाशित किया गया है। और इसलिए ऐसे विचारों को कैबिनेट कहते हैं,लेकिन मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।मैं अब एक पूरा सामाजिक ढांचा बनाऊंगा और तुम विश्वास नहीं करोगे कि ये कितना आसान है! सिर्फ दूर कहीं एकांत में जाना होगा किसी कोने में या मगरमच्छ के अंदर जाना होगा, आँखें बंद करो और उसी वक्त तुम पूरी मानव जाति के लिए एक स्वर्ग की रचना कर दोगे। अभी -अभी जब तुमलोग यहाँ से गए मैं उसी समय इज़ाद करने में लग गया और अब तक तीन सिंद्धांतों की रचना कर चुका हूँ और अब चौथा कर रहा हूँ। सिर्फ दूर कहीं एकांत

में जाना होगा किसी कोने में या मगरमच्छ के अंदर जाना होगा, आँखे बंद करो और उसी वक्त तुम पूरी मानव जाति के लिए एक स्वर्ग की रचना कर दोगे। अभी। यह सच है कि सबसे पहले सबको खंडन करना होगा, किन्तु मगर के भीतर बहुत आसान है खंडन करना इसके अतिरिक्त ऐसा लग रहा है कि मगरमच्छ के अंदर सब कुछ साफ दिखाई दे रहा हो। हालांकि और भी कुछ खामियां हैं मेरी इस स्थिति में,लेकिन बहुत बड़ी नहीं है: मगर के अंदर थोड़ी नमी है और ऐसा लग रहा है कि बलग़म से ढका हुआ हो, इसके अलावा रबर की तरह बदबू आती है, ठीक वैसे ही जैसे मेरी पिछले साल की उपपादुका से आती थी। बस इतना ही, और कोई कमी नहीं है।

- इवान मतवेयेविच, मैंने टोका,- ये सब कुछ बहुत अजीब है जिसके उपर मैं कदाचित ही विश्वास कर सकता हूँ। और क्या सच में तुम पूरी जिंदगी बिना खाये रहोगे?

- ये क्या बकवास कर रहे हो, लापरवाह, निष्क्रिय सिर! मैं तुम्हें इतने महान विचारों के बारे में बता रहा हूँ, जो रात को रोशन बनाते हैं और तुम... इतना जान लो कि मेरा दिमाग उन महान विचारों से भरा हुआ है जिन्हों ने मुझे घेर लिया और उस रात को जगमगा दिया। इसके उपरान्त इस विचित्र जीव के उदारहृदय मालिक ने अपनी माँ से बात करने के बाद फ़ैसला किया है कि वो रोज़ सुबह मगरमच्छ के मुँह में एक नुकीले धातु के छड़ को घुसेड़ेंगे,किसी दुदोच्का (संगीत वाद्य) की भांति जिसके ज़रिये मैं थोड़ी कॉफी या फिर सफ़ेद ब्रेड मिला हुआ बुलियन (रूसी सूप) अपने अंदर खींच लूंगा। दुदोच्का पहले से ही पड़ोस में कहीं निर्धारित किया जा चूका है, लेकिन यह अनावश्यक है और मैं आशा करता हूँ कि कम से कम हज़ार साल जिन्दा रहूँगा यदि यह सच है कि मगरमच्छ भी इतने साल तक जीवित रहते हैं, इसके बारे में तुम कल ही किसी प्राकृतिक इतिहास की किताब में जाँच कर लेना और मुझे सूचना देना, हो सकता है मैं गलत हूँ और ये तथ्य मगर नहीं किसी जीवाश्म के बारे में कही गयी हो। एक ही सोच मुझे थोड़ा परेशान कर रही है चूकि मैंने कपडे पहने हैं और मेरे पैरों में जूते हैं तो ज़ाहिर सी

बात है मगर मुझे नहीं पचा सकेगा/ और यही नहीं मैं जीवित हूँ इसलिए अपने आप को पचा जाने का पुरजोर विरोध करता हूँ, क्योंकि ज़ाहिर है मैं वो नहीं बनना चाहता,जो कोई भी खाद्य पदार्थ पाचन क्रिया के पश्चात् होती है, यह बहुत ही घृणापूर्ण होगा मेरे लिए। मुझे इस बात से डर है कि हज़ार साल में मेरा कुरता जो दुर्भाग्यवश रूसी कपडे से बना है और सड़ सकता है, तब मैं बिना कपड़ों का हो जाऊंगा और फिर मेरी नाराज़गी के बावजूद शायद मैं पचने लगूंगा जबकि दिन में मैं ऐसा नहीं होने दूंगा, लेकिन रात में जब आदमी का अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं होता, मेरे साथ भी उस आलू का छोटा टुकड़ा,रोटी का या बच्छड़े के मांस के टुकड़े के साथ होने वाली दुर्भाग्यपूर्ण घटना हो सकती है। यह विचार मुझे क्रोधोन्मत्त करता है। इस वजह से ही हमें कीमत बदलना होगा और अंग्रेजी कपड़ों के आयात में वृद्धि करना होगा जो काफी मजबूत होता है, यदि कोई मगर के अंदर गिर जाता है तो काफी लम्बे समय तक वो प्रकृति के विरुद्ध लड़ सकता है। जल्द ही मैं अपने इस विचार को किसी सरकारी कर्मचारी को बता दूंगा और इसके साथ ही पीटर्सबर्ग समाचारपत्र के किसी राजनितिक समीक्षक को भी बता दूंगा।उनको चिल्लाने दो। मैं आशा करता हूँ कि लोग सिर्फ मेरी इसी एक ही बात का अनुकरण नहीं करेंगे। मैं यह अनुमान लगा रहा हूँ कि हर सुबह उनकी पूरी मण्डली प्रकाशन दल से लैश यहाँ मुझे घेर कर खडी होगी ताकि वे कल के बारे में मेरा विचार मालूम कर सके। संक्षेप में कहूँ तो मेरा भविष्य काफी उज्ज्वल है।

- "ज़्वर, ज़्वर!" मैं फुसफुसाया।

- मेरे मित्र, और आजादी? मैंने उनका विचार जानने के इरादे से कहा। - वैसे तुम्हे,एक आदमी को इस अँधेरे में आज़ादी का आनंद उठाना चाहिए।

- तुम मूर्ख हो, उसने उत्तर दिया। - असभ्य मनुष्य अनाधीनता पसंद करते हैं, बुद्धिमान लोग अनुशासन पसंद करते हैं,पर अनुशासन नहीं है।

इवान मतवेयेविच व्याकुलता से चीखते हुए बोले, क्योंकि मैंने उन्हें बीच में टोक दिया था।

- कृपा करो!- शांत हो जाओ और सुनो, -मैं इतना कभी भी हतोत्साहित नहीं हुआ जितना अभी हूँ। मैं इस संकीर्ण शरणस्थल में एक ही बात से डर रहा हूँ, - हमारे उत्कृष्ट पत्रिकाओं और व्यंगपूर्ण समाचारपत्रों के साहित्यिक आलोचनकारो से। इस बात से डरता हूँ कि कहीं ये संकीर्ण विचार के आगंतुक, मूर्ख और द्वेषपूर्ण लोग और सामान्यरूप से ये निहिलिस्ट (शून्यवादी) मुझ पर छींटा-कसी न करने लग जाएँ। लेकिन मैं कार्यवाही करूँगा। मैं अधीरता से जनता के कल के समीक्षा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, और सबसे अहम है समाचारपत्रों का मत। समाचारपत्रों के बारे में मुझे कल ही सूचना देना।

- ठीक है, और कल ही समाचारपत्रों का एक पूरा गठ्ठा ले आऊंगा।

- समाचारपत्रों की समीक्षा की प्रतीक्षा कल करना काफी जल्दी है, क्योंकि घोषणा का ही प्रकाशन चौथे दिन होता है। लेकिन आज से हर शाम आँगन की तरफ से पीछे के रास्ते से आना।मैं तुम्हें अपना सचिव बनाना चाहता हूँ।तुम मुझे समाचारपत्र और पत्रिकाएं पढ़कर सुनाना और मैं तुम्हे अपने विचार बताऊंगा और निर्देश दूंगा। तार के बारे में खासतौर पर मत भूलना। यहाँ हर रोज़ यूरोपियन तार आना चाहिए।और तुम्हे शायद अभी नींद आ रही होगी। तुम घर जाओ और इस बारे में मत सोचो, जो मैंने अभी तुमसे आलोचकों के बारे में कहा, मैं इससे डरता नहीं हूँ क्योंकि वो खुद नाज़ुक स्थिति में है। हमें सिर्फ बुद्धिमान और दयालु होना चाहिए और फिर तुम्हारा अवश्य ही ऊँचा स्थान होगा। अगर मैं सुकरात नहीं तो दियगन तो हो ही जाऊंगा या फिर दोनो के जैसा हो सकता हूँ और यही भविष्य में मानव जाति के प्रति मेरी भूमिका होगी।

इवान मातीयीविच इन सारी बातों को मुझसे बिना सोचे विचारे और तंग करने वाले अंदाज़ में कह गए बिल्कुल उन चरित्रहीन औरतों की तरह जिनके बारे में कहावत भी

है कि वो कोई भी रहस्य छुपा नहीं सकती। और हाँ जो भी उसने मगरमच्छ के बारे में मुझे बताया था मुझे बहुत ही संदेहजनक लगा। वैसे यह कैसे संभव है कि मगरमच्छ पूर्णतः खाली था? मैं शर्त लगाता हूँ कि वह मिथ्याभिमान से अभिभूत होकर अपनी तारीफ और कुछ हद तक मेरी बेइज़्ज़ती किये जा रहे थे। सच में वह बीमार है और बीमार का ख्याल रखना जरुरी है, लेकिन मैं ईमानदारी से स्वीकार करता हूँ कि मैं कभी भी इवान मतवेयेविच को बर्दाश्त नहीं कर पाया। पूरी ज़िन्दगी, बचपन से ही मैं चाहता था लेकिन मैं उनके संरक्षण से पीछा नहीं छुड़ा पाया। हज़ारों बार मैंने उनसे अपना पीछा छुड़ाना चाहा और हर बार मुझे उनके पास आना पड़ा ऐसा लगता है मानो मैं उसके प्रत्यक्ष कुछ साबित करना चाहता हूँ ताकि वह मुझे तरजीह दे। दोस्ती अजीब ही चीज़ है!हाँ मैं ये कह सकता हूँ कि मेरी दोस्ती उसके साथ १०० में से ९० प्रतिशत डाह से हुयी थी। परन्तु इस बार हम ने एक दूसरे को भावपूर्ण विदाई दी।

- आपके मित्र बहुत बुद्धिमान है, धीमे स्वर में जर्मन बोला मुझे विदा करते हुए, वह पूरे वक्त बड़ी मसक्क्त से हमारी बाते सुनता रहा।

-और पास (टिकिट) वैसे, मैंने कहा, ताकि भूल न जाऊ।

- आप मगरमच्छ के लिए कितना लेते, इसलिए कि यदि हम आपसे उसे खरीदने का सोचे तो?

इवान मातीयीविच मेरा प्रश्न सुनकर जिज्ञासापूर्वक उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे। मुमकिन है कि वो ये चाहते हों कि जर्मन कम पैसे न ले ले, किसी भी तरह वह मेरा प्रश्न सुनकर किसी विशेष तरीके से चीखा।

पहले तो जर्मन सुनना ही नहीं चाह रहा था और क्रोधित भी हो गया।

-किसी में इतनी हिम्मत नहीं है कि मेरे मगर को खरीद ले, वह काफी तेज़ चिल्लाया और उबले हुए केकड़े कि तरह लाल हो गया। मैं मगरमच्छ नहीं बेचना चाहता। मैं दस

लाख भी नहीं लूंगा मगर के बदले। मैं आज जनता से १३० डॉलर कमाया और कल - एक लाख डॉलर कमाऊंगा और बाद में १ लाख डॉलर रोज़ कमाऊंगा। नहीं बेचना चाहता!

इवान मातीयीविच संतोषपूर्ण भाव से हँसे।

बड़े ही भारी मन से एक सच्चे मित्र का फ़र्ज़ निभाते हुए, शांति और बुद्धिमानी से, मैंने जर्मन को संकेत दिया, कि उसका हिसाब बिल्कुल सही नहीं है यदि वो हर रोज़ १ लाख कमाता है तो चार दिन में पीटर्सबर्ग के सारे लोग उसके पास होंगे और इसके बाद किसी से भी वो नहीं कमा पयेगा, कि भगवान जीवन और मृत्यु में स्वतंत्र है कि मगर समाप्त भी हो सकता है तथा इवान मातीयीविच बीमार पड़ सकते हैं और स्वर्ग भी सिधार सकते है। वगैरह,वगैरह।

जर्मन थोड़ा सोचने लगा।

- मैं उन्हें औषधालय से औषधि लेकर दूंगा - बहुत देर सोचने के बाद वो बोला

- और आपके मित्र स्वर्ग नहीं सिधारेंगे।

- अरे, औषधि को छोड़िये और ये सोचिये कि क़ानूनी प्रक्रिया भी शुरू हो सकती है। इवान मातीयीविच की अर्धांगिनी अपने पति के लिए क़ानूनी रूप से दावा कर सकती है। आप धनवान व्यक्ति बनने की कामना रखते हैं और क्या आप इलेना इवानोव्ना को कोई भत्ता देने को तैयार है?

- नहीं .....! दृढ़तापूर्वक और सख्ती से जर्मन ने कहा।

- नहीं,,,,,(न मेरेवाल...)

उसकी मां ने द्वेषपूर्ण भाव से कहा।- और बिना जाने कि आगे क्या होनेवाला है क्या ये सही नहीं होगा कि आप संयम के साथ कुछ रकम ले ले? मैं इसे जोड़ना अपना कर्तव्य समझता हूं, इसलिए इस बारे में सिर्फ जिज्ञासा वश नहीं पूछ रहा हूँ।

जर्मन माँ को लेकर दूर कोने में चला गया उन से सलाह लेने के लिए, जहाँ वो अलमारी खड़ि थी जिस के अंदर विशालकाय और बेढ़ब बन्दर था।

- देख रहे हो न!

जहाँ तक मेरा सवाल था इस समय मेरी इच्छा हुयी कि सबसे पहले तो जर्मन की बुरी तरीके से धुलाई करूँ,इसके बाद उसके माँ की पिटाई उससे भी ज्यादा करूँ और आखिरी में सबसे ज्यादा धुलाई इवान मातीयीविच की उनके अत्यंत स्वार्थपरायणता के लिए करूँ। लेकिन उस लालची जर्मन के उत्तर के सामने इन सब का कुछ मतलब नहीं था।

अपनी माँ से विचार विमर्श करने के बाद उसने अपने मगरमच्छ के लिए लॉटरी से मिले ५० हज़ार रूबल, गरोखोवाया में कंकरीट का घर और वहीँ अपना औषधालय इसके अलावा रूसी कर्नल के पद की मांग रखी।

- समझ रहे हो! अति आनन्दित होते हुए इवान मतवेयेविच ने कहा,- मैं कह रहा था न तुमसे!

इस कर्नल बनने के उन्माद भारी इच्छा के अलावा,- वह बिल्कुल सही है, क्योंकि वो बिल्कुल अच्छी तरह से अपने द्वारा दिखाये जाने वाले इस विचित्र प्राणी की कीमत समझ रहा है।

सबसे पहले आता है आर्थिक सिद्धांत!

- कृपा कीजिये! मैं आवेश में जर्मन पर चिल्लाया,- और हाँ आपको कर्नल का पद क्यों चाहिए? आपने कौन-सा वीरतापूर्ण काम किया है, कौन-सी सेवा दी है, कौन-सी जंग में आपने ख्याति प्राप्त की है? अरे वाह,क्या आप मूर्खतापूर्ण बात नहीं कर रहे है?

- मूर्खतापूर्ण! - कुपित होकर जर्मन चीखा, - नहीं, मैं बहुत बुद्धिमान हूँ और आप मूर्ख है! - मैं कर्नल का अधिकारी हूँ क्योंकि मैं मगरमच्छ की प्रदर्शनी करता हूँ और

उस के अंदर जीवित इंसान बैठा है, और रूसी मगरमच्छ की प्रदर्शनी नहीं कर सकता और उसमे जीवित इंसान बैठा है! मैं अत्यंत ही बुद्धिमान इंसान हूँ तथा मेरी हार्दिक इच्छा है कि कर्नल बनूँ।

- अच्छा ठीक है विदा दो, इवान मतवेयेविच! मैं क्रोध में तमतमाते हुए चिल्लाया और करीब- करीब मगरमच्छ की कोठरी से दूर भागा। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यदि मैं एक मिनट और यहाँ रुका तो मुझे खुद अपनी खबर नहीं होगी। इन दो मूर्खो की अस्वाभाविक उम्मीद असहनीय थी। ठंडी हवा ने मुझे तरो-ताज़ा करके थोड़ा मेरे गुस्से को शांत किया। अंततः प्रभावशाली ढंग से दोनों दिशाओं में पंद्रह बार थूकने के बाद मैं ताँगे पर बैठा, घर आया, कपड़े उतारे और बिस्तर में घुस गया। सबसे निराशाजनक बात ये थी कि मैं उनका सचिव बन गया था। अब नीरसता से हर शाम वहां मरो,एक सच्चे मित्र की भूमिका निभाने के लिए! इसके लिए मैं खुद को पीटने के लिए तैयार था और वास्तव में मोमबत्ती बुझाकर,खुद को कम्बल से ढक कर अपने आप को मुक्के से सर पर और शरीर के दूसरे भागों पर भी अनेक बार मारा। मुझे इससे थोड़ी राहत मिली और अंततः मैं काफी गहरी नींद में सो गया, क्योंकि बहुत थक गया था। रात भर मैं सपने में सिर्फ बंदरों को देखता रहा पर सुबह में मुझे सपने में एलेना इवानोव्ना दिखी ....

IV

जहाँ तक मेरा अंदाज़ा है बन्दर सपने में इसलिए आये ताकि वे मगरमच्छ की कोठरी के पास ही अलमारी में बंद थे, परन्तु एलेना इवानोव्ना का आना एक विशेष मामला है

- अग्रिम रूप से बता रहा हूँ : मैं इस महिला को प्यार करता था;,किन्तु मुझे जल्दी है मुझे देर हो रही है। - मैं गलत बोल गया: मैं उसे एक पिता की तरह प्यार करता था, न ही उससे कम न ज्यादा। मैं ऐसा कह रहा हूँ चूँकि बहुत बार मेरे मन में उसके ललाट पर या उसके मुलायम गालो पर चुम्बन लेने की प्रबल भावना उत्पन्न हुयी

है।लेकिन मैंने कभी इसे अंजाम नहीं दिया, पर मैं पछता रहा हूँ। -लेकिन मैं उसके होठों को भी चूमने के लिए इंकार नहीं करता। और सिर्फ होठों को ही क्यों दांतो को भी जो चुने हुए अच्छे मोती की तरह जब वो हंसती थी काफी सुन्दर लगते थे। वो तो आश्चर्यजनक रूप से ज्यादा हंसती थी। इवान मतवेयेविच उसे प्यार से अपनी "मधुर कोमलता" पुकारते थे- यह नाम निहायत ही तर्कसंगत और विशेषता सूचक था।ये महिला चॉकलेट की तरह थी और कुछ नहीं। अब मैं ये नहीं समझ पा रहा हूँ कि इवान मातीयीविच ने अपनी पत्नी में इवगिनिया तुर की कल्पना क्यों की? बहरहाल मेरा यह सपना यदि बन्दर को हटा दे तो मुझे काफी प्रीतिकर ढंग से प्रभावित किया और सुबह की कॉफ़ी के साथ कल की सारी घटना को श्रेणीबद्ध करते हुए मैंने काम पर जाते हुए एलेना इवानोव्ना के पास जाने का तुरंत ही फैसला किया,वाकई में मैं एक घरेलू मित्र की हैसियत से ये करने के लिए प्रतिबद्ध था।

बहुत छोटे से कमरे में, शयनकक्ष के सामने,उनके छोटे से अतिथि कक्ष में, अपितु उनका बड़ा अतिथि कक्ष भी छोटा ही था,एक छोटे और सुन्दर से सोफे पर, छोटे से चाय की मेज़ के पास, कोई सूती का पोशाक पहने हुए एलेना इवानोव्ना बैठी थी और छोटी सी प्याली से कॉफ़ी पी रही थी जिसमें एक बिस्कुट का बहुत ही छोटा टकड़ा डूबा हुआ था। वो बहुत आकर्षक लग रही थी, किन्तु मुझे प्रतीत हुआ कि वो कुछ सोच में पड़ी है।

- आह, अरे आप, शरारती इंसान! वो मुझसे बिखरी हुयी मुस्कान लिए मिली, - बैठिए, दिलफेक व्यक्ति -, हवा बह रही है,कॉफ़ी पीजिये। अच्छा, कल आपने क्या किया?

क्या आप बहुरूपी नृत्यसभा में गए थे? - सच में क्या आप वहां थे? मैं तो जाता नहीं, इसके अतिरिक्त मैं कल हमारे बंदी से मिला ....मैंने गहरी साँस ली और कॉफ़ी पीते हुए संत की भांति चेहरा बनाया।

- किसे? किस बंदी को? आह, हाँ, बिचारे! अच्छा,कैसे है वो - याद करते हैं? और जानते है .... मैं पूछना चाह रही थी .... अब तो मैं तलाक मांग सकती हूँ न?

- तलाक! - मैं घबराहट में चीखा और कॉफी गिरते गिरते बची: "ये मटमैला है!" - मैंने रोष में सोचा।

कोई मूछों वाला कलुषित रहा करता था, वह भवन-निर्माण का कार्य करता था, वो उनके यहाँ बहुधा आया करता था और एलेना इवानोव्ना को अत्यंत हँसाया करता था। मैं स्वीकार कर रहा हूँ कि मैं उसे नापसंद करता था और इस बात में कोई दो राय नहीं है कि वो कल यहां आया होगा एलेना इवानोव्ना से मिलने या फिर नृत्यसभा में, या फिर हो सकता है यहाँ और उसने अनाप सनाप बकवास किया होगा!

- और क्या, - अचानक एलेना इवानोव्ना कहने लगी, निश्चित तौर पे सिखाया गया था उन्हें, - और क्या वो वहां जिंदगी भर मगर के भीतर बैठे रहेंगे और मैं यहाँ उनकी प्रतीक्षा करती रहूंगी! पति को घर में होना चाहिए, मगरमच्छ के भीतर नहीं।

- पर ये तो आकस्मिक घटना है - मैं बहुत ही स्वाभाविक व्यग्रता से बोला।

- आह, मत कहिये, मैं ऐसा नहीं चाहती, नहीं चाहती! - वो बड़े ही आक्रोश में चिल्लाने लगी। आप हमेशा मेरे खिलाफ होते है, ऐसे अक्षम है आप! आपके साथ कुछ नहीं कर सकते, कोई राय नहीं ले सकते! मुझे अजनबी कह रहे हैं कि मुझे तलाक मिल जायेगा। कारण यह हैं कि इवान मतवेयेविच को अब भत्ता नहीं मिलेगा।

- एलेना इवानोव्ना! क्या ये आप कह रही हैं?- मैं कारुणिक ढंग से चिल्लाया। कौन सा दुष्ट इंसान ये सब आपसे कह सकता था! और हाँ इस अनुचित कारण जैसे कि भत्ता के आधार पर, तलाक साफ़ तौर पर संभव नहीं है। और बिचारे, बिचारे इवान मतवेयेविच, ऐसा लगता है कि, उस विचित्र प्राणी के अंदर भी आपके प्यार की आग में जल रहे है। इसके अतिरिक्त एक शक्कर के टुकड़े की तरह प्यार में पिघल रहे हैं। और कल ही शाम को जब आप नृत्य सभा में मौज़ कर रही थीं, वो इस बात का जिक्र कर रहे थे

कि अंततः आपको एक क़ानूनी पत्नी के तौर पर मगर के भीतर भर्ती करना पड़ेगा, क्योंकि मगरमच्छ काफी विशाल है सिर्फ दो ही नहीं बल्कि तीन लोगों के लिए भी .....

और फिर मैंने जल्दी से उन्हें इवान मतवेयेविच के साथ कल हुयी बातों का रोचक हिस्सा उन्हें सुना डाला।

- कैसे, कैसे! - वह आश्चर्यपूर्वक चिल्लाने लगी - आप चाहते हैं कि मैं भी इवान मतवेयेविच के पास वहां अंदर चली जाऊ? क्या कपोल कल्पना है! और हाँ मैं कैसे अंदर जाउंगी टोपी में या फिर पेटीकोट में? हे भगवान, कितनी मूर्खता है! और कौन सी मुद्रा में रहूंगी!

जब अंदर जाउंगी और शायद मुझे कोई देखेगा ....यह हास्यास्पद है! और मैं वहां क्या खाउंगी? और ..... और कैसे मैं वहां रहूंगी,कब .....आह हे भगवान, ये कैसी कपोल कल्पना है!.... और वहां पर मनोरंजन के लिए क्या है?..... आप कह रहे हैं कि वहां रबर जैसी बदबू है? और मैं वहां कैसे रहूंगी अगर हम एक दूसरे से झगड़ा करेंगे,--- इसके बावजूद पास में ही पड़े रहो? छी, यह कितना घृणास्पद है!

- मैं आपके सारे तर्कों से सहमत हूँ, प्यारी एलेना इवानोव्ना, मैं साफ ज़ाहिर होने वाली अतिशयोक्ति के साथ बीच में बोल पड़ा, जो इंसान हमेशा करता है जब वो ये महसूस करता है कि सत्यता उसके पक्ष में है, - लेकिन आप एक बात का महत्व नहीं दे रही, आपने उस बात का अहमियत नहीं दिया, वो आपके बिना नहीं जी सकते इसलिए तो वहां बुला रहे हैं, इसका अभिप्राय है प्यार, भावुक प्यार,विश्वासपूर्ण प्यार,कोशिशपूर्ण ..... आपने प्यार को अहमियत नहीं दी,प्यारी एलेना इवानोव्ना,प्यार!

- मैं नहीं चाहती, नहीं चाहती और कुछ भी सुनना नहीं चाहती! उसने अपने छोटे और सुन्दर हांथो को हिलाया जिस पर धुले हुए और साफ सुथरे गुलाबी रंग से रँगे हुए नाख़ून चमक रहे थे।- घृणास्पद! आप मुझे रुलायेंगे। यदि आपको अच्छा लग रहा है तो खुद

ही अंदर चले जाइये।आप भी तो उनके मित्र है, और उनके साथ उनके पास प्यार से रहिएगा और सारी उम्र किसी अरुचिकर विज्ञान के बारे में वाद विवाद कीजियेगा।

- बेकार में आप इन धारणाओं पर हंस रही हैं, - महत्ता के साथ मैंने संकीर्ण विचारों वाली महिला को रोका। - इवान मातीयीविच ने इसके बिना ही मुझे वहां बुलाया। वास्तव में आपका जाना वहां फ़र्ज़ है और मेरा सिर्फ बड़प्पन,किन्तु कल मगरमच्छ की लम्बाई-चौड़ाई की बातें करते हुए इवान मतवेयेविच ने काफी स्पष्ट संकेत दिया कि सिर्फ आप दोनों ही नहीं बल्कि मैं भी एक घरेलू मित्र की हैसियत से वहां आपके साथ रह सकता हूँ, हम तीन, विशेषकर यदि मैं ऐसा चाहता हूँ,और इसलिए .....

- ऐसा कैसे, हम तीन? - एलेना इवानोव्ना आश्चर्यचकित होकर मुझे देखते हुए बोली। अच्छा ऐसे कैसे हम... हम तीन और वहां एक साथ होंगे? हा, हा, हा! आप दोनों कितने मूर्ख हैं! हा, हा, हा! मैं आप लोगों को हमेशा जान बूझ कर चिकोटी काटूंगी, कमअक्ल इंसान, हा, हा, हा! हा, हा, हा!

और वो सोफे पर झुक कर काफी जोर जोर से हंसी। -सब कुछ, आंसू, हंसी, इतना आकर्षक था कि मैं खुद को रोक नहीं पाया और उसका हाँथ चूमने लगा और उसने भी विरोध नहीं किया किन्तु मुझे कान की तरफ से धीमे से धक्का दिया।

इसके बाद हमने खूब मज़े किये, और मैंने विस्तापूर्वक इवान मातीयीविच की सारी योजना सुनायी। शाम को जनता के साथ संगोष्ठी की योजना उसे बहुत अच्छी लगी।

- लेकिन मुझे बहुत सारे लहंगे चाहिए होंगे, वो बोली - और इसलिए यह आवश्यक है कि इवान मातीयीविच जितनी जल्दी हो सके और जितना ज्यादा हो सके भत्ता भेज दे .... किन्तु ..किन्तु ये कैसे होगा, वो फिर से सोच कर बोली। - उन्हें यहाँ मेरे पास संदूक में लेकर कैसे आएंगे? ये बहुत हास्यास्पद है। मैं नहीं चाहती हूँ कि मेरे पति को

संदूक में लेकर आये। मुझे अतिथियों के सामने बहुत शर्मिंदा होना पड़ेगा .. मैं नहीं चाहती हूँ, नहीं, नहीं चाहती हूँ।

- बहरहाल, इससे पहले कि मैं भूल जाऊ, क्या तिमोफेई सेम्योनिच यहाँ आये थे?

- आह, आये थे, सांत्वना देने आये थे और जरा सोचिये, हम पुरे समय सिर्फ तुरुप का पत्ता खेल रहे थे। वो मेरे हार जाने के बावजूद भी।

- वो मेरा हाँथ चूम रहे थे।ऐसे शरारती है वो और लगभग मेरे साथ नृत्यसभा में जाने के लिए तैयार थे। सच!

- शौक! - मैंने कहा, - और हाँ कौन आपको पसंद नहीं करेगा, मोहक महिला!

- अरे, आप अपनी तारीफे अपने पास रखिये!

- जरा ठहरिये मैं आपको रास्ते में कैसे चिकोटी काटती हूँ। मैंने बहुत अच्छे से चिकोटी काटना सीख लिया है। और, क्या! हाँ, बहरहाल, आप कह रहे थे की इवान मतवेयेविच ज्यादातर मेरे बारे में बात कर रहे थे?

- नहीं, ऐसा नहीं है कि बहुत ज्यादा ..... आपके सामने अंगीकार करता हूँ कि अब वो ज्यादातर सारी मानव जाति के भविष्य के बारे में सोचते हैं और चाहते हैं.....

- अरे ठीक है उन्हें जाने दीजिये! ये मानिये आप! सच में, नीरसता बहुत है। मैं किसी भी तरह उनसे मिलूंगी। कल निश्चित तौर पे जाऊंगी। लेकिन आज नहीं, सिर में बहुत दर्द है, इसके अतिरिक्त वहां इतने सारे लोग होंगे .... लोग कहेंगे ये उसकी पत्नी है और शर्मिंदा करेंगे .... शाम में तो आप ... वहां?

- उसके पास, उसके पास। उन्होंने समाचारपत्र लेकर जाने के लिए आदेश दिया है।

-फिर तो अच्छा है। उनके पास जाइये और पढ़िए। और आज मेरे यहाँ मत आइयेगा।मैं बीमार हूँ और हो सकता है किसी अतिथि के यहाँ जाऊ। ठीक है, विदा दीजिये, नटखट इंसान।

- " यह कलुषित इंसान इसके यहाँ शाम को आएगा ", मैंने मन में सोचा।

ऑफिस में मैंने स्वाभाविक है, ज़ाहिर नहीं होने दिया कि मुझे कोई चिंता या परेशानी है। लेकिन शीघ्र ही मैंने देखा कि कुछ हमारे प्रगतिवादी समाचारपत्र काफी सुबह मेरे सहकर्मियों के हाँथ में थे और वे उन्हें काफी संवेदनशील भावाभिव्यक्ति से पढ़ रहे थे। पहला जो मेरे हाँथ लगा वो था "लिस्तोक" समाचारपत्र बिना किसी विशिष्ट विचारधारा के,ऐसे तो वो मानवतावादी था जिसके लिए हमारे यहाँ वह तिरस्कृत थी। परन्तु सभी उसे पढ़ते भी थे। आश्चर्यरहित मैंने ये पढ़ा:

"कल हमारी विशालकाय और अद्भुत इमारतों से अलंकृत राजधानी में आश्चर्यजनक अफवाह फ़ैल गयी। कोई न प्रसिद्ध उच्चबर्गीय गैस्ट्रोनॉमिस्ट, शायद बोरेलया के खाने से तंग आकर, पसाझ पहुंचे, जहा विशालकाय, विदेश से राजधानी में लाया हुआ मगरमच्छ दिखाया जा रहा है और तकाज़ा किया कि उन्हें खाने में उसे परोसा जाये।मालिक से बात करने के बाद, वह फ़ौरन जीवित रूप में ही, जेब में रखनेवाले चाकू से उसके रसदार टुकड़ें करके और अधिक तेज़ी से निगलते हुए उसे खाने बैठ गया (अर्थात मालिक को नहीं, काफी शांत और सतर्क जर्मन, बल्कि उसके मगरमच्छ को)। यथाक्रम पूरा मगरमच्छ उनके स्थूलकाय पेट में गायब हो गया, और अब वो नेवले, मगरमच्छ के विश्वसनीय साथी को खाने के लिए तैयार थे कदाचित अनुमान लगाते हुए कि ये भी उतना ही स्वादिष्ट होगा। हम इस नए उत्पाद के बिल्कुल खिलाफ नहीं हैं जिससे विदेशी गस्ट्रोनॉमिस्ट परिचित है।बल्कि हमने ये भविष्यवाणी पहले की थी। अंग्रेजी लार्ड और पर्यटक तो मिश्र में मगरमच्छ को थोक में पकड़ते हैं और उसके मेरुदंड से बीफस्टीक बनाते हैं जिसे वो सरसों की चटनी, प्याज और आलू के साथ खाते है।

लिसेप्स से आये हुए फ़्रांसिसी पंजे को वरीयता देते हैं जो गर्म सॉस में सका हुआ रहता है जो इन्हे अंग्रेजी बना देता है, जो उनके उनका उपहास करते हैं। मुमकिन है कि हमारे यहाँ दोनों को वरीयता दी जाती है। हमारी तरफ से हम व्यवसाय कि इस नई शाखा से खुश है, जिसकी हमारे देश में विशेषतः अधिकता नहीं है। इस पहले पीटर्सबर्ग के गैस्ट्रोनॉमिस्ट के उदर में तिरोहित मगरमच्छ के पश्चात्, मुमकिन है कि एक वर्ष के अंदर ही उन्हें सैकड़ो की संख्या में यहाँ लाया जाये।और क्यों नहीं हम रूस में ही मगरमच्छ का पर्यनुकूलन कर दे? अगर नेवा का पानी इन परदेसियों केलिए अत्यंत ठंडा है तो राजधानी में तालाब हैं, और नागरोपरांत छोटी नदियाँ और झील हैं।उदाहरणत: मगरमच्छो को पर्गोलोव, पाव्लोव्स्क में, मास्को के प्रेस्नेंस्की तालाब में और समोतेका में क्यों नहीं लाया जा सकता? हमारे प्रबुद्ध गैस्ट्रोनॉमिस्ट को अच्छा और लाभदायक भोजन देकर, उसके साथ - साथ वे वहां सैर करती हुयी महिलाओं को आनंदित कर सकते हैं और बच्चों को प्रकृति विज्ञान की शिक्षा देते। मगरमच्छ के चमड़े से डिब्बा, संदूक, सिगरेट क कागज़, कागज़ बनाया जा सकता था...हमें उम्मीद है कि इस विषय पर हम फिर से आएंगे'।

यधपी हमने इस बारे में पूर्वानुमान किया था, इसके बावजूद भी लापरवाही से छापे गए समाचार ने मुझे भ्रमित कर दिया। अपना विचार साझा करने के लिए किसी को न पाकर मैंने अपने सामने बैठे प्रोखोर सविच को सम्बोधित किया और देखा कि वो पहले से ही मुझे आंखें उठाये मेरी तरफ देख रहे थे और हाँथ में "वोलोस" लिए थे जैसे मुझे देना चाहते हो।चुप चाप उन्होंने मुझसे "लिस्तोक" ले लिया और मुझे "वलोस" दे दिया और दृढ़तापूर्वक एक लेख को नाखूनों से रेखांकित किया जिस पर शायद वो मेरा ध्यान खींचना चाहते थे। ये हमारे प्रोखोर सविच कुछ अजीब इंसान थे, शांत, वृद्ध अविवाहित पुरुष और हम में से किसी के साथ उनका कोई मित्रता नही थी, वो शायद ही किसी से भी ऑफिस में बात करते थे,हमेशा और हर चीज़ के बारे में उनकी अपनी

राय होती थी किन्तु यदि उन्हें कोई कुछ बताता या सूचना देता तो बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।अकेले रहते थे। उनके फ्लैट पर हम में से कोई नहीं गया था।

मैंने समाचार पत्र "वलोसा" में दिखाए गए लेख में ये पढ़ा: "सभी को ज्ञात है कि हम प्रगतिशील और मानवतावादी हैं और हम इसमें यूरोप को पीछे करना चाहते है। यद्द्पि हमारे सभी रूढ़िवादि समाचार पत्र के प्रयास के बावजूद हमने अभी तक कोई प्रगति नहीं की है ", और इस बात का प्रमाण कल पसाझ में घटने वाली अपमानजनक घटना देती है जिसके बारे में हमने पहले ही पूर्वानुमान लगाया था। राजधानी में एक विदेशी मालिक आता है और अपने साथ एक मगरमच्छ लाता है जिसे वो पसाझ में जनता को दिखाने लगता है। हमने उसी वक्त व्यापार की नयी शाखा को सहर्ष स्वीकार कर लिया था,जिसकी हमारे शक्तिशाली और विविभदतापूर्ण देश में बहुलता नहीं है। कल अकस्मात् ही दिन के साढ़े चार बजे विदेशी-मालिक की दुकान में कोई असाधारण मोटा-ताज़ा आता है, मादक अवस्था में टिकिट खरीदता है और उसी वक्त बिना किसी अग्रिम सूचना के मगरमच्छ के मुँह में घुस जाता है जो स्वाभाविक है कि उसे निगलने को मज़बूर था, कदाचित अपनी आत्मरक्षा के लिए ताकि उसका दम न घुटे। मगरमच्छ के अंदर जबरदस्ती घुंसकर अपरिचित व्यक्ति उसी वक्त सो जाता है। ना ही विदेशी मालिक की चिल्लाहट, ना उसके डरे हुए परिवार की चीख, ना पुलिस के पास जाने की धमकी, इनमे से कुछ भी उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं डालती हैं। मगरमच्छ के अंदर से सिर्फ खिलखिलाहट और डंडे से पीटने की आवाज़ आ रही थी, और बेचारा स्तनपायी जो इतने बड़े वजन को निगलने के लिए मज़बूर था व्यर्थ आंसू बहा रहा था। यह बिन बुलाया मेहमान ततार से भी बदतर है,इस कहावत के अतिरिक्त भी, ढीठ मेहमान घर से निकलना नहीं चाहता। हम नहीं जानते कि कैसे इतनी बर्बरतापूर्ण घटना की व्याख्या करें जो हमारे पिछड़ेपन को ज़ाहिर करती है और हमारी छवि को विदेशियों के सामने धुल-धूसरित करती है। अतिरंजित रूसी फितरत को उसकी सही जगह मिल गयी थी। लोग पूछ रहे हैं क्या चहिये था इस बिन बुलाये दर्शक को? गर्म और आरामदायक फ्लैट

उपलब्ध हैं, जिस के अंदर नेवा का पानी आता है और सोपान-मार्ग को गैस से प्रज्ज्वलित किया हुआ है,ज्यादात मालिक इनमे द्वारपाल भी रखते हैं। हम अपने पाठकों को बताना चाहते हैं तथा साथ ही पालतू जानवरों के साथ ऐसे बर्बरतापूर्ण व्यवहार पर भी पाठकों से ध्यान देने का निवेदन करते हैं: परदेसी मगरमच्छ के लिए ज़ाहिर है इतने बड़े वजनदार व्यक्ति को पचाना बहुत मुश्किल है और अब वो एक पहाड़ की तरह असह्य पीड़ा में मृत्यु के इंतज़ार में है। बहुत पहले से ही यूरोप में जानवरो के साथ अमानवीय व्यवहार करनेवाले के विरुद्ध लोग अदालत चले जाते है।परन्तु यूरोप के प्रकाश,यूरोपीय पगडंडियाँ, यूरोपीय मकानों के अतिरिक्त, हमने अपने द्वारा पोषित अन्धविश्वास को पीछे नहीं छोड़ा है।

मकान नए हैं, किन्तु अन्धविश्वास पुराने हैं.....

और शायद घर तो नए नहीं हैं,कम से सीढ़ियां तो हैं। हमने अपने समाचारपत्र में कई बार जिक्र किया है कि पीटर्सबर्ग की तरफ व्यापारी लुक्यानोव के घर में लकड़ी से बनी हुयी सीढियाँ सड़ी हुई हैं और उनके घर में काम करने वाली सिपाही की बीवी अफ़िमिया स्कापिदारोवा के लिए खतरनाक है जो प्रायः हाथ में पानी लेकर या लकड़ी के टुकड़े लेकर सीढ़ियों पर चलती है। अंततः हमारा पूर्वानुमान सही साबित हुआ: कल शाम साढ़े नौ बजे अफ़िमिया स्कापिदारोवा सुप की प्याली हाँथ में लिए हुए गिर पड़ी और उनका पैर टूट गया। परन्तु हम ये नहीं जानते कि अभी भी लुक्यानोव अपनी सीढ़ियों की मरम्मत करवाएंगे या नहीं ;रूसी व्यक्ति के पीछे का दिमाग तेज़ होता है, और इसकी पीड़िता को अस्पताल लाया जा चुका है। इसी तरह हम यह दावा करते हुए नहीं थकते है कि वीबोर्ग्सकाया के लकड़ी से बने पगडंडियों पर साफ सफाई करते हुए द्वारपालों को पथिकों के जूते मैले नहीं करने चाहिए बल्कि कूड़े को एक जगह इकठ्ठा करना चाहिए जैसे यूरोप में जूते को साफ करते वक्त होता है इत्यादि ...इत्यादि"।

- ये क्या है? - मैं प्रोखोर सविच की तरफ थोड़ा आश्चर्यचकित भाव से देखा,- ये हैं क्या?

- क्या है?

- हाँ, कृपा कीजिये, क्या हम अब इवान मतवेयेविच की चिंता करे, ये तो मगरमच्छ को लेकर चिंतित हैं।

- और क्या है ये? यह जानवर, स्तनपायी, और इसके लिए चिंताग्रस्त हैं। और यूरोप की तरह हीं? वहां भी लोग मगरमचछ के लिए काफी चिंतित होते हैं। ही,ही, ही!

इतना कहकर अजीब इंसान प्रोखोर सविच ने पन्नों पर आँखे गड़ा लीं और इसके आगे एक शब्द भी नहीं बोले।

"वोलोस " और "लिस्तोक" को मैं ने जेब में छिपा लिया और इसके अलावा इवान मतवेयेविच के शाम के मनोरंजन के लिए मुझे जितनी पुरानी "इज़वेस्तिया" और "वोलोस" मिल पाया मुझे उतना इकठ्ठा कर लिया यद्दपि शाम होने में अभी देर थी,किन्तु इस बार मै ऑफिस से पहले निकल गया पसाझ में ये देखने के लिए की वहा क्या हो रहा है, लोगों के विचारों और विचारधाराओं के बारे में सुनंने के लिए। मैंने महसूस किया कि वहां काफी भीड़ थी और मैंने संकोचित होते हुए अपने चेहरे को कोट के गिरेबान में छुपा लिया, चूँकि मैं किसी बात से थोड़ा शर्मिंदा था, इस तरह से लोगों के बीच जाने की आदत नहीं थी। अपितु मुझे यह महसूस हो रहा है कि मैं इस अद्भुत और वास्तविक घटना पर खुद कोई मनगढंत दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का अधिकार नहीं रखता।

संदर्भ - Ф.М. Достоевский. Собрание сочинений в 15 томах. Л.: Наука. Ленинградское отделение, 1989. Т. 4. http://az.lib.ru/d/dostoewskij_f_m/text_0300.shtml [10.01.2022]

एक हास्यास्पद व्यक्ति का स्वप्न

सौरभ नायक
अध्यक्ष सचिवालय विभाग
स्बेर बैंक, नई दिल्ली

I

मैं एक हास्यास्पद इंसान हूँ। अब वे मुझे पागल बुलाते हैं, यह तरक्की होती अगर मैं उनकी निगाह में वैसा हँसी का पात्र नहीं रहता पहले जैसा, पर अब मुझे इसका बुरा नहीं लगता। वे सभी मुझे पसंद हैं तब भी जब वे मुझ पर हँसते हैं, और हाँ उस वक्त भी वे मुझे कुछ ज्यादा ही अच्छे लगते हैं और मैं भी उनके साथ हँस लेता हूँ। खुद पर नहीं बल्कि उनके प्यार में, उन्हे देख कर मुझे इतना दुख नहीं होता। दुखी इसलिए नहीं होता हूँ क्योंकि वे सच नहीं जानते पर मैं जानता हूँ। वे यह नहीं समझेंगे, नहीं, कभी नहीं समझ पाएंगे।

पहले पहल मुझे उपहास का विषय बनना अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि मैं हमेशा से ही हास्यास्पद रहा हूँ, और यह मुझे पता है तब से जब से मेरा जन्म हुआ, या शायद तब जब मैं 7 साल का था, मुझे पता था कि मैं हास्यास्पद हूँ। फिर मैं स्कूल गया, यूनिवर्सिटी में पढ़ा, और पता है, मैं जितना पढ़ता गया उतना विश्वास पुख्ता होता गया कि मैं हास्यास्पद हूँ। ऐसा लगा कि अंत में जितना भी ज्ञान मैंने विश्वविद्यालय में पाया वह इसी बात को साबित और गहरा करता गया कि मैं हास्यास्पद हूँ। विज्ञान की तरह ही मेरी जिंदगी में भी वही घटित हो रहा था। साल दर साल इसी हास्यास्पद आदमी की छवि मेरी चेतना में और मेरे हर संबंध में गहराती गई। सभी हमेशा मुझ पर हंसते। पर उनमें से किसी को भी न अंदाजा था और न ही पता था, कि पूरी दुनिया में मुझसे बेहतर इसे कोई नहीं जानता कि मैं बेतुका हूँ। और मुझे इस बात का हमेशा अफसोस रहा, कि

वे यह नहीं जानते पर यह मेरी ही गलती थी, मैं खुद में इतना आश्वस्त था कि मुझे लगा ही नहीं कि मुझे किसी को बताना चाहिए और यह गुरूर मुझमें बढ़ता गया। साल दर साल और अगर मैं किसी के सामने खुद को खोल कर रखता तो उसी शाम मेरे होश फाख्ता हो जाते। कितना झेला है मैंने इस डर से कि अगर मैं अपने स्कूल के दोस्तों को बताऊँ तो। पर मैं ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया न जाने क्यों मेरा चित्त शांत होता गया और मेरी अपनी इस स्वाभाविक असामान्यता पर विश्वास बढ़ता गया। मैंने कहा न जाने क्यों अनजाने कारण जिसके बारे में आज भी मुझे नहीं पता शायद ये उस खौफनाक बदकिस्मती की वजह से होगा जो मेरी आत्मा में बैठ गया था। और उसका परिणाम बाकी सभी से भीषण था। मुझे इसका संकेत बहुत दिनों से मिल रहा था, पर पूरा यकीन अचानक पिछले साल हुआ। मुझे अचानक लगा कि मेरे लिए इस दुनिया के होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने खुद से महसूस करना शुरू किया कि कुछ भी स्थापित नहीं है। पहले तो मुझे लगा कि बहुत सी चीजें पहले थीं फिर लगा कि ऐसा कुछ भी नहीं है, बस ऐसा लगा करता था किन्हीं वजहों से। और धीरे धीरे मैंने अनुमान किया कि भविष्य में भी कुछ नहीं होगा और तब मैंने लोगों पर नाराज होना और तो और उन पर ध्यान देना भी छोड़ दिया। वाकई इसका असर छोटी छोटी बहसों में भी दिखा जो अक्सर सड़क पर मेरी लोगों से हो जाया करती थी, और अपने विचारों में इतना भी नहीं खोया कि क्या सोचना चाहिए। उस समय तक मैंने सोचना बिल्कुल छोड़ दिया था, मेरे लिए कुछ भी जरूरी नहीं था, बस कि मैं अपनी परेशानियों का समाधान कर पाऊं, अरे अभी तो मुझसे एक भी समस्या नहीं सुलझी और ये तो कितनी है। पर मैंने यह सब सोचना छोड़ दिया और वे सब खुद ब खुद ही उड़न छू हो गयी। और उसके बाद मैं सच से रूबरू हुआ।

मुझे सच्चाई का पता चला नवंबर में, सटीक तौर पर 3 नवंबर को। और तब से मुझे सब याद है एक उदास शाम थी, शायद सबसे उदास बुझी हुई। मैं तकरीबन 11:00 बजे घर जा रहा था। और मैंने सोचा कि यह शाम शायद इससे ज्यादा बेरंग नहीं हो सकती बल्कि यह उदास दिख रही है। पूरे दिन बरसात हुई। एक ठंडी उदास और डरावनी सी बरसात होती रही, जैसे कि मानवता के विरुद्ध एक अचूक विद्रोह हो। अचानक से 10

और 11 के बीच यह रुक गई और उसके बाद एक डरावना कोहरा, ठंडक जो कि बरसात से भी ज्यादा डरावनी थी, हर तरफ फैल गई। और हर चीज़ में से भाप सी निकलने लगी, सड़क के हर पत्थर से और हर एक लीक पर अगर कोई दूर तक देखता चलता। तब एक ख्याल अचानक से मेरे ज़हनमें आया कि अगर सड़क की सभी बत्तियाँ बुझा दी जाएं, तो ये ऐसा दिखाई नहीं देगा ये धुआं दिल को उदास नहीं करेगा क्योंकि दिखेगा ही नहीं। उस दिन मैंने खौफ में रात का खाना खाया, और वो शाम एक इंजीनियर और दो दोस्तों के साथ गुजारी। मैं शांत बैठा रहा। और इसी से मैंने उन्हें बोर कर दिया। वे कुछ बढ़ियां बातें करते और फिर अचानक मुझ पर चढ़ बैठते। पर उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मुझे लगा कि वह बस उत्तेजित होने का ढोंग कर रहे थे। मैंने उनसे कहा दोस्तों आपको क्या किसी चीज़ से कुछ फर्क नहीं पड़ता। उन्हें बुरा नहीं लगा बस वे मुझ पर हंस पड़े। यह इसलिए क्योंकि ये मैंने सहज भाव से कहा था बिना आक्रोश के। उन्होंने यह देखा या नहीं पर उन्हें यह मजेदार लगा।

जब मैं सड़क पर गैस लैंप के बारे में सोच रहा था, मैंने आकाश की तरफ देखा आसमान भयानक काला था पर बिखरे हुए बादल देखे जा सकते थे। और उनके बीच में काले धब्बे और अचानक से इन क्षेत्रों में से एक में मुझे एक तारा दिखाई दिया। मैं उसे ध्यान से देखने लगा इसलिए क्योंकि इस तारे ने मेरे मन में एक विचार को जन्म दिया था, उस रात मैंने खुद को खत्म कर लेने का विचार कर लिया। मैं दो महीने पहले भी ऐसा करने का निश्चय कर चुका था और मैंने एक अच्छी रिवॉल्वर भी खरीदी और लोड करके रख ली थी। पर दो महीने हो गए और वह अब भी मेरी दराज में रखी है। मैं एकदम अलग था इतना अलग कि हमेशा उस एक क्षण की प्रतीक्षा में था जब मैं अजीब ना लगूं पर क्यों मुझे नहीं पता। और इन दो महीनों में मैं रात को घर आता केवल इस विचार से कि आज खुद को गोली मार दूंगा। मैं हमेशा सही मौके का इंतज़ार करता रहा। तो अब इस तारे ने मुझे यह ख्याल दिया और मैंने निश्चय किया कि आज की रात आखिरी रात है। पर इस तारे से मुझे यह ख्याल क्यों आया मुझे नहीं पता।

जब मैं आसमान की तरफ देख रहा था तो एक छोटी लड़की ने मुझे कोहनी से पकड़ा। सड़क खाली थी और उस पर भयानक खालीपन था। एक गाड़ीवान अपनी गाड़ी में थोड़ी दूर पर सो रहा था। यह आठ वर्ष की बच्ची थी जिसके सिर पर स्कार्फ बंधा हुआ था। बस एक छोटी पोशाक पहनी हुई थी जो कि बारिश से तर हो चुकी थी। और मैंने उसके गीले टूटे हुए जूते देखें और आज भी वे मुझे याद हैं। मेरी नज़र सबसे पहले उन्हीं पर जम गई थी। उसने अचानक कोहनी से मुझे खींचा और बुलाया। वह रो नहीं रही थी पर सिसकती हुई जुबान में कुछ कह रही थी। जो कि समझना मुश्किल था। इसलिए क्योंकि वह कांप रही थी सिहर रही थी। वह किसी चीज़ से डरी हुई थी और लगातार मम्मा मम्मा पुकार रही थी। मैं उसकी तरफ मुड़ा परंतु कुछ कहा नहीं बस आगे बढ़ा। लेकिन वह, मुझे खींचते हुए भागी और उसकी आवाज़ में एक निराशा भरी चुभन थी। मैं इस आवाज को जानता हूँ उसके, कोई शब्द कहे बिना ही मैं समझ गया कि उसकी माँ मर रही है। यह कुछ इसी तरह का घटित हो रहा है। और वे किसी को बुलाने के लिए आई है कि कोई उसकी माँ की मदद करे। मैं उसके साथ नहीं गया बल्कि इससे उलट मैंने उसे कहीं और ले जाने को सोचा। मैंने कहा कि पहले पुलिस के पास जाओ पर अपने हाथों को जोड़े वह मेरे पीछे आकर सिसक सिसक कर रोने लगी। तब मैंने अपना पैर जमीन पर मारा और उस पर चिल्लाया। उसने कहा सर सर और अचानक मुझे छोड़ते हुए रोड से भाग गई। वहाँ एक और राहगीर दिखा, वह उसके पास चली गयी।

मैं पांचवीं मंजिल पर चढ़ा। यहाँ पर हमारे कमरे हैं। मेराकमरा छोटा है, अटारी की खिड़की आधी गोल है। मेरे पास अमेरिकन लेदर (ऑयलक्लोथ) का एक सोफा है, एक मेज जिसपर कुछ किताबें हैं, दो कुर्सियां और एक आराम कुर्सी है। काफी पुरानी पर पुराने अंदाज की है, लेकिन है वॉल्टेयर कुर्सी। मैं बैठा मोमबत्ती जलाई और सोचने लगा। मेरे बगल के कमरे में दीवार के दूसरी तरफ कुछ कोलाहल सा चल रहा था। यह पिछले तीन दिनों से चल रहा था। एक रिटायर्ड कैप्टन वहाँ रहते थे और उनके कुछ आधा दर्जन मेहमान थे। वोदका पीते हुए और पुराने पत्तों से ताश खेलते हुए।एक रात पहले वहाँ झगड़ा हुआ था और मुझे वो दो लोग याद हैंजो एक दूसरे को बालों से पकड़कर खींच रहे थे। मकान

मालिक शिकायत दर्ज कराना चाहती थी पर वे कैप्टन से डरती थी। इसके अलावा एक और छोटी और दुबली-पतली महिला जो रेजिमेंट से थी, अपने तीन छोटे बच्चों के साथ रहती थी। जो कि यहाँ पर आने के बाद से ही बीमार हो गये थे। दोनों वह महिला और उसके सभी बच्चे कैप्टन से बेतहाशा डरते थे। वे सभी डरे डरे रहते थेऔर सबसे छोटे बच्चे को तो दौरे तक पढ़ने लगे थे। कैप्टन के बारे में मैं जानता हूँ कि वह कभी कभी नेवस्की सड़क पर लोगों को रोककर उनसे पैसे वसूलता था। वे उसकी शिकायत नहीं करते थे। अजीब बात यह है कि वे उसे नौकरी के लिए स्वीकार नहीं करते हैं तब से ही कप्तान हमारे साथ रह रहा है। फर्जी बात है कहने के लिए कि पूरा महीना जब कैप्टन यहाँ रहा मुझे उसके स्वभाव से कोई परेशानी नहीं हुई। हालांकि मैंने उसको शुरुआत से ही नजरंदाज करने की कोशिश की और वह भी पहली बार में ही मुझसे बोर हो गया था। पर मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दीवार के दूसरी तरफ वे कितना चिल्लाते हैं या वे कितने लोग हैं। मैं सारी रात उन्हें इस तरह भूला रहता कि उनकी आवाज तक मुझे सुनाई नहीं देती। मैं सुबह तक जागा रहता और लगभग साल भर से ऐसा ही चलता रहा। मैं अपनी आराम कुर्सी पर रातभर टेबल के सामने बैठा रहता और कुछ न करता। मैं सिर्फ दिन में पढ़ता, मैं बैठा रहता कुछ नहीं सोचता विचार मेरे दिमाग से गुजरते रहते हैं मैं उन्हें स्वतः ही आने और जाने देता। हर रात एक मोमबत्ती पूरी जल जाती। टेबल के सामने बैठता बंदूक निकालता और अपने सामने रख देता और मैं जब उसे नीचे रखता तो खुद से पूछता कि क्या मुझे ऐसा करना है। और मुझे विश्वास के साथ जवाब मिलता हाँ। मैं खुद को गोली मार लूँगा मुझे मालूम था कि उस रात मैं अपने आपको गोली मारूंगा पर इस टेबल पर मुझे और कितनी देर बैठना है मुझे नहीं पता। और निस्संदेह मुझे खुद को गोली मार ही लेनी चाहिए थी अगर उस छोटी लड़की की वजह नहीं होती।

II

देखिए मुझे फर्क नहीं पड़ता पर दर्द होता है जैसे की कोई मुझे मारे तो चोट तो लगेगी यह वही नैतिकता है कि कुछ दयनीय या बुरा हो तो मुझे बुरा लगना चाहिए उसी

तरह जिस तरह कुछ साल पहले मुझे फर्क पड़ता था। मुझे उस शाम बहुत दुख हुआ। मुझे उस बच्ची की मदद करनी चाहिए थी। फिर क्यों मैंने उस छोटी बच्ची की मदद नहीं की। क्योंकि वह विचार जो उस समय मेरे मन में आया जब वह मुझे बुला रही थी अपनी तरफ खींच रही थी। एक सवाल मेरे सामने आया जिसका जवाब मेरे पास नहीं था। सवाल गैरजरूरी था पर मैं परेशान हो गया। इस ख्याल से कि अगर इस रात मैं खुद को खत्म कर लूं फिर मेरे लिए जीवन संबंधी चीजों का क्या महत्व। ऐसा क्यों हुआ की मैंने उस वेदना को महसूस नहीं किया। एक अजीब स्थिति में था मैं मुझे नहीं पता कि मैं अभी खुद के भीतर की भावनाओं को कैसे व्यक्त करूँ। पर यह पीड़ा बरकरार रही तब भी जब मैं घर पर टेबल पर बैठा मैं खुद पर रिवाल्वर खींच रहा था और इस तरह का स्वभाव मेरा पिछले दिनों नहीं था। एक के बाद दूसरा विचार आया मैंने देखा कि इतने दिनों मैं एक इंसान ही तो था। मैं जीवित था तो परेशानियां भी थी गुस्सा भी और मेरे किए का पछतावा भी। जीवन तो जीवन है और अगर मैं खुद को मार लेता हूँ? दो घंटे में तो एक छोटी बच्ची कैसी और वह पछतावा कैसा और संसार की कोई भी और चीज़ कैसी। मैं खाक में मिल जाऊंगा कुछ नहीं बचेगा और क्या यह सच हो सकता है कि मेरी चेतना का अस्तित्व पूरी तरह समाप्त हो जाएगा और मेरे दुख और शर्म संबंधी सभी विचार भी समाप्त हो जाएंगे। पैर पटका और उस दुखी बच्चे पर चिल्लाया कि हाँ मुझे दुख नहीं होता है और न ही मैं मानवीय बर्ताव करता हूँ पर मैं ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हूँ। क्योंकि अगले दो घंटों में सब कुछ मिल जाएगा तुम्हे विश्वास हो जाए इसीलिए मैं तुम पर चिल्लाया अब मैं लगभग पूरा आश्वस्त हो चुका हूँ मुझे साफ दिख रहा था कि जीवन और यह संसार कुछ हद तक मुझ पर ही निर्भर है मैं यह भी लगभग कह सकता हूँ कि यह संसद मेरे लिए ही बनाया गया। और अगर मैं खुद को खत्म कर लूँ तो ये संसार भी खत्म हो जाएगा कम से कम मेरे लिए तो सही। मैं ऐसा कुछ नहीं कहता कि किसी के लिए कुछ नहीं बचेगा मेरे चले जाने के बाद और जब मेरी चेतना भी सुने हो जाएगी तो पूरी दुनिया भी एक शून्य हो जाएगी क्योंकि यह मेरी चेतना का ही स्वरूप है और ये संसार सारे लोग आखिर मैं ही तो हूँ। मुझे याद है मैं बैठा और यह सभी नए सवाल मेरे

सामने इकट्ठे होते गए एक के बाद एक नए रूप में और नए विचार बनते गएऔर एक नई छवि मेरे सामने आई कि अगर मैं पहले मंगल यह चाँद पर रहा होता और वहाँ कोई शर्मनाक या घिनौना काम करता है और इस तरह की शर्म और बदनामी झेलता जो कि सिर्फ बुरे सपनों में होती है और फिर धरती पर आ जाता और मुझे वो सब याद रहता जो मैंने दूसरे ग्रह पर किया है और साथ साथ यह भी याद रहता कि किसी भी परिस्थिति में वहाँ वापस नहीं जाना फिर धरती से चाँद को देखना क्या मुझे फर्क पड़ना चाहिए। क्या मुझे अपने किए कार्यों पर शर्मिंदा होना चाहिए। यह सब व्यर्थ के सवाल थे इस बंदूक के लिए जो मेरे सामने पड़ी थी और मुझे अच्छे से पता था कि यह होगा पर यह विचार मुझ पर हावी होते हुए मुझे गुस्सा दिलाते गए। मैं अभी नहीं मर सकता पहले मुझे कुछ काम करने है। सही मायने में उस बच्ची ने मुझे बचा लिया था। और इन सवालों के लिए मैंने अपनी पिस्तौल अंदर रख दी और इसी समय कैप्टन के कमरे में शोर थमने लगा। उन्होंने अपना खेल खत्म कर दिया था और सोने जा रहे थे और इस बीच वे बड़बड़ा रहे थे और अपने झगड़ों को सुलझा रहे थे। उसी समय मैं अपनी कुर्सी पर सो गया ऐसा मेरे साथ पहले कभी नहीं हुआ था। मैं बड़े अनजानेपन भोलेपन में सो गया। सपने, जैसे की हम जानते हैं बड़े विचित्र होते हैं कुछ हिस्सों में भयावह जीवंतता होती है विवरण के साथ जैसे बहुत से गहने पहने हुए जबकि दूसरे बिना देखे सरपट दौड़ रहे हैं, स्थान और समय में। है किसी कारण से नहीं बल्कि मन के विचारों से, इच्छाओं से, दिमाग से नहीं, दिलसे। और इसके अलावा सपनों में मेरे मुश्किल तर्क भी शामिल हो जाते हैं। कितनी अजीब चीजें मेरे साथ हुईं। मुझे बखूबी याद है कि मेरा भाई जो कि मर चुका है फिर भी ऐसा जो मुझे हैरान भी नहीं करता और कि वह मेरे साथ बैठता है मेरे साथ काम करता है। पर ऐसा क्या है कि मेरा तर्क इस बात को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लेता है। बस बहुत हुआ अब मैं अपने सपने के बारे में बताता हूँ। हाँ, मेरा सपना है जो मैंने देखा 3 नवंबर को वे मुझे चिढ़ाते हैं और कहते हैं कि वह महज एक सपना था। पर क्या सच में फर्क पड़ता है कि भाई सपना है या हकीकत? अगर मेरा सपना वाकई में सच होतो? अगर एक बार किसी ने सच को स्वीकार किया और देखा तो आप जान लेंगे

इसके सिवा और कुछ नहीं। फिर चाहे आप जाग रहे हो या सो रहे हों। इसको सपना ही रहने देते हैं पर ये असल ज़िंदगी जो कि सब कुछ है उसे मैंने खत्म कर देने का निश्चय किया और मेरा सपना जिसने एक बिल्कुल नया जीवन मेरे लिए खोल दिया, नया विशाल और ताकत से भरपूर जीवन।

III

मैंने बताया कि मैं गहरी नींद में चला गया था, पर अभी भी उसी विषय में सोच रहा था। अचानक मुझे सपना आया कि मैंने रिवॉल्वर उठायी और सीधा अपने दिल की तरफ निशाना साधा। दिमाग की तरफ नहीं जबकि पहले मैंने सिर में गोली मारने का विचार किया था। माथे से दाईं तरफ। सीने पर बंदूक तानकर मैंने एक दो पल का इंतजार किया। और अचानक से मेरी मोमबत्ती, मेरी टेबल, और मेरी सामने की दीवार हिलने लगी घूमने लगी और मैंने जल्दी से बंदूक चला दी।

सपनों में कभी कभी आप ऊँचाई से गिर पड़ते हैं, या चाकू से मारे जाते हैं, या पीटे जाते हैं, पर आपको दर्द नहीं होता। शायद तब तक जब तक आप बिस्तर पर ही असल में खुद को रगड़ना लें तब ही आपको दर्द होता है और हर बारी इस दर्द से ही आपकी नींद खुलती है। मेरे सपने में भी ऐसा ही हुआ। मुझे दर्द नहीं हुआ लेकिन ऐसा लगा कि मेरे अंदर सब कुछ हिलने सालगा है।हल्का सा पड़नेलगा गोली लगने के बाद। मेरी आँखों के सामने कालापन छा गया। मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया और मैं स्तब्ध रह गया। मैं किसी सख्त चीज़ परपीठ के बल लेटा हुआ था मैंने कुछ नहीं देखा और थोड़ा सा भी हिलना सका मेरे इर्द गिर्द लोग घूम रहे थे, चिल्ला रहे थे। कैप्टन चिल्लाया, मकान मालकिन चिल्लायी और अचानक से कुछ समय बाद मैं एक बंद ताबूत में ले जाया गया। और मुझे महसूस हुआ कि ताबूत जैसे हिल रहा था। पहली बार ऐसा लगा कि मैं मर चुका हूँ बिलकुल मृत। मुझे पता था और कोई संदेह न था। ना कुछ देख सकता था, ना हीं हिल सकता था पर फिर भी महसूस कर पा रहा था। और मैं जल्द ही

उस स्थिति में आ गया जैसा कि सपनों में हमेशा होता है। हम बिना किसी विरोध के सहमति दर्ज करा देते हैं।

और अब मुझे जमीन में दफन कर दिया गया। वे सभी चले गए और मैं अकेला रह गया। बिल्कुल अकेला। तथा, जब भी मैंने दफन किए जाने का विचार किया था तो, एक विचार हमेशा कब्र के बारे में था। और वो था नमी और ठंडक। तो आज मुझे बेहद ठंड का एहसास हुआ खासकर पैर के अंगूठे में, लेकिन इसके अलावा और कुछ महसूस नहीं हुआ।

मैं स्थिर लेटा हुआ था, अजीब है कहना, पर मुझे कोई आशा कोई उम्मीद नहीं थी। बिना विवाद के मैंने मान लिया था कि एक मृत व्यक्ति को उम्मीद नहीं होती। पर यह नमी से भरा था, मुझे नहीं पता कितना समय बीता, एक घंटा या कई दिन याफिर बहुत से दिन। बस एक बार मेरी बाईं बंद आंख पर पानी की एक बूंद गिरी। ताबूत के ढक्कन से अपनी जगह बनाती हुई और एक ही मिनट बाद एक और बूंद, फिर एक मिनट बाद एक और, फिर और, और गिरती रही, हर मिनट में। अचानक एक चमक सी आई और दिल में एक गहरा दर्द से हुआ, यह मेरा घाव था। मुझे महसूस हुआ ये बंदूक की गोली है, और बूंद बूंद हर मिनट मेरी बंद पलक पर गिरती रही। एक वक्त तो आवाज से नहीं पर मेरे अस्तित्व के माध्यम से मैंने उस शक्ति को पुकारा जो इस सब के लिए उत्तरदायी थी। इस सब के लिए जो मेरे साथ घटित हो रहा था उसके लिए।

तुम जो कोई भी हो, अगर तुम सच में हो, तो कहो की ये जो कुछ हो रहा है क्या यह तर्कसंगत है? अगर तुम मेरी बेतुकी आत्महत्या का बदला ले रहे हो अपनी घृणा और बेतुकेपन से तो मुझे तुम्हें बताना होगा कि कोई भी यातना इस मूक अवमानना की बराबरी नहीं कर सकती। और मेरी शहादत लाखों साल तक जानी जाएगी।

मैंने यह अपील की और शांत हो गया। पूरा 1 मिनट तक घोर सन्नाटा था। फिर एक और बूंद गिरी लेकिन एक दृढ़ निश्चिंतता से मुझे पता था कि यह सब बहुत जल्द ही बदल जाएगा। और अचानक से कब्र में क्या हुआ क्या इसे खोला गया? या और गहरा

किया गया? पर एक अंधेरे ने मुझे पकड़ा और कोई अजनबी था और हम आसमान में थे। और अचानक से मेरी दृष्टि वापस आ गई यह काली रात थी इससे पहले इतनी काली रात कभी नहीं हुई। हम आकाश में उड़ते हुए धरती से दूर जा रहे थे। मेरा अजनबी, जो मुझे ले जा रहा था उससे मैंने कोई सवाल नहीं किया।बस इंतज़ार किया। मैंने खुद को आश्वस्त किया कि मैं डरा हुआ नहीं हूँ और मैं इस विचार से बेहद रोमांचित था कि मैं डर नहीं रहा। मुझे नहीं पता कि कितनी देर हम उठते रहे। एक। ये वैसा ही था जैसा हमेशा सपनों में होता है जब जगह समय विचार और अस्तित्व का कोई महत्त्व नहीं रहता और सिर्फ हम वही देखते हैं जो हमारे दिल में कहीं होता है। मुझे याद है मैंने अचानक से इस अंधेरे में एक तारे को देखा। सीरियस है पूरा मैंने उत्सुकतावश पूछा जबकि मुझे कुछ भी पूछे जाने की मनाही थी। नहीं ये वही तारा है जिसे तुमने बादलों के बीच में देखा था जब तुम घर लौट रहे थे। मेरे सहयात्री ने मुझे जवाब दिया। मुझे याद है कि उसका थोड़ा इंसानी चेहरा था। अजीब है कहने के लिए लेकिन मुझे वह पसंद नहीं था बल्किमेरे मन में उसके लिए घृणाभाव उत्पन्न होने लगे। मुझे एक शून्य अभाव का एहसास हुआ और शायद इसीलिए मैंने वे बंदूक की गोली अपने दिल में मारी थी। अब मैं यहाँ एक ऐसी शक्ति के हाथों में था जो की इंसान नहीं था लेकिन हाँ उसका अस्तित्व था। तो कब्र के आगे भी जीवन है एक अजीब सी सहेजता जो की सपनो में होती है उसमें मैंने ये सोचा। लेकिन इतनी गहराई में भी मेरा दिल नहीं बदला। और अगर मुझे दोबारा अस्तित्व में आना हो और फिर से एक और बार यदि मुझे किसी अबूझ शक्ति के नियंत्रण में रहकर जीवन में वापसी करनी हो तो क्या मुझे इस तरह हराया और अपमानित नहीं किया जाएगा। तुम्हें पता है मैं तुम से डरता हूँ लेकिन इसके बावजूद भी मैंने अपने सहयात्री से कहा कि मैं खुद को उस अपमानजनक सवाल और स्वीकृति से दूर नहीं कर पा रहा हूँ। और यह अपमान मेरे सीने में शूल की भांति अभी भी चुप रहा है। उसने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया और एक बार तो मुझे लगा कि वह मेरा अनादर तो नहीं कर रहा पर मुझ पर हंस रहा है। बिना किसी दया भाव के। यह अनजानी और रहस्यमय यात्रा केवल मेरे लिए चिंता का विषय थी। मेरे दिल में डर बढ़ता जा रहा था। मेरे इस

साथी के जरिए मुझे एक दर्द भरी खामोशी से कुछ बताया गया। जिसने मेरे पूरे अस्तित्व को झकझोर दिया। हम एक अनजान अंधेरे आकाश में उड़ रहे थे। कुछ समय के लिए मेरी आँखों की गयी हुई रौशनी वापस आ गई जब हम परिचित नक्षत्रों से गुजरे। मुझे पता था कि इस ईश्वरी आकाश में कई तारे हैं जिनकी रौशनी हजारों लाखों सालों में धरती तक पहुंचती है। शायद हम उन्हीं रास्तों से होकर गुजर रहे थे। मुझे एक भयानक पीड़ा का एहसास हुआ और मुझे एक परिचित सी भावना ने अंदर तक हिला दिया। मुझे अपना सूरज दिखाई दिया पर मुझे पता था कि ये हमारा सूरज नहीं हो सकता। वो सूरज जो धरती को जीवन देता है और हम अपने सूरज से बहुत बहुत दूर है पर किन्हीं वजहों से मुझे पता था कि यह सूरज बिलकुल हमारे सूरज की तरह ही तो है जैसे उसी का प्रतिरूप और मेरा हृदय एक मीठी और रोमांचक भावना से भर गया कौन बताओ वही रौशनी जिससे मुझे एक आशा की किरण मिली थी उसी ने मेरे हृदय में एक कंपन सी पैदा किए। और मुझे झकझोर दिया। मुझे जीवन की अनुभूति हुई उसी पुराने जीवन की। कब्र में आने के बाद ऐसा पहली बार महसूस हुआ।

पर अगर यह सूरज है तो क्या ये बिल्कुल हमारे जैसा है तो फिर धरती कहा है मैं रुआंसा हो गया। मेरे सहयात्री ने दूर एक चमकते हुए तारे की तरफ इशारा किया हम सीधे उसी की तरफ उड़े जा रहे थे।

पर क्या यह दोहराव ब्रहमांड में संभव है। क्या यह प्रकृति का नियम हो सकता है। और अगर यह पृथ्वी है तो क्या यह वही हमारी पृथ्वी हो सकती है बिलकुल वही वैसी ही गरीब और नाखुश पर हमेशा वैसी ही चहेती और बहुमूल्य। अपने सबसे एक मृतक बच्चों में भी वही प्रेम जगाती जो हम सभी अपनी पृथ्वी से करते हैं। मैं उसी प्रेमानंद में विभोर हो खिल उठा जिसे मैं पीछे छोड़ आया था। एक गरीब बच्चे की छवि जिसे में छोड़ आया था मेरे दिमाग में दौड़ गयी।

तुम यह सब देखोगे, मेरे सहयात्री ने उत्तर दिया उसकी आवाज़ में एक दर्द था।

और हम जल्दी से उसे एक ग्रह की तरफ बढ़ रहे थे। वह मेरी आँखों में बड़ा होता जा रहा था। मैं देख पा रहा था समुद्र यूरोप की रेखा और अचानक से मेरे दिल में एक पवित्र ईर्ष्या जाग उठी। ये दोहराव कैसे और क्यों। क्लेम कर सकता हूँ जिससे मैं पीछे छोड़ आया हूँ। मेरे खून से सनी वही धरती जिसके प्रति कृतज्ञ होकर मैंने अपने जीवन को समाप्त कर लिया था। पर फिर भी मेरा उस पृथ्वी से प्रेम कभी कम नहीं हो सकता बल्कि शायद उस दिन जब मैं उससे दूर गया वह प्रेम और भी बढ़ गया। क्या वही तड़प इस धरती पर भी है हमारी पृथ्वी जैसी। हम तो परेशानियों से जूझते हुए भी प्रेम कर सकते हैं हमें किसी और तरह से प्यार जताना आता ही नहीं। मुझे पीड़ा चाहिए दर्द चाहिए और प्रेम करने के लिए। वही भूख वहीं तड़प अपनी धरती को चूमने की जैसे हालात में छोड़ आया था। मैं नहीं चाहता बल्कि मैं किसी और धरती को स्वीकार कर ही नहीं सकता।

अब मेरा सहयात्री मुझे छोड़ कर जा चुका था। और मैंने खुद को अचानक से इस नई धरती पर पाया। सूरज की चमकदार रौशनी में नहाया दिन जन्नत की तरह। मुझे लगा कि मैं किसी द्वीप पर हूँ जो ग्रीक समूह का हिस्सा है यहाँ जो कि मुख्यभूमि का हिस्सा है द्वीप के समीप। सबकुछ जिओ का क्यों हूबहू वैसा ही था बस हर तरफ एक उत्सव की चमक थी। और वहीं पवित्रता विजयी भी हुई। वही इसे लाने वाला सागर वही बहुमूल्य पन्ना पत्थर की तरह हरे भरे किनारे और वही प्रेम भरी अनुभूति सुन्दर ऊंचे भरे हुए विशाल वृक्ष और उनकी अनगिनत पत्तियाँ। जिन्होंने मेरा स्वागत किया मुझे यकीन हुआ की यह सरसराहट प्रेम की एक भाषा है। घास भी सुगंधित और चमकीले फूलों से जगमगा उठी। पक्षी समूहों में उड़ रहे थे और निडर होकर मेरे कंधों बांहों पर बैठकर खुशी से पंखे हिला रहे थे।और फिर मैंने इस सुखद संसार के लोगों को जाना। वह मेरे पास आए मुझे घेर लिया और बहुत स्नेह दिया। सूर्य के बच्चे बल्कि कहना होगा उनके सूर्य के बच्चे हाँ वे कितने सुंदर थे। मैंने अपनी धरती पर इंसानी प्रजाति में इतना सौंदर्य कभी नहीं देखा। हमारे बच्चों के बिल्कुल शुरुआत में बालपन में शायद इस सौंदर्य की कोई झलक दिखे। इन प्रसन्नचित्त लोगों की आंखें चमक रही थीं। उनके चेहरे ऐसे

चमक रहे थे जैसे पूर्ण आश्वस्त और शान्त चित्त चमकता है। वह चेहरे थे सिर्फ कोरे चेहरे। उनके शब्दों और आवाजों में बचपन जैसी खिलखिलाहट थी। पहली झलक में पहले ही पल में मैं यह भली भांति समझ गया। यह वह धरती थी जहाँ निष्पाप लोग रहते थे। देते थे जो हमारे पूर्वजों के अनुसार हमारे परदादाओं का समय था स्वर्ग के समान निष्पाप। बस यही अंतर था कि यहाँ की पूरी धरती ही वही स्वर्ग थी। वे लोग हंसते हुए उल्लास में मेरे इर्द गिर्द घूमते हुए प्रेम करते हुए मुझे अपने घरों में ले गए और हर एक ने मुझे संपूर्ण रूप से आश्वस्त कर दिया। उन्होंने मुझसे कोई सवाल नहीं किया पर लगा कि वे बिना पूछे भी सब जान लेना चाहते हैं और वे जल्दी से मेरे चेहरे से पीड़ा और स्नेह के सभी भावों को मिटा देना चाहते हैं।

IV

पता है यह बस एक सपना था पर फिर भी उन खूबसूरत लोगों के भोलेपन के भाव मेरे साथ हमेशा रहे। लगता है कि उनका प्रेम अभी तक मुझ में समाया हुआ है। मैंने उन्हें खुद देखा जाना और प्रेम किया और बिछड़ने के बाद दुख भी महसूस किया। हाँ एक बार मुझे समझ में आया था कि उनकी कई चीजें मेरी समझ से परे थी। जैसे एक मॉडर्न प्रगतिशील पीटर्सबर्ग के नागरिक के लिए जो कि इतना कुछ जानता है मुझे आश्चर्य हुआ कि उनके पास विज्ञान नहीं था। पर फिर मुझे एहसास हुआ कि उनका ज्ञान हमसे अलग था और अलग संस्थाओं से आया था। जो की हमारी संस्थाओं से अलग थी और उनकी आशाएं भी तो हमसे अलग थी। उनको बस शांति चाहिए थी उनमें जीवन को जानने की इतनी तड़प नहीं थी हमारी तरह क्योंकि उनका जीवन संपूर्ण था। और उनका ज्ञान हमसे ज्यादा और गहरा था। जैसे हमारा विज्ञान यह खोजने और जानने की कोशिश करता है कि जीवन क्या है इस उद्देश्य से कि हम सभी से प्रेम करना सीखें पर उन्हें तो बिना विज्ञान के भी जीने की कला मालूम थी। और यह मैं समझ चुका था पर उनका ज्ञान मेरी समझ से परे था। उन्होंने मुझे अपने पेड़ दिखाएं पर मैं इस प्रेम को जान ही नहीं सकता जिस तरह वे अपनी प्रकृति से प्रेम करते थे। यह ऐसा था कि वे सभी जीव

जंतुओं से भी खुद की ही भांति पेश आते थे और गलत नहीं होगा अगर मैं यह कहूं कि वे उनसे बातें किया करते थे। हाँ उन्होंने वहभाषा जान ली थी और यहाँ तक कि पेड़ पौधे भी उन्हें समझ सकते थे। वे पूरी प्रकृति को इसी तरह देखते थे सभी जानवरों को जो उनके साथ शांति से रहते थे वे उनके प्रति हिंसक नहीं थे बल्कि उनका प्यार पाना चाहते थे। पूरा उन्होंने सितारों की ओर इशारा करते हुए मुझे उनके बारे में बताया जो मैं समझ नहीं सका पर मुझे विश्वास है कि वे सितारों से भी जुड़े हुए थे। यह जुड़ाव महज विचारों का नहीं बल्कि संबंधों का था, जीवन का था। उन लोगो ने मुझे समझाने का प्रयास नहीं किया बेवजह ही वे मुझसे प्रेम करते रहे। पर मुझे पता था कि वे मुझे कभी नहीं समझ सकते। इसलिए मैंने अपनी धरती के बारे में ज़रा भी बात नहीं की। मैंने उनके सामने उनकी धरती को चूमा जिसपर वे रहते थे और मन ही मन उसकी पूजा की। उन्होंने यह देखा और मुझे प्रार्थना करने दी। इससे परेशान ना होते हुए क्योंकि वे प्रेमी लोग थे। वे मुझसे नाखुश नहीं थे। जब मैंने आंसुओं के साथ उनके चरण छुए बस उनका जवाब मधुर प्रेम था। कभी कभी मैं खुद से पूछता था कि कैसे वे मुझ जैसे आदमी से भी ऐसे पेश आते हैं और मेरे मन में भी कभी ईर्ष्या या जलन का कोई ख्याल नहीं आया। अक्सर मैं ऐसा सोचता था कि यह कैसे हो सकता है मेरे जैसे घमंडी और झूठे आदमी के साथ कुंद्रा मैंने उनसे वह कभी नहीं कहा जो मैं जानता था, क्योंकि मुझे उन्हें लालायित करने चकित करने या लाभ पहुंचाने की इच्छा ही नहीं हुई। वे बच्चों की भांति उत्साही और प्रसन्न थे। वे अपने प्यारे जंगलों में घूमते, और प्यारे गीत गाते। ये रौशनी ही उनकी प्रसन्नता थी। उनके पेड़ों के फल शहद मवेशियों का दूध सब कुछ बहुत प्यारा था। जीवन यापन के लिए वे जो काम करते थे वह भी थोड़ा और कम मेहनत वाला था। वे प्यार भी करते थे, उनके बच्चे भी थे, पर मैंने उनमें वह कठोर आवेग कभी नहीं देखा जो लगभग हमारे यहाँ सभी मनुष्यों में होता है जो कि मानव जाति के हर पाप का जिम्मेदार हैं।। वह बच्चों के पैदा होने पर खुश होते थे और अपनी खुशी बांटते थे। उनमें कोई झगड़ा कोई ईर्ष्या नहीं थी और यहाँ तक कि उन्हें इन शब्दों का अर्थ तक नहीं पता था। उनके बच्चे सभी के बच्चे थे। जिससे वे एक बड़ा संयुक्त परिवार बन जाते थे। उनमें कोई रोग नहीं

था पर मृत्यु थी। और वे भी कितनी सरल कितनी शांत उनके बुजुर्ग ऐसे जाते थे जैसे कोई सो जाता है। आशीर्वाद और खुशियां बिखेरते हुए अपने भाई बंधुओं में जो उनको अंतिम विदाई देते थे खुशी के साथ। मैंने दुख और आंसू इन मौकों पर कभी नहीं देखे पर देखा सिर्फ प्रेम जो अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुका था। शांत परमानन्द मयी परिपूर्ण और चिंतनशील। भला कोई सोच भी सकता है कि मृत्यु के बाद भी वे उस आत्मा से जुड़े हुए थे। और इस सांसारिक रिश्ते को मृत्यु भी अलग नहीं कर पाई थी। जब मैंने उनसे अमरता के बारे में प्रश्न किया तो वे शायद ही मुझे समझ पाए पर वे इससे इतने आश्वस्त थे कि बिना किसी तर्क या दलील के उनके पास इस बारे में कोई प्रश्न नथा। उनके यहाँ मंदिर नहीं थे या उनका वास्तविक जीवन था - संपूर्ण ब्रह्मांड के साथ एकता की निर्बाध भावना। उनका कोई पंथ नहीं था और उनके पास ज्ञान था कि जब उनका सांसारिक आनंद प्रकृति की सीमा तक पहुँच जाएगा तब होगा जीवितों और मृतकों के लिए संपूर्ण ब्रह्मांड से संपर्क और परिपूर्णता। वे इस अहसास के प्रति प्रसन्नता के साथ आगे बढ़ते थे। पर बिना जल्दबाजी के बिना उत्सुक हुए। उनमें एक पूर्वाभास और विश्वास था जिससे वे एक दूसरे से बातें करते थे। शाम को सोने से पहले उन्हें संगीतमय धुन में गुनगुनाना पसंद था। उन गीतों में वे उन सभी संवेदनाओं को व्यक्त करते थे जो अलग होने के दिन से जुड़ी थीं। वे उनकी महिमा गाते और विदाई गीत सुनाते वे प्रकृति की समुद्र की जंगलों की स्तुति गाते। उन्हें एक दूसरे के बारे में गीत बनाना अच्छा लगता था और बच्चों की तरह वे एक दूसरे के कसीदे पढ़ते। वे बिलकुल सरल गीत थे और एक दिल से दूसरे दिल में उतर जाते थे बिना केवल अपने गीतों में बल्कि अपने पूरे जीवन में भी एक दूसरे की प्रशंसा के अलावा ज्यादा कुछ नहीं करते थे। यह एक सार्वभौमिक सर्वव्यापी भावना थी जैसे एक दूसरे के प्यार में होने की भावना।उनके कुछ गीत गंभीर और उल्लासपूर्ण थे जो मुझे कुछ ही समझ आए हालांकि मैं शब्दों को समझ पा रहा था पर उनके पूर्ण महत्त्व को नहीं समझ पाया। यह मेरी समझ से परे था पर फिर भी मेरा दिल अनजाने में ही सही इसको सोखता गया। मैं अक्सर उनसे कहता कि इसका पूर्वाभास मुझे बहुत पहले से था और ये खुशी और महिमा हमारी धरती पर एक लालसा के रूप में

आती थी।जब कोई असहनीय दुख हो मुझे इन सभी के बारे में सपनों में पता चल चुका था मेरे दिल और मन के विचारों में कि मैं डूबते हुए सूरज को बिना आंसुओं के नहीं देख पाता था। अपनी पृथ्वी के लोगों के प्रति तो मेरा घृणाभाव था पर मैं क्यों उनसे नफरत करना छोड़ नहीं सकता। सिर्फ प्रेम ही करूँ मैं उन्हें क्षमा क्यों नहीं कर सकता। उन्होंने मुझे सुना और मैंने देखा कि यह सवाल उनकी सोच से परे था। मैं कह रहा था पर मुझे इसका कोई अफसोस नहीं था कि मैंने उनसे इस बारे में बात की। मुझे पता था कि वे इसकी गहराई को समझेंगे मैंने उन लोगों के बारे में बात की जिन्हें मैं छोड़ा गया था और जब उन्होंने मुझे प्यार भरी आँखों से देखा तो मैंने महसूस किया कि उनकी उपस्थिति में मेरा दिल भी उतना ही निर्दोष और सरल हो गया था। और मैं पूर्णता का एहसास मेरी सांसों में समा गया तथा खामोशी से मैं उन्हें पूजने लगा।

अब हर कोई मुझ पर हंसता है और मुझे विश्वास दिलाता है कि ऐसा सपना भला कौन देख सकता है जैसा कि मैं बता रहा हूँ। मैंने यह सपना देखा या अपने दिल के दर्द को महसूस कर खुद ही एक विवरण बना लिया। आंखें खुलने के बाद। और जब मैंने उनसे कहा कि शायद सच्चाई यही है तो हे भगवान वे ज़ोर से ठहाका मारकर मेरे ऊपर हंसने लगे और मैंने भी क्या खुशी का माहौल बना दिया। हाँ, निश्चित रूप से मैं अपने सपने की सनसनी से दूर हो गया था। बस यही सब तो था जो मेरे क्रूर चोटिल हृदय में था पर मेरे सपने के वास्तविक रूप और चित्र यानी जिन्हें मैंने सपने के समय सच माना था वे कितने प्यार और सद्भाव से भरे हुए पल थे। कितने मोहक और कितने वास्तविक की जागने के पश्चात उन्हें इस दुनिया में कल्पना करना असंभव था। मेरी भाषा भी इतनी परिपूर्ण न थी और वे छवि मेरे दिमाग में धुंधलाती चली गयी शायद इसीलिए बाद में मुझे मजबूरन उनका विचार करना पड़ा जिससे मैं कुछ तो अपने दिमाग में रख पाऊँ, सँजो पाऊँ। और फिर मैं कैसे विश्वास दिला सकता था कि यह सच था वह शायद इससे 1000 गुना उज्ज्वल खुशनुमा और मजेदार था। माना कि ये सपना था तो क्या यह सच नहीं हो सकता? पता है अगर मैं यूं कहूं कि यह सपना नहीं हकीकत थी कि कुछ इतना भयानक हुआ जिसकी कल्पना सपनों में भी नहीं हो सकती और इसलिए

मेरे दिल ने शायद इस सपने को जन्म दिया हो। पर क्या महज मेरा दिल ही मेरे साथ घटित उन भयानक घटनाओं को बना सकता है क्या यह कल्पना मेरे अकेले की है क्या मेरे चंचल और क्षुद्र हृदय ने सत्य की ऐसी परिकल्पना थी। खुद ही समझिए बहुत कुछ जो मैंने छुपाया पर अब सच बताऊँगा। सच यह है कि मैंने उन सब को भी अपनी तरह भ्रष्ट बना दिया था।

V

हाँ, मैंने उन सभी को भ्रष्ट बना दिया और क्या ये कैसे संभव है कि मेरे सामने सब कुछ हुआ और मुझे स्पष्ट रूप से पता भी नहीं ये सपना हजारों साल जितना लंबा था पर मुझ में बस एक संपूर्णता की झलक रह गयी। मुझे बस इतना पता है कि उनके पाप और पतन का कारण मैं था। एक नीच कीड़े की तरह प्लेग के वायरस की तरह है जो पूरे साम्राज्य को संक्रमित कर सकता है मैंने भी पूरी पृथ्वी को दूषित कर दिया जो कि मुझ से पहले कितनी खुश और पाप मुक्त थी। उन्होंने झूठ बोलना सीखा झूठ बोलने का शौक बढ़ा और उन्होंने उसमें आकर्षण ढूंढ लिया। पहले पहल तो यह एक मासूमियत के साथ शुरू हुआ एक मजाक जैसा फिर एक वाइरस की भाँति उनके दिल और दिमाग में उतर गया। फिर वही अहसास बढ़ता गया और ईर्ष्या और क्रूरता पनपती चली गयी। मुझे नहीं पता, मुझे याद नहीं, जल्द ही पहली खून की बूंद बही। वे भयभीत और अचंभित होने लगे और शुरू हुई फूट और विभाजन की प्रक्रिया। उन्होंने गुट बनाए पर एक दूसरे के खिलाफ़। तिरस्कार गाली गलौज बढ़ा उन्हें लज्जा महसूस होने लगी जिसने इस सब को जन्म दिया। सम्मान की भावना बढ़ी और हर संघ ने अपने झंडे उठाए। वे जानवरों पर अत्याचार करने लगे। जानवर उनके दुश्मन हो गए और उनसे दूर जंगलों में चले गए। और फिर अलगाव, मेरा-तुम्हारा व्यक्तित्व वाद का संघर्ष। अलग ज़बानों में बातें करने लगे वे खुद से अपरिचित और दुख से परिचित हो प्रेम विहीन हो गए। और कहा गया कि पीड़ा में ही सत्य की प्राप्ति होती है।फिर विज्ञान आया, दुष्टता के साथ ही मानवता और भाई चारे की बातें करने लगे जैसे ही वे अपराधी बने उन्होंने न्याय का आविष्कार

किया और पालन करने के लिए न्याय कानूनी संबंधी नियम बनाए गए उन्हें शायद ही याद हो कि उन्होंने क्या खो दिया। अब यह विश्वास से परे है कि कभी वे कितने निर्दोष और कितने प्रसन्न थे। यहाँ तक कि अतीत में ऐसा होने की संभावना पर भी वे हँसे। और इसे एक सपना कह दिया। वे कल्पना भी नहीं कर सकते कि ऐसा था। कितना अजीब और अद्भुत है यह। अब उन्हें इस अतीत पर विश्वास ना रहा और उसे किंवदंती कहने लगे और फिर एक बार उसी प्रसन्नता और निरपराधता के लिए बच्चों की भांति तरसने लगे। फिर इस आदर्शवादिता की मूर्तियां बनी मंदिर बने और उन विचारों का सम्मान और आकर्षण बढ़ा पर साथ ही साथ वे यह भी मानते थे कि यह असाध्य है प्राप्त नहीं हो सकता महसूस नहीं किया जा सकता फिर भी वे आंसुओं के साथ झुकते रहे। फिर भी अगर यह हो सकता है कि वे अपनी पुरानी स्थिति में वापस आ सकते प्रसन्नता और निरपराध दुनियां में और अगर कोई यह पूछता कि क्या तुम वापस जाना चाहोगे तो वह इन्कार कर देते उन्होंने मुझे उत्तर दिया। हम धोखेबाज दुष्ट और अन्यायी हो सकते हैं हम इसे समझते हैं और इसका हमें दुख भी है हम खुद को पीड़ा देते हैं, दंड देते हैं शायद उस दयालु न्यायाधीश से भी अधिक जिसका नाम भी हम नहीं जानते। पर हमारे पास विज्ञान है जिसके जरिए हम सत्य की खोज करेंगे और उसे पालेंगे। ज्ञान भावना से ऊपर है जीवन की चेतना जो जीवन से भी बड़ी है। विज्ञान से हमें ज्ञान मिलेगा जिससे हम जान पाएंगे वे नियम जो खुश रहने के लिए बने हैं वे नियम खुशियों से भी ऊपर हैं उन्होंने यह कहा। और यह कहकर हर कोई खुद को दूसरे से ज्यादा चाहने लगा। और वास्तव में वे कुछ और कर भी नहीं सकते थे। और सभी अपने व्यक्तित्व और अधिकारों से इतने ईर्ष्यालू बन गए कि उन्होंने दूसरों के अधिकारों को रौंदना शुरू किया और इसे पाकर उन्हें एक गौरवपूर्ण अनुभूति हुई। फिर गुलामी आई यहाँ तक कि स्वच्छ गुलामी को भी कमजोरों ने ताकत के अधीन समर्पण कर दिया इस शर्त पर कि वे अपने से कमजोर के साथ भी ऐसा ही करेंगे। फिर योगी लोग आए जिन्होंने इन बिलखते लोगों से गौरव की बात की, और उनकी शर्म और सद्भाव के हानि की बात की। फिर वे हँसे और पथराव शुरू हुआ। मंदिरों की दहलीज पर खून बहा। फिर ऐसे लोग आए जिन्होंने

सोचा कि कैसे सभी को एक किया जाए कि आत्मप्रेम के साथ ही कोई दूसरों को हानि न पहुँचाए। और सभी एक सामंजस्यपूर्ण समाज में एक साथ रह सकें। इस विचार पर नियमित झड़पें हुईं सभी सेनानियों को यह विश्वास था कि विज्ञान ज्ञान और आत्म संरक्षण अंत में पुरुषों को एक सामंजस्य पूर्ण और तर्कपूर्ण समाज में एकजुट होने पर मजबूर कर देगा। और इसी क्रम में बुद्धिजीवियों ने अपना वर्चस्व स्थापित करना और उनसे असहमत विचारों को जो उनकी सोच में बाधा बन सकते थे कुचलना शुरू किया। आत्म संरक्षण की भावना कमजोर पड़ी और ऐसे लोग आगे आए जिन्होंने शून्य या अनंत में से कुछ चुना। और इस अनन्त संग्रह के लिए अपराध का सहारा लिया। जहाँ असफलता के मानी थे आत्महत्या। इस विनाश रूपी चिरस्थाई शांति के लिए सम्प्रदाय बढ़ा। और अंततः यह सभी अपने व्यर्थ परिश्रम से हार गए और उनके चेहरों पर पीड़ा नजर आने लगी। उन्होंने घोषणा की कि पीड़ा भी एक सौंदर्य है अर्थ तो तड़प में दुख में ही है। उन्होंने अपने गीतों में इस दुख का महिमामंडन किया। मैंने यह सब देखा पर मैं उन्हें शायद अब ज्यादा पसंद करने लगा तब से भी ज्यादा जब उन्हें कोई दुख कोई पीड़ा नहीं थी और वे मासूम और प्यारे थे। मैंने इस धरती को पसंद किया उससे भी ज्यादा जब यह स्वर्ग थी क्योंकि अब इसमें इन लोगों का दुख इनकी वेदना भी मिली हुई थी हाँ मैंने सिर्फ दुख से नाता जोड़ा पर केवल अपने लिए उन पर तो मैं तरस खाकर रोया। मैंने खुद पर तिरस्कार निराशा और दोषारोपण करते हुए अपने हाथ उनकी तरफ फैला दिए। मैंने उनसे कहा कि यह सब मेरी करनी है मेरे अकेले की। मैं ही उनके लिए झूठ भ्रष्टाचार और भी कई बुराइयाँ लेकर आया मैंने उनसे विनती की कि मुझे सूली पर चढ़ा दें और उन्हें सूली बनाना भी सिखाया। मेरे पास इतनी शक्ति नहीं थी कि मैं खुद को मार सकता इसलिए मैं उनके हाथों प्रताड़ित होना चाहता था। मैं पीड़ा के लिए तरस रहा था मेरी इच्छा थी कि मेरे खून की आखिरी बूंद तक इस पीड़ा में बह जाए। पर वे मुझ पर हंसे और अंत में मुझे पागल समझने लगे। कि उन्हें वही मिला जो वे चाहते थे और अंजाम इसके सिवा कुछ और हो भी नहीं सकता था। और फिर उन्होंने यह घोषित कर दिया की मैं खतरनाक होता जा रहा हूँ और यदि मैंने अपनी जबान पर काबू न पाया तो मुझे

पागलखाने में बंद कर दिया जाए और तब मेरे मन में ऐसा शोक छा गया कि मेरा दिल सिहर उठा और मुझे लगा कि मैं मर रहा हूँ और फिर मैं जाग उठा।

सुबह हो चुकी थी यानी दिन का उजाला तो नहीं हुआ था तकरीबन 6:00 बजे का समय था मैं उसी आराम कुर्सी पर जागा था। मोमबत्ती जल चुकी थी। कप्तान के कमरे में सब सो रहे थे और सब तरफ सन्नाटा था। जो की हमारे फ्लैट में दुर्लभ था। पहले पहल तो मैं बड़े आश्चर्य से उछल पड़ा। ऐसा मेरे साथ पहले कभी नहीं हुआ था बल्कि इसका लेशमात्र भी नहीं। मतलब मैं अपनी आराम कुर्सी पर इस तरह कभी नहीं सोया था जब मैं खुद में खड़ा हुआ और सामने अपनी भरी हुई रिवॉल्वर देखी तो तुरंत उसे दूर फेंक दिया। आह जीवन मैंने हाथ उठाकर उस अनन्य सत्य को पुकारा शब्दों से नहीं बल्कि आंसुओं से परमानंद। इस अतुलनीय परमानंद ने मेरी आत्मा को भर दिया, हाँ जीवन से। अच्छी खबरों का संचार। और मैंने अपने जीवन की समस्या को हल कर लिया था। मैं ये खबर सब तक पहुंचाऊंगा यह सब जो मैंने देखा है अपनी आँखों से और इसकी सारी महिमा जो मैंने महसूस की है।

और तब से मैं प्रचार कर रहा हूँ। इसके अलावा मैं उन सभी से प्रेम करता हूँ जो किसी और से ज्यादा मुझ पर हंसते हैं। ऐसा क्यों है मैं नहीं जानता और समझा भी नहीं सकता पर ऐसा ही है। मुझे बताया गया कि मेरे विचार स्पष्ट नहीं और मैं भ्रमित हूँ और अगर मान भी लूँ तो क्या यह सच है? मैं अस्पष्ट और भ्रमित हूँ और जैसे जैसे समय बीतता जाएगा या विश्वास और बढ़ता जाएगा। और निश्चित रूप से प्रचार का सही तरीका मालूम होने तक मैं कई गलतियाँ भी करूँगा मुझे सही सही नहीं पता क्या शब्द बोलने है क्या करना है। आखिर काम भी तो मुश्किल है। मुझे यह सब दिन के उजाले सा साफ दिखाई देता है पर सुनो कौन है जो गलतियाँ नहीं करता आखिर सभी का लक्ष्य भी तो एक नहीं है। फिर चाहे वह साधु हो या डाकू। बस रास्ते अलग अलग है। यह सच्चाई पुरानी है लेकिन यह सच नया है मैं इतना गलत नहीं हो सकता, मैंने सच देखा है। मैंने देखा है कि लोग जीने की आशा को खोए बिना प्रसन्न रह सकते हैं। मैं इस बात

को नहीं मानूंगा की बुराइ मानव जाति की एक सामान्य बात है और मेरे इस विश्वास पर ही सब हंसते हैं। पर मैं उन्हें कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मैंने सच को देखा है ऐसा नहीं की मैंने इसको खुद गढ़ा बल्कि मैंने इसे देखा और इस के जीवित स्वरूप ने मेरे प्राणों को सदा के लिए भर दिया। मैंने इसे इतनी पूर्णता में देखा कि मुझे इसके असंभव होने पर विश्वास नहीं होता। और फिर इसलिए मैं गलत नहीं हो सकता। मैं शायद कहीं फासलों या दूसरी ज़बान में बात करूँ कुछ देर तक पर यह जीवंत छवि हमेशा मेरे साथ रहेगी और मेरा मार्गदर्शन करती रहेगी। मैं साहस और उल्लास से भरा हुआ हूँ और अगर हजारों साल तक यूं ही रहना पड़े तो भी मैं पीछे नहीं हटूंगा। पता है पहले मैं इस बात को छुपाना चाहता था कि मैंने उन्हें भ्रष्ट बनाया। लेकिन यह एक भूल थी फ़ोन में नाम मेरी पहली गलती। और सच्चाई ने मुझे जगाया और बताया कि मैं झूठ बोल रहा था और मुझे बचा लिया। लेकिन अब स्वर्गीय व्यवस्था को कैसे स्थापित करूँ मैं नहीं जानता क्योंकि इसको शब्दों में पिरोना भी मुझे नहीं आता। सबसे प्रमुख सबसे जरूरी अल्फ़ाज़ पर कोई बात नहीं मैं जाऊंगा मैं बोलूँगा मैं छोडूंगा नहीं हालांकि मैं अपने खुद के देखे को भी शब्दशः बयां नहीं कर सकता। लेकिन गद्दार झूठे लोग यह नहीं समझते। यह एक सपना था पर वे इसे धोखा, मतिभ्रम कहते हैं।

जैसे इसका बस यही मतलब हो और उन्हें गर्व है कि सपना है। सपना क्या है और क्या हमारी जिंदगी भी एक सपना नहीं है। मैं आगे कहूंगा मान लीजिए यह स्वर्ग कभी नहीं आएगा जैसा कि मैं समझता हूँ फिर भी चलता रहूंगा और इसका प्रचार करता रहूंगा। कितना सरल है कि 1 दिन में 1 घंटे में सब कुछ एक ही बार में व्यवस्थित किया जा सकता है। सबसे जरूरी अपनी ही तरह दूसरों से भी उतना ही प्रेम करना यही मुख्य बात है। और यही सब कुछ है और कुछ नहीं है। आपको पता चल जाएगा कि एक ही बार में सब कुछ कैसे व्यवस्थित किया जाए और यह वैसे भी कितना पुराना सच है जिससे करोड़ों बार दोहराया गया है। पर फिर भी यह हमारे जीवन का हिस्सा नहीं बना है जीवन की चेतना जीवन से भी ऊंची है खुशियों को पा जाने का ज्ञान खुशियों से भी बेहतर है। यही है सब जिसके लिए संघर्ष करना चाहिए। और मैं करूँगा अगर सभी चाहे

यह एक बार में सिद्ध हो सकता है और आखिर मैंने उस बच्ची को ढूंढ़ निकाला। अब मैं आगे बढ़ता रहूंगा।

संदर्भ - Достоевский, Ф.М., *Сон смешного человека*. http://az.lib.ru/d/dostoewskij_f_m/text_0330.shtml [10.01.2022]

पुश्किन पर भाषण

प्रथम भाग

मीनू भटनागर एवं राधा मोहन मीना
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

नीचे मुद्रित पुश्किन के संदर्भ में मेरे भाषण पर मेरी व्याख्यात्मक टिप्पणी

पुश्किन और उनके महत्व के बारे में मेरा भाषण 8 जून 1880 को रूसी साहित्य प्रेमियों के समाज की एक महत्वपूर्ण बैठक में, लोगों की भारी उपस्थिति के सम्मुख दिया गया था, जिसने बड़ी महत्वपूर्ण छाप छोड़ी थी। इस भाषण का उल्लेख आगे किया गया है और जिसका विषय 'लेखक की डायरी' के वर्तमान अंक का आधार है (वर्ष 1880 मे प्रकाशित यह एकमात्र अंक था और अगर स्वास्थ्य ने मेरा साथ दिया तो, मुझे यह उम्मीद है की वर्ष 1881 में 'लेखक की डायरी' को फिर से प्रकाशित करूँगा)। इवान सिर्गेइविच अक्साकोव ने अपने बारे में कहते हुए जिक्र किया था कि हर कोई उन्हे स्लावोनाफील् समाज का अगुआ मानता है। उन्होंने घोषित किया कि मेरा भाषण "एक घटना का गठन" करता है। इस बात को मैं अपना गुणगान करने के लिये नहीं बल्कि मुझे यह स्पष्ट करना है कि यदि मेरा भाषण महत्वपूर्ण है तो इसका एक और केवल एक विशेष आधार है जिसे मैं आगे रेखांकित करूंगा। इसी कारणवश मैं यह भूमिका लिख रहा हूँ। वस्तुतः मैं, रूस के लिये पुश्किन के महत्व को निम्नलिखित चार बिंदुओ मे स्पष्ट करना चाहूँगा।

1. यह कि पुश्किन वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होने अपनी गहन अंतर्दृष्टि, प्रतिभाशाली बुद्धि और निर्मल रूसी मन से हमारे ऐतिहासिक रूप से जमीनी हकीकत से कटे हुए समाज को ना केवल खोजा; बल्कि सबसे महत्वपूर्ण और प्रबुद्धवर्गीय सामाजिक कुरीतियाँ, जिससे समाज आंदोलित हो रहा था, को चिह्नित भी किया।

   उन्होनें मनुष्य के, हम जैसों के, उस नकारात्मक व्यक्तिव के चिंतित और अशांत रूप को चिह्नित करके स्पष्ट रूप से हम सबके सामने रख दिया, जिसे अपनी मिट्टी, अपनी देशज शक्ति, रूस में एवं खुद पर कोई विश्वास नही है, (अर्थात अपना समाज, अपना प्रबुद्ध समाज वर्ग, जो खुद अपनी ही मिट्टी में पैदा हुआ है)। अंततः वह सब कुछ नकारनेवाला, दूसरों की ईच्छानुसार काम ना करने वाला तथा असहनीय दर्द सहनेवाला है। बाद में अलेका और अन्येगिन ने हमारी साहित्यिक कृतियों में अपने जैसे अनेक पात्रों को जन्म दिया। उन्हीं के साथ-साथ पिचोरिन, चिचकोव, रूदिन, लाव्रेस्की, वाल्कोन्स्की (लेव टोल्स्टोय के 'युद्ध और शांति') और अनेक ऐसे पात्रों नें अपनी उपस्थिति से पुश्किन के द्वारा रखे गये मौलिक विचार की सत्यता की गवाही दी। उन्हें शतः शतः नमन, उनकी विशिष्ट प्रतिभा और तीक्ष्ण बुद्धि को नमन जिन्होने पीटर के महान सामाजिक सुधार के बाद से हमारे यहाँ समाज मे फैले सबसे व्यथित करने वाले दर्द को चिह्नित किया। हम उनके ऋणी हैं कि उन्होंने इस बीमारी को पहचाना और उसका कुशल निदान किया। आप ही तो वह पहले व्यक्तित्व थे जिन्होने हमें सांत्वना और - वह बड़ी उम्मीद दी कि यह बीमारी घातक नहीं है और रूसी समाज को इससे बचाया जा सकता है, पुनर्जीवित किया जा सकता है, यदि दिल से हम समाज की सच्चाई का साथ देने लगे और, 2) वह पहले व्यक्तित्व थे (बिल्कुल पहले, जिनसे पहले कोई नहीं था) जिन्होंने सबसे पहले हम लोगों को रूसी सौन्दर्यता के कलात्मक पहलुओं को दिखाया, उनको पुनर्व्यवस्थित किया एवं हमारी मिट्टी और समाज में खोजा, जो कि रूसी हृदय से स्पष्ट रूप से

खत्म हो चुकी थी। वह, तत्याना, एक सच्ची रूसी महिला जैसे उन ऐतिहासिक पात्रों से रूबरू कराते हैं जो त्रियाचरित्र नहीं करती है। उदाहरण के लिए - बोरिस गादुनोव में इनोक और दूसरे पात्र, कप्तान की बेटी में रोजमर्रा के विषय और दूसरे अनेक पात्र जो उनकी कविताओं, कहानियों, संस्मरणों, यहाँ तक कि पुगाचोव विद्रोह के इतिहास में भी चित्रित हैं। महत्वपूर्ण बात जिस पर यहाँ अवश्य ही बल देना चाहिए, वह यह है कि रूसी मानस का सौम्य भाव और उसका चित्त पूर्णतः आमजन की प्रकृति से लिया गया है। यहाँ यह बात अवश्य ही बताने की जरूरत है कि पुश्किन ने इस सौंदर्यभाव का चित्रण ना ही हमारी समसामायिक संस्कृति से, ना ही यूरोप की शिक्षा-दीक्षा से, जैसा कहा जाता है (जो हमारे यहाँ, एक शब्द में बयाँ करू तो, कभी नहीं थी) और ना ही अपनायी हुई यूरोपीय विचारधारा के विकृत स्वरूप में खोजा था, बल्कि उन्होंने तो इसे रूसी जनमानस (और केवल उसी) में खोज निकाला था। इस आधार पर एक बात मैं अवश्य ही दोहराना चाहता हूँ कि व्यथा को पहचान कर उन्होने उसका एक उपयुक्त निदान दिया - "लोक शक्ति में विश्वास करो और केवल उसी से उद्धार की आशा करो तो तुम बच जाओगे"।

पुश्किन के रास्ते पर चलकर ऐसा परिणाम ना मिले यह हो नहीं सकता।

3) तीसरा बिंदु, जिस पर मैं पुश्किन के महत्व को लेकर चर्चा करना चाहता हूँ; वह है, उनका विशेष चरित्र जो उनके अलावा किसी और में या कहीं और भी नहीं मिलता। यह उनकी कलात्मक निपुणता है, उनकी एक ऐसी योग्यता है जो वैश्विक संवेदना को समेटे हुए दूसरे देशों की प्रतिभाओं में संपूर्ण रूप से परिलक्षित होती है तथा अपने आप में पूर्ण है। मैंने अपने भाषण में बोला था कि यूरोप में महान साहित्यिक प्रतिभाएं, जैसे शेक्सपीयर, सिर्वान्तेस, शिल्लेर, वैश्विक क्षितिज पर विराजमान थे, पर हाँ, पुश्किन के अलावा यह सब उनमें से किसी में नहीं दिखता है। यहाँ पर मेरा मतलब किसी से सहानुभूति दिखाना नहीं है परंतु स्पष्टतः आश्चर्यरूप में उसका अवतरित होना है। मैं पुश्किन के मूल्यांकन में उनकी उस योग्यता को अनदेखा नहीं कर सकता, खास तौर पर

जो उनकी प्रतिभा की विशिष्टता है। जो विश्व के महान साहित्यकारों में से सिर्फ उन्ही के पास है। यही अनोखापन उनको विश्व के महान साहित्यकारों से अलग करता है। मैंने शेक्सपीयर और शिल्लेर जैसे महान यूरोपीय प्रतिभाओं को कमतर आँकने की कोशिश नहीं की है। मेरी बात से ऐसा मूर्खतापूर्ण निष्कर्ष निकालने का काम तो कोई मूर्ख ही कर सकता है। शेक्सपीयर द्वारा अनंत समय के लिये प्रतिपादित किये गये सार्वभौमिकता, (बोधगम्यता) और आर्य प्रजाति के शांतिपूर्ण चरित्र के अनकहे पहलुओं पर मेरा तनिक भी संदेह नहीं है। और, हाँ; यदि शेक्सपीयर ने ओथैलो जैसे पात्र को संभवतः वेनिस के "माव्र" ढंग से दिखाया होता, ना कि अंग्रेज के रूप में तो उसको एक देशज क्षेत्रीय रंग ही मिलता, वैश्विक महत्व की उसकी प्रकृति तो वैसी की वैसी ही बनी रहती, इटालियन के रूप में भी उसको वैसा ही दिखाया होता वो भी उतनी ही शक्तिशाली अभिव्यक्ति से जो वह कहना चाहता होगा। दोहरा रहा हूँ कि पुश्किन की विशिष्टतम योग्यता का दूसरे देशों की प्रतिभाओं में पुनर्जन्म को लेकर यहाँ मैं शेक्सपीयर और शिल्लेर जैसी प्रतिभाओं के वैश्विक महत्व को कम नहीं आँकना चाहता बल्कि केवल मेरी इतनी इच्छा है कि उनकी खुद की जो क्षमता है और उसकी परिणित के रूप में भविष्य के जो महान संदेश हमारे लिये हैं उस पर ध्यान दिलाऊँ, **4)** यह योग्यता पूरे रूस और पूरे देश की योग्यता है। पुश्किन तो इसे केवल अपने सभी लोगों से साझा करते हैं। वह, कला के एक पारखी के रूप में कम से कम अपनी कृतियों और साहित्यकार के रूप में इस कला के सर्वश्रेष्ठ प्रतिपादक हैं। हमारे लोगों ने तो वैश्विक संवेदना और भाईचारे भरी इस प्रवृत्ति को अपने हृदय में बैठाये रखा है और कई बार पिछले दो सौ वर्षों में पीटर महान के सुधारों के बाद से इसे प्रकट भी किया है। अपने लोगों के इस क्रियाकलाप को प्रकट करते हुए मैं उस तथ्य को नहीं नकार सकता, जिसमें शायद हमारे भविष्य का महान सुख-चैन छिपा हो और जो आगे एक महान या मानें तो, महानतम आशा की किरण हो सकती है। सबसे बड़ी बात जिसको मैंने व्यक्त किया वह हमारा प्रयास यूरोप के संदर्भ में, जो अपने सभी उतार चढ़ाव के बावजूद ना केवल न्यायोचित था, बल्कि सामाजिक भी था। यह कोशिश पूरी तरह जन मानस की कोशिश के साथ मेल खाती है और अंत में निस्संदेह इसका

अपना महत्वपूर्ण उद्देश्य है। मेरे संक्षिप्त, बहुत ही संक्षिप्त वक्तव्य में, निश्चित रूप से, मैं अपने विचार को हो सकता है पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर पाया हूँ, परंतु कम से कम जो कुछ मैंने कहा, वह ऐसा लगता है कि अवश्य ही स्पष्ट है। मेरे द्वारा बोले गये शब्दों पर नाराज होने की कोई आवश्यकता नहीं, "हो सकता है कि अंत में हमारी गरीब भूमि दुनिया को एक नया विचार दे"। यह सोचना भी हास्यास्पद है। दुनिया को एक नया विचार देने से पहले "हमें खुद को आर्थिक, वैज्ञानिक और सामाजिक रूप से विकसित होने की जरूरत है, और उसके बाद ही हम उन "नए विचारों" को विकसित (जैसे की) संगठनों को बताने का सपना देख सकते हैं, जैसे यूरोप की जनता करती है"। मैं अपनी बात पर ढृढ हूँ और मैं रूसी जनमानस की तुलना पाश्चात्य लोगों की वैज्ञानिक और आर्थिक उपलब्धियों से करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मेरे कहने का सहज रूप से यही मतलब है कि हो ना हो रूसी जनमानस या उसकी प्रतिभा दूसरों से अधिक हो जो मानव जाति को संघीय विचार से एक कर दे। वह भाईचारे की परम भावना से ओतप्रोत हो और वैमनस्य को एक तरफ करते हुए अपनी विशिष्टता में एकता लिये हुए मतभेदों को उतार फेंके।

यह हमारी ना ही एक आर्थिक विशेषता है और ना ही कोई और दूसरी, यह तो केवल एक नैतिक विशेषता है। कौन ऐसा होगा जो इस बात से असहमत हो या इस पर बहस करे कि रूसी जनमानस में यह विशेषता विद्यमान नहीं है? कोई कह सकता है कि रूसी लोग वो पिछड़े लोग हैं जो केवल आर्थिक शक्ति बनने के लिये ही सेवारत रहते हैं या हमारे उस यूरोपीय बुद्धिजीवी समाज जिसका हमारे अपने समाज पर काफी प्रभाव है एवं उसके उन्नयन के बारे में लगे हैं वह निर्जीव प्राणी है जिनसे और किसी भी प्रकार की आशा नहीं की जा सकती और ना ही उनसे किसी और प्रकार के दृष्टिकोण की उम्मीद रखी जा सकती है? खैर, इस पर तो बहुत लोगों का विश्वास है परंतु मैंने तो कुछ और ही बोलने का जोखिम उठाया है। पुनः कह रहा हूँ कि मैं "अपनी इस कपोल कल्पना" को निश्चित रूप से साबित नहीं कर सकता, जैसा कि मैंने सभी पहलुओं और परिस्थितियों को ध्यान रखते हुए व्यक्त भी किया था क्यूँकि इसे नजरअंदाज नहीं कर सका। यह साबित करना एकदम बेतुका है कि हमारी बेकार और बंजर भूमि तब तक अपने अंदर

उन महान उत्कंठाओं को पैदा नहीं कर सकती जब तक हम आर्थिक और सामाजिक रूप से पश्चिमी देशों के जैसे ना हो जाऐं। आत्मा के नैतिक निधान, कम से कम अपने मूल अर्थ के लिए आर्थिक ताकत पर निर्भर नहीं होती है। हमारी कंगाल और अभावग्रस्त धरती अपने उच्च वर्ग के अलावा, पूरी तरह एक है। हमारी भूमि की अस्सी मिलियन जनसंख्या ऐसी आध्यात्मिक एकता का प्रतिनिधित्व करती है जो संभवतः ना ही यूरोप में और ना ही कहीं और देखने को मिलती है। इसीलिये, ऐसा नहीं कहा जा सकता कि हमारी भूमि बंजर है, और अधिक कठोर शब्दों में बोलें तो दरिद्र है। इसके विपरीत, यूरोप में, इसी यूरोप में, जहाँ दौलत ही दौलत है, वहाँ सभी यूरोपीय राष्ट्रों की सामाजिक नींव खोखली हो गई है, और, शायद, कल यह हमेशा के लिए बिना किसी निशान के ढह जाएगी और बदले में कुछ अनसुना नया आयेगा जो पहले से बिल्कुल भिन्न होगा। और यूरोप द्वारा जमा की गयी सारी दौलत उसको ध्वस्त होने से नहीं बचा पायेगी, क्यूँकि "यह दौलत भी छण भर में लुप्त हो जाएगी"। इसी बीच यही उनकी कमजोर और संक्रमित नागरिक व्यवस्था हमारे लोगों के लिए आदर्श के रूप में प्रतीत होती है जिसके लिए लोगों को जरूर ही प्रयास करना चाहिए, और इस आदर्श को प्राप्त करने के बाद ही यूरोप से अपनी बात करने का साहस करना है। हम यह भी मानते हैं कि प्रेम और सामंजस्य की भावना की शक्ति को इस वर्तमान आर्थिक गरीबी के बावजूद समायोजित किया जा सकता है। इसे संरक्षित और समाहित किया जा सकता है उस तरह कि गरीबी में भी जैसा कि बातु खान के आक्रमण के बाद या *पाग्रोमा स्मूतनोवो व्रेमिनी* (सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में घोर राजनीतिक-सामाजिक आपदा) के बाद हुआ था जब रूस को समाज की केवल और केवल सर्वएकता की भावना ने बचाया था। इस प्रकार, यदि मानवता से प्रेम करने के अधिकार और एकात्म भाव के लिए, दूसरों से प्यार करने के भाव के लिए जो कि हमारे जैसे नहीं हैं, बहुलतावादी सिंद्धांत में विश्वास करने के लिए, जिससे कि एक होकर सबकुछ हासिल कर सकें और दूसरों को तुच्छ समझ कर जिसे जब चाहें तब मसल दें (यूरोप में इस विचार का समर्थन करने वाले लोग विद्यमान हैं!), वास्तव में यदि इनको हासिल करने के लिये यह सब जरूरी है, तो फिर से कहता हूँ - प्रमुख रूप से समृद्ध

राष्ट्र बनने या अपने आप को यूरोपीय बनाने, का मतलब, क्या यूरोपीय व्यवस्था की नकल हमें दासों की तरह करनी पड़ेगी (जो कल को यूरोप में भी नहीं रहेगी)।? क्या वाकई रूसी समाज को ना तो एक राष्ट्र के रूप में बढ़ने दिया जाएगा ना ही उसे अपनी प्राकृतिक शक्ति विकसित करने की इजाजत दी जाएगी। पर गुलाम की तरफ यूरोप की नकल करता रहे? फिर रूसी समाज की अंतरात्मा का क्या होगा? क्या ये सज्जन लोग रूसी समाज की अंतरात्मा को समझते है? फिर भी प्राकृतिक विज्ञान के बारे में बात करते हैं! “समाज तो इसकी अनुमति नहीं देगा” - किसी संदर्भ मे लगभग दो साल पहले एक वार्ताकार ने कट्टर यूरोपियन से ऐसा कहा था। “ऐसे समाज को बर्बाद कर दें!” यूरोपियन ने बड़ी शांति और सौम्यता से उत्तर दिया। और वह कोई ऐसा-वैसा नहीं था, बल्कि हमारे बुद्धिजीवी वर्ग का एक प्रतिनिधि था। यह किस्सा सच है। इन चार बिंदुओं में, मैंने हमारे लिए पुश्किन के महत्व को रेखांकित किया है, और मैं फिर से कहता हूँ की मेरे भाषण ने एक छाप छोड़ी है।

भाषण की संक्षिप्तता और अपूर्णता के बावजूद, मैंने प्रबल तथ्य सामने रखे हैं। मैं यह कहने का साहस करता हूं की उसकी यह छाप ना उसकी खूबी से (मैं इस पर जोर देता हूं) ना अपनी वाक्-पटुता से (मैं अपने सभी विरोधियों से सहमत हूं और इसकी बड़ाई नहीं कर रहा), बल्कि अपनी ईमानदारी से है। लेकिन, "घटना" क्या थी, जैसा कि इवान सर्गेइविच अक्साकोव ने कहा था? सार यह है की स्लावोफाइल्स, या तथाकथित रूसी पार्टी ने (हे भगवान, हमारे पास "रूसी पार्टी" है!), पाश्चात्य विचारधारा समर्थकों के साथ मेल-मिलाप की दिशा में एक बड़ा और निर्णायक कदम उठाया; स्लावोफाइल्स ने यूरोप के लिए पाश्चात्य विचारधारा समर्थकों के प्रयास की एवं परम आकांक्षाओं और निष्कर्षों की पूरी वैधानिकता की घोषणा की, और इस वैधानिकता को हमारी विशुद्ध रूप से लोकप्रिय रूसी अभिलाषा के माध्यम से समझाया, जो लोगों की भावना से मेल खाती है। आकांक्षाओ को न्यायोचित बताकर, चाहे वह ऐतिहासिक आवश्यकता की बात करके या ऐतिहासिक दुर्भाग्य को बताकर, क्योंकि अंततः और परिणामस्वरूप यदि कभी उसका सार निकाला गया, तो वह यही मतलब बतायेगा कि पाश्चात्य विचारधारा के समर्थकों ने रूसी भूमि

और उसकी उन्नति में उतना ही योगदान दिया जितना मूल रूसी लोग दे सकते थे। जो रूसी बड़े ही तन्मयता से अपनी मातृभूमि को प्यार करते थे और कुछ हद तक, हो सकता है, द्वेष भाव से, उसकी अभी तक उन सभी "पश्चिमी विचारधारा समर्थक रूसी लोग" की महत्वाकांक्षाओं से संरक्षित करते रह रहे थे। अंततः एक बात सबको स्पष्ट हो कि दोनों पक्षों के मध्य जो भी जटिलता या तीखी नोकझोंक थी वह अभी तक एक बड़ी गलतफहमी के कारण से थी। स्ल्वयानाफिल्स्त्वा के प्रतिनिधि, अभीं, यहीं पर मेरे भाषण के बाद उसके सभी परिणामों को अपना पूर्ण समर्थन दें, तो, कदाचित्, यह भी एक घटना हो सकती है। और अब मैं अपना एक बयान देना चाहूँगा, हालाँकि इसको मैंने अपने शुरू के भाषण में बोला था कि - चाहे इस नये कदम के सम्मान के लिये हो (यदि सम्मान वास्तव में एक अकाट्य शांति की चाह है), या चाहे इस नयी उत्कृष्टता की बात हो तो यह किसी एक से संबंधित नहीं है, यह पूरे स्लव्यानाफिल्स्तावा से, सभी लोगों से और हमारे पार्टी के विधान से जुड़ी है। स्लाव्यानाफिल्स्त्वा से सम्बंधित सभी लोगों को यह स्पष्ट था की जो विचार मैंने आप लोगों के सम्मुख रखा था यदि वह अब तक व्यक्त नहीं किया गया था तो उनके द्वारा इंगित जरूर किया गया था। मैं तो उचित समय पर भाँप गया। मेरी अब तक की बातों का निचोड़ यह है कि यदि पाश्चात्यवादी हमारे निष्कर्ष को स्वीकारते हैं और उस से सहमत होते हैं तो अभी दोनों पक्षों की गलतफमियां दूर हो जाएँगी। पाश्चात्यवादी और स्लाववादियों के पास बहस करने का कोई मुद्दा ही नहीं होगा, जैसा की इवान सिर्गेइविच अक्साकव ने कहा था की अब सब कुछ स्पष्ट है। इस दृष्टि से निःसंदेह मेरा भाषण एक "घटना" ही होता। पर अफसोस, एक पक्ष ने इस शब्द "घटना" को सच्चे मन से स्वीकार किया, लेकिन क्या दूसरा पक्ष इसे स्वीकार करेगा और यह एक विचार मात्र ही नहीं रहेगा, यह बिल्कुल दूसरा मसला है।

उन लोगों नें मुझसे उसी जज्बे और जिंदादिली से हाथ मिलाया, जैसे स्लाववादियों नें, और मेरे भाषण को एक ओजस्वी भाषण करार दिया और अनेकोबार मेरे ही शब्दों को दोहराते हुए उसकी तारीफ के पुल बांधे।

परंतु डरता हूँ, सचमुच में भयभीत हूँ कि क्या वाकई यह 'जल्दबाजी' में तो नहीं कहा गया था! मुझे उस बात का डर नहीं है कि वे लोग मेरे भाषण के ओजस्वी होने की अपनी राय को बदल लेंगे। हालाँकि मै खुद जानता हूँ कि मेरा भाषण उतना भी ओजस्वी नहीं था कि उन लोगों के झांसे में आ जाऊँ इसलिए मैं तहे दिल से माफी माँगता हूँ की वे मेरी प्रतिभा से मायूस हुए। एक बात और, हालाँकि, ऐसा भी हो सकता है कि थोड़ा बहुत सोच विचार करने के बाद पाश्चात्यवादी कुछ इस प्रकार बोलें (एक बात नोट कर लें कि मैं उन लोगों के लिये नहीं लिख रहा हूँ जिन्होनें मुझसे हाथ मिलाया था, बल्कि मैं सभी पाश्चात्यवादियों के लिए सामान्य तौर पर यह कह रहा हूँ) - "हाँ, हो सकता है कि पाश्चात्यवादी बोलेंगे कि (सुनिये, सिर्फ 'शायद' और कुछ नहीं) - आप लोग बहुत अधिक बहस और तूँ-तूँ मैं-मैं करने के बाद इस बात पर सहमत हुए कि हमारी आकांक्षा यूरोप के प्रति सही और वैध थी और आपने इस बात को भी माना कि हमारा पक्ष भी सही था और इसीलिए आपने हमारे प्रति नरम रुख अपनाया। हम आपकी स्वीकृति को दिल से कबूल करते हैं और आपको बताने के लिए उत्सुक हैं कि आपके दृष्टिकोण से यह इतना भी बुरा नहीं है, अर्थात, अंततः आपके कुछ विचारों पर, हालाँकि जिनको हमने कभी भी नकारा नहीं, सिवाय हमारे उन कुंठित विचारों के, जिनका ना तो हम उत्तर देना चाहते हैं, ना दे सकते हैं...। लेकिन, एक बात और सामने आयी है कि हमारे बीच पुनः एक नई रूकावट सी आ गई है जिसे अतिशीघ्र स्पष्ट करना आवश्यक हो गया है। तथ्य यह है कि आपकी स्थिति, आपका निष्कर्ष इस बारे मे की हमारी आकांक्षाएँ कथित रूप से लोगों की भावनाओं के साथ मेल खाती थी और रहस्यमय तरीके से उनके द्वारा निर्देशित थीं, आपकी यह स्थिति अभी भी हमारे लिए संदेहजनक ही है, और इसलिए, हमारे बीच समझौता फिर से असंभव हो जाता है। जानते हो कि हम यूरोप, उसके विज्ञान और पीटर के सुधारों द्वारा संचालित थे, ना की जनता की आकांक्षाओं के अनुसार और अपनी जनता की भावनाओं को कभी महसूस नहीं किया। बल्कि, हमने इसे पीछे छोड़ दिया और जल्द ही इससे दूर हो गए। जितनी भी बात आप ने की है उन सबको संक्षेप में कहूं तो शुरुआत से ही हम अपनी-अपनी मर्जी से चले बिना रुसी लोगों की सार्वभौमिक जिम्मेदारी, मानव

जाति की सार्वभौमिक एकता और स्भाविक प्रवृति का अनुसरण किये हुए। रूसी लोगों के बीच, जब की काफी स्पष्ट रूप से बोलने का समय आ गया है, हम पहले की तरह केवल एक निष्क्रिय जनसमुदाय को देखते हैं, जिनसे हमें कुछ भी नहीं सीखना है, बल्कि, जो रूस के विकास की बेहतर प्रगति को रोकता है, और जिसको पूरी तरह से फिर से सृजित और खड़ा करना है - अगर यह असंभव है और यह व्यवस्थित रूप से भी कठिन है, कम से कम यंत्रवत्, यानी, उनको एक बार, हमेशा-हमेशा के लिए हमें सुनने के लिए मजबूर किया जाये। और इस आज्ञाकारिता को प्राप्त करने के लिए, अपने लिए एक नागरिक व्यवस्था को आत्मसात करना आवश्यक है जैसा कि यूरोपीय भूमि में है, जिसकी हमने अभी चर्चा की है। वास्तव में, हमारे लोग गरीब और बेतुके हैं, जैसा कि वे हमेशा से रहे हैं। उनके पास ना तो कोई चेहरा हो सकता है और ना ही कोई विचार। हमारे लोगों का पूरा इतिहास बेतुका है, जिसमें से अभी तक आपने क्या निष्कर्ष निकाला है भगवान् जाने, संयम से देखने के अलावा। यह आवश्यक है कि हमारे जैसे लोगों का कोई इतिहास नहीं होना चाहिए, और इतिहास की आड़ में उनके पास जो कुछ भी था, उसे पूरी तरह से घृणा के साथ भुला दिया जाना चाहिए। यह आवश्यक है कि केवल हमारे बुद्धिजीवी समाज का ही एक ऐसा इतिहास हो, जिसकी जनता को केवल अपने श्रम और शक्ति से सेवा करनी चाहिए। मुझे अनुमति दें, चिंता न करें और चिल्लाएं नहीं: उनकी आज्ञाकारिता की बात करते हुए, हम अपने लोगों को गुलाम नहीं बनाना चाहते हैं, हाँ, बिल्कुल नहीं! कृपया ऐसा ना समझे: हम इंसान हैं, हम यूरोपीय हैं, आप यह अच्छी तरह से जानते हैं।

इसके विपरीत, हम धीरे धीरे अपने नागरिकों को शिक्षित करने का, अपने देश को आगे बढ़ाने का इरादा रखते हैं, नागरिकों का स्तर बढ़ाकर, उनकी राष्ट्रीयता को फिर से परिभाषित करना, जिसका गठन नागरिकों को शिक्षित करने के बाद खुद ब खुद हो जाएगा। हम अपनी शिक्षा का आधार रखेंगे और फिर से शुरुआत करेंगे। जिसके लिए हमे अपने अतीत और उसके अभिशाप को नकारना होगा। जैसे ही हम समाज के किसी व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, उसी वक्त ही हम उसे यूरोप से अवगत कराते हैं, उसी वक्त हम उसको यूरोप से लुभाने लगते हैं, भले ही उसके जीवन, सभ्यता, पोशाक, पेय, नृत्य पर -

संक्षिप्त में कहें तो हम उसे पुराने जूते और क्वास पर, अपने पुराने गानों पर शर्मिंदा होने पर मजबूर कर देते हैं, जबकि उनमे से बहुत सारे सुंदर और लुभावने गाने हैं, लेकिन फिर भी हम उसे वॉड्विल धुन गाने के लिए मजबूर करते हैं चाहे आप उससे कितना भी नफरत करते हो। संक्षेप में कहें तो, अच्छे उद्देश्य के लिए, हम, अनेकों एवं विभिन्न साधनों की मदद से, सबसे पहले चरित्र की कमजोरियों पर कार्य करेंगे।, जैसा कि हमारे साथ हुआ था, और फिर लोग हमारे साथ हो जाएंगे। वह अपने अतीत से शर्मिंदा होगा और उसे श्राप देगा। जो भी अपने अतीत को श्राप देगा, वह हमारा ही हो जाएगा यही हमारा सूत्र है! जब हम लोगों का स्तर उठाना शुरू करेंगे तभी हम इसे पूरी तरह से लागू करेंगे। यदि लोग शिक्षा में अक्षम साबित होते हैं, तो यह लोगों की बर्बादी का कारण होगा'। तब यह स्पष्ट हो जाएगा की हमारे लोग अयोग्य, बर्बर हैं जिसे केवल आज्ञा पालन करने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए।

इसके लिए क्या कर सकते है: बुद्धिजीवी वर्ग और यूरोप में यही सत्य है, जबकि आपके यहाँ अस्सी मिलियन लोग हैं (किसलिए आप डींग मार रहे है), लेकिन इन सब लोगों को सबसे पहले, इस यूरोपीय सत्य की सेवा करनी चाहिए, क्योंकि और कोई सत्य ना तो है और ना हो सकता है। हम इतनी बड़ी संख्या से भयभीत नहीं होंगे। हमारा स्थायी निष्कर्ष यह है की वास्तविक रूप मे हम इसके साथ बने रहेंगे। आपके निष्कर्ष को स्वीकारने के बाद, हम आपके साथ विचार-विमर्श नहीं कर सकते, उदाहरण के तौर पर, ले प्रवोस्लावी जैसी अजीब चीजें के बारे मे और इसके विशेष महत्व को लेकर। हम आशा करते है कि आप हमसे यह मांग नहीं करेंगे, विशेष रूप से अब, जब यूरोप और यूरोपीय विज्ञान के सामान्य निष्कर्ष में नास्तिकता जो की प्रबुद्ध और मानवीय हैं, पर फिर भी हम यूरोप का अनुसरण नहीं कर सकते। और इसलिए, दिए गए भाषण का वह अंश, जिसमें आप हमारी प्रशंसा करते हैं, हम, शायद, कुछ अनुमोदन के साथ स्वीकार करने के लिए सहमत होंगे, और इसी तरह हम भी आपकी प्रशंसा करेंगे। परन्तु, भाषण का वह भाग जो आपसे और आपके उन सभी "सिद्धांतों" से संबंधित है - क्षमा करें, हम स्वीकार नहीं कर सकते ... " यह शायद एक दुखद निष्कर्ष है। मैं पुनः कहता हूँ: मैं इस

निष्कर्ष को न केवल उन पाश्चात्यवादियों के मुहँ पर कहने की हिम्मत करता हूं जिन्होंने मुझसे हाथ मिलाया, बल्कि उन सभी लोगों के सामने भी, जो सबसे प्रबुद्ध रूसी नेतागण एवं मूल रूसी लोग हैं, बावजूद इसके की उन माननीय और सम्मानित रूसी नागरिकों के अपने सिद्धांत हैं। लेकिन दूसरी तरफ, एक समूह, उन लोगों का एक समूह जो समाज से बहिष्कृत हैं एवं पाखण्डी हैं, आपके पाश्चात्यवाद का एक समूह, बीच के लोगों का समुह, विचार को उस राह पर घसीटता है, - यह सब "प्रवृत्तियाँ" बेतुकी हैं (और वे समुद्र की रेत की तरह हैं), इस तरह से निश्चित तौर पर या तो हमे बताएंगी और, शायद, बता चुकी है। जहाँ तक आस्था का सवाल है, मिसाल के लिए, यह पहले से ही एक प्रकाशन में कहा गया है, पूरी तरह से वाकचातुर्यता के साथ, कि स्लाववादियों का लक्ष्य पूरे यूरोप को परंपरानिष्ठ (ऑर्थडाक्सी) मे बदल देना है। लेकिन इन मनहूस विचारों को एक तरफ कर दें और हमारे यूरोपीयवाद के प्रमुख प्रतिनिधियों में विश्वास करें। अगर वे केवल हमारे आधे निष्कर्ष एवं उसमें हमारे विश्वास को स्वीकार करते हैं, तो इसके लिए वे सम्मान और महिमा के पात्र हैं, और हम उनसे आत्मीयता के साथ मिलेंगे। यहां तक कि अगर वे आधे भाग को स्वीकार करते हैं, अर्थात, वे यद्यपि रूसी आत्मा की स्वतंत्रता और व्यक्तित्व, उसके अस्तित्व की वैधता और उसके परोपकारी, सर्व-एकीकृत प्रयास को मानते हैं, तब भी बहस करने के लिए लगभग कुछ भी नहीं बचेगा। तब वास्तव में मेरा भाषण एक नई घटना का आधार होता मैं आखिरी बार दोहराता हूं कि वह (भाषण) खुद एक घटना नहीं होता (वह इस तरह के नाम के योग्य नहीं है), लेकिन महान पुश्किन उत्सव ने इस घटना - जो हमारे उज्ज्वल भविष्य के लिए सभी शिक्षित और ईमानदार रूसी लोगों को एकजुट करे उसका काम किया है।

संदर्भ - Ф.М.Достоевский. Полное собрание сочинений, т. 26. Ленинград, Наука, 1984, сс.129-149 http://az.lib.ru/d/dostoewskij_f_m/text_0340.shtml [15.02.2022]

पुश्किन पर भाषण

द्वितीय भाग

आशुतोष आनंद एवं संदीप कुमार पांडेय
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

(आठ जून को रूसी साहित्य प्रेमियों की सभा में उद्धृत)

गोगल ने कहा था कि पुश्किन एक अद्भुत घटना हैं और शायद रूसी जनमानस के लिए वह एक विलक्षण प्रतिभा पुंज की तरह हैं।

यदि मैं इसमें कुछ और जोड़ूँ तो उनमें दैवीय शक्ति है। अवश्य ही उनकी उत्पति का कारण हम सभी के लिए, सभी रूसियों के लिए निःसंदेह कुछ ईश्वरीय है। पुश्किन हमारे स्वजागरण की शुरूआत में आए। हालाँकि हमारे समाज में पुनर्जागरण का आरम्भ पीटर महान के सुधारों के एक शताब्दी बाद ही हो चुका था, फिर भी पुश्किन हमलोगों के लिए अँधेरे में उजाला बनकर आए, एक नव ज्योति पुंज बने।

इस प्रकार पुश्किन हमारे लिए दैवीय शुभ संकेत हैं। मैं अपने इस महान कवि की कार्यशैली को तीन काल खंडों में देखता हूँ। पुश्किन के सृजनात्मक कृतित्व को ध्यान में रखते हुए इस बात को मैं एक साहित्यिक समीक्षक के रूप में नहीं कह रहा हूँ। हमारे लिए उनकी विलक्षण प्रतिभा के महत्व को लेकर जो विचार हैं उसे मैं केवल स्पष्ट करना चाहता हूँ और इसी बात को मैं निम्नलिखित कुछ बिंदुओं से समझता भी हूँ। इसी बीच, मेरे अनुसार एक बात जो ध्यान देने की है, वह यह कि पुश्किन के कृतित्व को स्पष्ट कालखंडों में बाँटना मुश्किल है। उदाहरण - अनेगिन का आरंभ, मेरे अनुसार, कवि के प्रथम रचनाकाल से संबंधित है और उसकी समाप्ति द्वितीय काल में तब होती है, जब पुश्किन ने अपना आदर्श अपनी मातृभूमि में खोजा और वे उसको सर्वथा आत्मसात कर

अपने दिल की अनंत गहराईयों से उससे प्रेम किए। ऐसा भी कहा जाता है कि पुश्किन अपनी रचना के आरंभिक काल में यूरोप के कुछ प्रमुख कवियों जैसे पार्नी, आन्द्रे शेनेर और खासतौर पर बाइनर[1] का अनुसरण करते हैं। हाँ, इस बात पर कोई मतभेद नहीं है कि यूरोप के कवियों ने उनकी प्रतिभा के विकास में महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है और यह छाप उनपर जीवनपर्यंत दिखती है। फिर भी पुश्किन की आरंभिक सभी कृतियाँ केवल दूसरों की अनुकरण मात्र ही नहीं हैं, बल्कि उन कृतियों में उनकी स्वयं की अपनी विलक्षण प्रतिभा की झलक दिखती है। किसी भी अनुकरण में ऐसा विशेष अनोखापन, विचित्रता, अद्‌वितीय निरालापन, दुःख की गहराई और स्वबोध, अभिज्ञता की गहरी पैठ व्यक्त नहीं होते हैं, जैसा कि पुश्किन ने उदाहरण के तौर पर त्सिगानी महाकाव्य में किया है, जिसे मैं पूर्ण रूप से उनके प्रथम रचना-काल से जोड़कर देखता हूँ। मैं पुश्किन के कृतित्व की रचनाशीलता या सृजनात्मकता पर कुछ नहीं बोल रहा हूँ, क्योंकि यदि उन्होनें किसी का अनुकरण किया होता तो ऐसी विलक्षणता उनकी कृतियों में नहीं दिखती। त्सिगानी महाकाव्य के नायक अलेका के रूप में एक प्रभावशाली रूसी चेतना बहुत पहले से ही व्यक्त होती रही है और जिसको बाद में अनेगिन के रूप में उस लयबद्‌ध सुसंगठित स्वरूप में प्रकट किया गया, जहाँ पर वही अलेका एक काल्पनिक स्वरूप में न होकर एक मूर्त, साकार और अनुभूत वास्तविकता में दिखता है। अलेका के रूप में पुश्किन ने एक ऐसे कष्ट सहन करने वाले ऐतिहासिक अशांत रूसी घुमक्कड़ को हमारे अलग हो चुके समाज में खोज निकाला, जिसके व्यक्तित्व का पदार्पण हमारे समाज के लिए एक अवश्यंभावी प्रस्तुति थी। उन्होने उसको केवल बाइरन की रचनाओं के आधार पर नहीं खोजा था। ऐसा विशुद्‌ध, सात्विक, मनमोहक ग्राह्य चरित्र अनंत काल से हमारी रूसी धरा को पदचिह्नित करती रही है। ऐसे रूसी घूमंतु बंजारे अभी तक अपने भ्रमण को जारी

[1] पार्नी, आन्द्रे शेनेर और बाइनर अठारहवीं शताब्दी के प्रसिद्‌ध यूरोपीय लेखक हैं।

रखे हैं और लगता है कि भविष्य में भी वे लंबे समय तक अपने इस चलन को समाप्त नहीं होने देंगे।

और यदि वर्तमान समय में वही बंजारे अपनों के झुंड में जाकर उनसे उनकी अपनी जीवन-शैली से सार्वभौमिक सत्य को खोजने की कोशिश न करें और हमारे रूसी प्रबुद्ध वर्ग के बेहूदा, भ्रमित और निर्रथक जीवन विशेष से दूर हटकर प्रकृति के धैर्यमयी आभ्यंतर में शरण न लें तो वे अवश्य ही समाजवाद में जकड़ जाएँगे, जो अलेका के समय में तो कम से कम नहीं था। इससे वह दूसरी जगह जाने पर नए विश्वास के साथ जुड़ेंगे, काम भी करेंगे, उस व्यथित मन से जिससे उनको विश्वास होगा कि, अलेका की तरह वे भी अपने शानदार कर्मों से अपने उन लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे जिससे केवल उन्हें ही नहीं, परंतु संपूर्ण ब्रह्मांड को शांति मिलेगी।

वास्तविकता तो यह है कि ऐसे रूसी घुमक्कड़ लोगों को सार्वभौमिक खुशी अचल ब्रह्मांड के आनंद में ही मिलती है, जबकि संतुष्टि प्राप्त करना उनके लिए आसानी से शांत होने के बराबर कम से कम तब तक तो नहीं है, जब तक ये बातें सैद्धांतिक हैं। ये ऐसे रूसी लोग हैं जो विभिन्न काल में अवतरित होते रहे हैं।

इस मनुष्य का जन्म, मैं फिर से कहूँगा, संभवतः पीटर महान के सुधारों की दूसरी शताब्दी के आरंभ में समाज की शक्तियों से बनकर, आमजन से निकला हुआ, हमारे प्रबुद्धवर्गीय समाज में ही हो चुका था। जो भी हो, पुश्किन के समय में या आज के समय में भी एक बहुत बड़ी रूसी प्रबुद्धवर्गीय आबादी, जो उस समय भी और उसी तरह आज के समय में भी चुपके-चुपके मुनाफा कमा रहे थे या हैं, चाहे वे नागरिक सेवाएँ, रेलवे की सेवाएँ, बैंकीय, सरकारी और सहकारी सेवाएँ हों, अथवा वे वैज्ञानिक प्रविधियों से जुड़े हों, या व्याख्याता के रूप में चाहे वे पूर्णकालिक, आंशिक या स्वशांति के लिए, किसी भी तरह पैसे कमा रहे हों वो सभी अपने मतलब साध रहे हैं, इन सभी को बिना किसी परिश्रम के, चाहे बंजारों की टोली में या आज-कल के समयानुकूल कोई और स्थान हो, उधर की तरफ भागना है। वे कोई एक दिलफेक रूसी स्वरूप को ओढ़कर, 'युरोपीय

समाजवाद के ढकोसले को पहनकर' बहुत अधिक उदारवादी बनते फिरते हैं - लेकिन यह केवल समय का तकाजा है। तब क्या जब उनमें से कोई एक अभी समस्या से ग्रसित होना भी शुरू न किया हो, परंतु दूसरा कोई दरवाजे की ड्योढ़ी पर आकर जोर-जोर से अपना सर पीटना शुरू कर दिया हो। अपनी-अपनी बारी आने पर सभी के साथ ऐसा होना अवश्यंभावी है, अगर हम सभी शांतिप्रिय वार्तालापों के साथ बीच-बचाव वाली डगर पर न चलें। और तब क्या जब सभी के साथ ऐसा न हो - केवल कुछ गिने-चुनों के साथ हो, केवल दस प्रतिशत लोग ही इससे अवसादित हों और बाकी बहुतायत बचे हुए को उसमें कोई शांति न दिखे। अलेका, सत्य ही, अभी तक अपने दुःखों को व्यक्त करने में असमर्थ रहता है। उसके लिए ऐसा कुछ अभी तक अमूर्त ही है, उसके लिए प्रकृति ही अभी तक चीत्कार का विषय है, उच्चवर्गीय लोगों के प्रति असंतोष है, मानवता की पैरबी है, उस सत्य के प्रति चीख है, जिसको किसी नें कहीं पर छोड़ दिया है, जिसको वह कैसे भी करके ढूँढ़ नहीं सकेगा। यहाँ झान-झाका रूस्सो[2] की कुछ झलक दिखती है। सत्य किसमें है, वह कहाँ मिलेगा, किस चीज से वह प्रकट किया जा सकेगा, और कब उसको सच में खोया गया, अवश्य ही वह स्वयं इनका उत्तर तो नहीं दे सकेगा, परंतु ईमानदारी से वह इससे आहत जरूर होता रहेगा।

इसी बीच एक अधीर और फैंटेस्टिक मनुष्य अपने बाहरी आडंबर से मुक्ति की लालसा रखता है, और ऐसा होना भी चाहिए। सत्य तो, जैसा कि पहले भी था, कहीं इस व्यक्ति की पहुँच से दूर है, कहीं किसी दूसरी धरा पर, यूरोप के देशों में, उदाहरणार्थ - उसके एक अटूट ऐतिहासिक साँचे-ढाँचे में, उसके सामाजिक और लोकजीवन के ताने बाने में। वह इस बात को कभी समझ नहीं पायेगा कि उसके स्वयं में ही सत्य विद्यमान है। इसे उसको कैसे समझना है? वह अपने स्वयं के घर को नहीं पहचानता, शताब्दियों तक वह अपने को अपनी ही मातृभूमि से दूर रखा, वह भूल गया कि कामकाज क्या है। वह

[2] झान-झाका रूस्सो - अठारहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक एवं लेखक।

संस्कार विहीन हो गया। उसने कूपमंडूक की तरह कूएँ में टर्र-टर्र करना सीखा। वह अपने रूसी समाज में बँटे चौदह स्तरीय सामाजिक वर्ग के ओहदे के अनुरूप अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने में लापरवाह और मनमौजी है। वह मिलाजुलाकर उस घास के तिनके के समान है, जिसको उसके जड़ से तोड़कर हवा में उड़ा दिया गया है। वह इसको महसूस भी करता है और सहता भी रहता है। अक्सर यह उसके लिए बहुत ही पीड़ाजनक होता है। और तब क्या जब, वह स्वयं ही, संभवतः बुर्जुआ समाज से जुड़कर, कदाचित् अविश्वसनीय ढंग से किसानों का मालिक बनकर, वह अपने आपको एक सज्जनता की वेश-भूषा में पिरोकर, छोटे-से ख्वाब को पाले 'स्वच्छंद समुदाय' के लिए भावविह्वल हो उनकी सेवा करने के लिए उसी प्रकार निकल पड़ा हो, जैसे बंजारों की टोली में भालुओं को प्रशिक्षित करने वाला मीश्का होता है। अवश्य ही एक स्त्री, एक 'गँवार स्त्री', जैसा कि किसी कवि ने ऐसा नाम दिया, उसको उसके दुःख से निवृत्त होने की आशा सबसे शीघ्र ही दे सकती है और वह अपने क्षम्य और अदम्य विश्वास से जेम्फीरा के आगोश में खो जाता है - 'यह रहा, हाँ, कहाँ मेरा अवलंबन, वह रहा, हो सकता है, मेरा आनंद भी यहीं हो, प्रकृति की प्रभा में, संसार से दूर, यहीं, इन्हीं लोगों के बीच, जिनका कोई नियम नहीं, जिनका कोई कानून नहीं'। पर इससे मिलता क्या है - इस मूल प्रकृति की शर्तों के साथ वह अपने पहले ही गतिरोध में अपने आप को रोक नहीं पाता है और अपना हाथ खून से रँग लेता है। न केवल विश्व-सद्भाव के लिए, बल्कि जिप्सियों के लिए भी, एक अभागा स्वप्नद्रष्टा उनके लिए किसी काम का नहीं था और वे उसे बिना प्रतिशोध, ईर्ष्या तथा सरल हृदय और निर्मल मन से अपने समुदाय से बाहर कर देते हैं -

छोड़ हमें अभिमानी मानुष,

हम जंगली नियम विहीन

न ही पीड़ा देना जाने, न ही प्राण दंड को माने।

यह सब निश्चित रूप से काल्पनिक है, परंतु "स्वाभिमानी व्यक्तित्व" तो वास्तविक और अपने-आप में सुस्पष्ट है। पहली बार इसे पुश्किन ने वर्णित किया है और

इस बात को हमें याद रखना चाहिए। ठीक इसी तरह, यदि और कुछ उसके अनुसार नहीं हुआ तो वह गुस्से में आँसू बहाएगा एवं अपने असंतोष के लिए दंड देगा या, फिर बहुत कुछ ऐसा भी हो सकता है कि वह अपने आप को चौदह स्तरीय सामाजिक वर्ग में से अपने एक वर्ग को याद करके खुद आठ-आठ आँसू रोएगा। यह भी हो सकता है (जैसे हुआ भी हो) कि वह उस प्राणघातक और कष्टदायक कानून की दुहाई देगा, जो केवल उसी के व्यक्तिगत अपमान के प्रतिशोध के लिए हो। नहीं, यह शानदार महाकाव्य अनुसरण मात्र नहीं है! यहीं पर रूसी सोच से समाधान का सुझाव दिया जा रहा है, उस "अभागे प्रश्न" का समाधान जो लोक-विश्वास और सच्चाई पर आधारित है। "विनम्र बनो, हे अभिमानी मानुष, सबसे पहले अपने अभिमान को छोड़ो। शांतिप्रिय बनो, हे निकम्मे मानुष, और सबसे पहले अपनी जमीं पर काम करना सीखो", और यही वह समाधान है जो लोक-चेतना और लोक-सच्चाई पर आधारित है। "तुम्हारे बाहर नहीं तुम्हीं में वो 'सत्' है, अपने को अपने लिए खोजो, अपने को अपने से जोड़ो, अपने आप को स्वयं में समाहित करो - फिर जाकर 'सत्' की प्रभा को प्राप्त होओगे"। यह 'सत्' न ही सांसारिक वस्तुओं में है न ही तुम्हारे बाहर और न ही कहीं सात समुंदर पार, पर यह तुम्हारे अंदर तुम्हारे ही स्वकर्मों में विद्यमान है। "अपने आप को संयमित करो, विनम्र बनाओ - तब तुम उस स्वतंत्रता को प्राप्त कर लोगे जिसकी न ही कभी कल्पना किए होगे, न ही कभी पाए होगे और अंततः तब जाकर तुम उस महान कार्य की शुरूआत करोगे, और दूसरों को भी मुक्त कर पाओगे, आनंद को प्राप्त कर पाओगे, तभी तुम्हारा जीवन आनंदमय होगा, और तब जाकर अंत में तुम अपने लोगों को और उनके विशुद्ध 'सत्' को समझ पाओगे। बंजारों के यहाँ नहीं न हीं अन्यत्र कहीं लौकिक शांति मिलेगी, प्रथमतः अगर तुम इसके योग्य नहीं हो, ईर्ष्यालू और अभिमानी हो, एवं जीवन को उपहारस्वरूप लेते हो और यहाँ तक भी नहीं सोचते कि इसके लिए अवश्य ही कीमत चुकानी पड़ेगी"। इस प्रश्न का समाधान पुश्किन के महाकाव्य में बड़ी विद्वता से बताया गया है।

"येवगेनी अनेगिन" में यह समाधान और भी स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। महाकाव्य में यह एक काल्पनिक न होकर मार्मिक वास्तविकता, जिसमें समसामायिक रूसी जीवन को ऐसी सृजनात्मकता और संपूर्णता के साथ प्रस्तुत किया गया है जो न तो पुश्किन के पहले, और न ही संभवतः उनके बाद में हो सका।

अनेगिन पीटर्सवर्ग से पहुँचता है, सीधे तौर पर पीटर्सबर्ग से। यह बात निःसंदेह महाकाव्य में होनी ही थी, और पुश्किन अपने नायक के जीवन वृत में इस महान वास्तविक चरित्र को छिपा भी नही सकते थे। फिर से मैं दोहरा रहा हूँ यह वही अलेका है, जो विशेष रूप से बाद में, भावातिरेक हो चिल्लाता है -

हे भगवान मेरा पाप का घड़ा क्यों न फूट जाता?

महाकाव्य के प्रारंभ में यह वही एक बाँका छैला, शिष्ट युवा है जिसने तब तक बहुत कम दुनिया देखी है जिससे कि वह जीवन के निराशापन से बाहर निकल सके। और अब जब उसको महसूस होने लगता है -

विरह-वेदना का प्रचंड ताप

एकाकीपन में, अपनों के दिलों में, वह अपना ही नही है, वह परिवार जनों के बीच नहीं है। उसको नहीं पता कि उसको यहाँ क्या करना है, वह अपने यहाँ खुद को ही अजनबी महसूस करता है। समयोपरांत, जब वह अपनी और दूसरे देशों की मातृभूमि को लेकर दुःखी होता है, तब वह निर्विवाद रूप से बुद्धिमान और ईमानदार व्यक्ति के रूप में थोड़ा हटकर, खुद को अजनबियों के बीच में और तो और अपने आप को भी अजनबी ही महसूस करता है। सच है, वह अपनी मातृभूमि से प्यार तो करता है परंतु उसपर भरोसा नहीं रख पाता है। बेशक, वह अपने देश के आदर्श महापुरुषों के बारे में सुना तो है, लेकिन उन पर विश्वास नहीं करता। वह अपने मातृभूमि के किसी भी कार्य को लेकर पूर्ण असंभावना में तो विश्वास करता है, परंतु साथ ही साथ अगर उस कार्यक्षमता में जिनका भी विश्वास हो तो, जैसा कि तब था और आज भी है, उनमें से कुछ को लेकर उसे उदास मुस्कुराहट घेर लेती है। वह लेन्स्की को विषाद के कारण मार तो डाला, परंतु,

कौन जाने, हो सकता है, विषाद का कारण मानवता हो, जो भी हो, यह बहुत हद तक हमारे जैसा, और संभवतः ऐसा ही है। तात्याना ऐसी नहीं है - वह मजबूत उस वृक्ष की तरह है, जो अपनी जमीन पर मजबूती से खड़ी है। वह अनेगिन की तुलना में ज्यादा समझदार और बेशक ज्यादा बुद्धिमान है। वह अपने सहज भाव से अनुमान लगा लेती है कि 'सत्' कहाँ है और किस चीज में निहित है, जिसे कि महाकाव्य के अन्त में व्यक्त किया गया है। शायद पुश्किन ने और भी बेहतर किया होता अगर उन्होनें अपने महाकाव्य का शीर्षक 'अनेगिन' की जगह 'तात्याना' रखा होता, क्योंकि निस्संदेह तात्याना ही महाकाव्य की मुख्य पात्रा है। तात्याना गुणवान चरित्र वाला पात्र है न कि खलनायक पात्र। वह सुंदरता से मर्यादित है। वह रूसी महिलाओं के लिए आदर्श है और इस विचारदर्शन को कवि ने तात्याना-संग अनेगिन के अंतिम मुलाकात वाले मशहूर दृश्य के लिए नियत किया था। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस आदर्श प्रकृति वाली रूसी महिला की चारित्रिक सुंदरता हमारे साहित्य में - तुर्गेनेव के उपन्यास 'द्वर्यांस्कये ग्नेज्दो' में 'लीजा' के चरित्र के अलावा - कहीं भी दुहराया नहीं गया है। परंतु देखने के ढंग ने उस अभिमान को पैदा कर दिया कि अनेगिन तात्याना को पूर्ण रूप से तब पहचान न पाए जब वह उससे पहली बार, उस एकाकीपन में, एक विनम्र चरित्र वाली भोली-भाली, प्रथम दृष्टि में शर्मा जाने वाली, सुकुमारी लड़की से मिले। वे उस भोली लड़की की संपूर्णता और गंभीरता का विभेद नही कर पाए, और तभी, हो सकता है उसको एक 'अबोध बालिका' के रूप में समझ बैठे। अनेगिन को पत्र का जवाब देने के बाद वाली क्या यह वही 'अबोध बालिका' है! अगर कोई उसकी तरह 'नैतिक चरित्रवान' इस महाकाव्य में है तो निःसंदेह वह स्वयं अनेगिन ही है और यह निर्विवाद है। यह तो सही है कि वह उसे पहचान नहीं सका - लेकिन क्या इसका मतलब वह मानव-हृदय को नहीं समझता? वह अपनी पूरी जिंदगी सांसारिक तामझाम से दूर, सपनों में रहने वाला एक बेचैन मनुष्य है। वह उसे बाद में चलकर पीटर्सबर्ग में अभिजात्य कुलीन महिला के रूप में भी नहीं समझ पाया, परंतु अपने शब्दों में तात्याना को पत्र में लिखा कि 'वह उसकी उत्तमता को दिलोभाव से

समझता है'। परंतु यह तो बात की बात है। तात्याना उसकी जिंदगी में एक अनजानी और अनबुझी महिला ही रही। और इस प्रकार उनके जीवन वृत्त की यह एक दुःखद त्रासदी है। और तब, जब वह गाँव में उसके साथ उस प्रथम दृष्टया मुलाकात के समय वहीं पर आँग्ल देश से आए चाइल्ड-गारोल्ड या फिर स्वयं लार्ड बाइरोन उसकी लज्जा और शालीनता को परखकर अनेगिन को संकेत किए होते तो, अनेगिन तत्क्षण ही आश्चर्यचकित हो ठीक उसी तरह उसके वशीभूत हो उठता, जैसे इस वियोगी संसार में कोई विरही दीवानगी का कायल हो! परंतु ऐसा कुछ हुआ तो नहीं। एक सांसारिक समरसता का पाठ करने वाले ने उसको धर्मोपदेश देकर और उसके साथ बहुत ही सच्चा व्यवहार कर, अपने क्रोधाग्नी को वशीभूत कर, मीत के निराशाजनक दुर्व्यवहार से खौलते हुए रक्त को शांत कर, उसपर बिना ध्यान दिये वह अपने वतन को वापस चला गया। शक्ति की मर्यादा को बाँधते हुए वह चिल्लाकर शपथ लेता है -

यौवनातिरेक, जीवन से गर्वित, प्रतीक्षा किसकी, दुख से संतापित!

तात्याना यह समझ चुकी थी। अपने कथा-काव्य के अमर छन्दों में कवि नें ऐसा दर्शाया है जो एक ऐसे पुरूष के घर आने वाली है, जो एक शानदार व्यक्तित्व तो है, परंतु अभी भी वह उसके लिए अपूर्ण है। मेरा यहाँ कहने का तात्पर्य उसके साहित्यिक तत्व-मीमांसा, अप्रतिम सौंदर्य-विश्लेषण या इन छंदो की गूढ़ भावाभिव्यक्ति से नहीं है। देखिए, वह उसके आवास पर है, उसकी पुस्तकों, वस्तुओं, सामानों, पर निगाहें दौड़ा रही हैं। वह उसके मन को आत्मसात करना चाहती है, चकोर चितवन से प्रश्न करती है 'कौन हो तुम वसंत के दूत!' अंततः विचारों के आगोश में खो जाती है, एक विस्मय मुस्कान ले अपनी कल्पनाओं का प्रत्यर्पण कर उसके शांत होंठ हलचल करते हैं -

उसकी वेदना का कैसा यह वेग है?

हाँ, वह उसकी अज्ञात जटिलताओं को समझने के लिए विवश थी।

बहुत समय व्यतीत होने के बाद, पुनः जब वे लोग पीटर्सबर्ग में दोबारा मिलते हैं तो वह उसे पूर्ण रूप से जान चुकी होती है। फिर भी, ऐसा कौन कहेगा कि कोर्ट कचहरी और समाज नें तात्याना के जीवन को प्रभावित कर उसकी आत्मा को विक्षिप्त कर दिया, और उसका फैशनेबुल महिला के स्वरूप में उसके नए उन्मुक्त विचार ने उसके द्वारा अनेगिन को नकारने का कारण बना? नहीं, ऐसा नहीं हुआ था। यह वही तान्या है, वही गाँव की एक भोलीभाली तान्या! वह बर्बादी की तरफ नहीं गयी, बल्कि, उल्टा वह पीटर्सबुर्ग के चकाचौंध भरे जीवन से व्यथित हो चुकी है। वह इससे उद्वेलित हो परिणाम भुगत रही है। वह आधुनिक महिला की लीलामयी उद्वेग को नहीं पसंद करती, और अगर कोई इसको उसके अंदर खोजने की कोशिश करता है तो मैं यही कहूँगा कि वह पुश्किन के भाव को नहीं समझता। वह यहाँ बड़े ही कठोर शब्दों में अनेगिन को कहती है-

मैं दूसरे को समर्पित हूँ,

और जन्म जन्मांतर तक साथ निभाऊँगी।

एक रूसी नारी के नारी-धर्म को चरितार्थ करती है, और इसी में उसका नारीत्व है। वह महाकाव्य की आत्मा को बयाँ करती है। मैं उनकी धार्मिक आस्था या वैवाहिक संस्कार के दृष्टिकोण पर अपनी बात नहीं रखूँगा। लेकिन हाँ, यह बताइये कि क्या उसने उसके साथ जाने से मना कर दिया, बावजूद इसके कि उसने 'प्यार करने की कसम खायी थी' या 'एक रूसी नारीत्व' (पश्चिमी या फ्रांसीसी जैसा नहीं) को धारण कर वह एक कठोर कदम न उठा सकी, या अपने रास्ते को बदल न पायी, नारीत्व को भंग न करने की शक्ति थी उसके अंदर, धन दौलत, सद्गुणों को बिना छोड़े आधुनिकता में खुद को ढाल न सकी? नहीं, रूसी नारीत्व शक्ति-स्वरूपा है।

रूसी महिला जिसमें विश्वास करती है, साहसपूर्वक उसका पालन करती है और उसने इसे साबित कर दिया। पर वह "तो पराये घर जाएगी और सातों जन्म उसी के प्रति वफादार रहेगी।" पर वह है कौन, किस बंधन को निभाना है? यह कैसी बाध्यता है? ऐसे वृद्ध हो चले जनरल, जिसको वह प्यार नहीं कर पाती है या वह अनेगिन को प्यार

करती है, और तो और वह उससे इसलिए शादी रचाई क्योंकि 'माँ ने रो-धोकर याचना की थी'। उसकी आहत, घायल आत्मा में केवल निराशा ही थी और न ही कोई आशा बची न ही दूसरा रास्ता। हाँ, वह इस जनरल, एक ईमानदार, उसका सम्मान करने वाला तथा उसपर गर्व करने वाला पति, जो उससे प्यार करता है के प्रति वफादार है। हाँलाकि माँ ने उससे "विनती" तो की, लेकिन उसने तो खुद ही, कोई दूसरा नहीं, अपनी रजामंदी दी और वह खुद ही वफादार पत्नी होने की कसम खाई थी। उसने निराश होकर उससे शादी की, पर अब वह उसका पति है, और उसका विश्वासघात उसे लज्जा और शर्म से मार डालेगा। क्या एक आदमी की खुशी का आधार दूसरे का दुर्भाग्य हो सकता है?

खुशी केवल प्रेम-प्रसंग में ही नहीं होती, बल्कि प्रगाढ़ आत्मिक सामंजस्य में होता है। अपनी आत्मा को शांत कैसे किया जाए, अगर पूर्व में किया हुआ कृत्य बेईमान, क्रूर और अमानवीय हो?

क्या उसे सिर्फ इसलिए भाग जाना चाहिए, क्योंकि उसकी खुशी कहीं और है? लेकिन वो खुशी कैसी होगी जो दूसरे की बदकिस्मती पर आधारित हो? आज्ञार्थ, जरा मान कर देखिए कि आप स्वयं ही एक मानव कल्याण-रूपी महल का निर्माण करते हैं, जिसका प्रमुख उद्देश्य अंततोगत्वा लोगों को परमानंद की प्राप्ति कराना, लोगों को अंततः शांति और संतोष देना है। और आप ही जरा इस बात की कल्पना कीजिए कि एक इंसान को केवल इसलिए प्रताड़ित करके मार देना आवश्यक और अवश्यंभावी हो जाता है कि वह बहुत हद तक काबिल या किसी दूसरे के दृष्टिकोण में बुद्धु-सा है, वह किसी रूप में शेक्सपीयर की तरह नहीं है। वह वृद्ध एक ईमानदार, सीधा-साधा मनुष्य एक जवान स्त्री का पति है, जिसको वह आँखें बंद करके प्यार करता है, परंतु उसके दिलो-दिमाग को तो समझ नहीं पाता, पर उसका सम्मान करता है, उसपर अभिमान करता है, उसके लिए वह खुश और संतोषी है, पर क्या इस कारण उसको बदनाम, अपमानित और यातना देना चाहिए और उस अपमानित वृद्ध के आँसुओं के ऊपर अपना भवन खड़ा करना चाहिए!

क्या आप इस शर्त पर उस भवन के वास्तुकार बनने के लिए सहमत होंगे? प्रश्न यही है। और क्या आप एक मिनट के लिए भी इस विचार को मान सकेंगे कि जिन लोगों के लिए आपने यह भवन बनाया है, क्या वह स्वयं आपसे ऐसी खुशी स्वीकार करने के लिए सहमत होंगे जिसकी नींव ही यातना के उपर बनी हो? और तो और मान लेते हैं कि उसका निर्माण एक बर्बाद, पीड़ित, इंसाफ-विहीन प्राणी के ऊपर करके आप उस खुशी को स्वीकार भी कर लेते हैं तो बताइए क्या वह खुशी हमेशा आप के लिए बनी रहेगी? बताइए, क्या तात्याना कोई और निर्णय अपने पीड़ित हृदय और विशाल आत्मा के विरुद्ध जाकर ले सकती थी? एकदम नहीं। निर्मल रूसी मन का कुछ और ही कहना है -

जाओ, रहने दो मुझे अकेले ही अपनी खुशी से वंचित होने दो, मेरी बदकिस्मती इस वृद्ध की तुलना में कहीं अधिक है। अंत में कोई भी, यह वृद्ध भी, और कभी भी मेरे बलिदान को न पहचान पाएँगे न ही सराहना करेंगे, लेकिन दूसरे को बर्बाद करके मैं खुश नहीं होना चाहती। यही त्रासदी है, जो अब पूरी हो रही है। वह लक्ष्मणरेखा पार भी नहीं कर सकती और समय भी बीत चुका है और इस प्रकार तात्याना अनेगिन को विदा करती है। कहने को तो कहेंगे - क्या अनेगिन की किस्मत नहीं फूटी थी; एक को बचाई, और दूसरे को ले डूबी। आज्ञा दीजिए तो दूसरा प्रश्न रखें, जो संभवतः महाकाव्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण हो। वैसे सवाल यह है - तात्याना अनेगिन के साथ क्यों नहीं गई - यह प्रश्न कम से कम हमारे साहित्य में अपनी तरह का एक ऐतिहासिक विशिष्ट वृत्तांत (प्रकृति) है। इसीलिए मैंने स्वयं इस प्रश्न के बारे में गंभीरता से विचार विमर्श करना चाहा। सबसे बड़ी बात तो इस प्रश्न के उस नैतिक समाधान की है जो बहुत समय पहले से हमारे वैचारिक जगत में एक उलझन का विषय है। मैं तो कुछ ऐसा सोचता हूँ - अगर तात्याना स्वतंत्र भी हो जाती, या उसका वृद्ध पति मर भी जाता तो तब भी वह अनेगिन के साथ नहीं जाती। इस चरित्र के गूढ़ प्रश्न को समझना है। वह तो इस बात को अवश्य ही जानती है कि वह है कौन - एक बाँका छैला ने सहसा एक नए अनुपम दुर्गम परिस्थिति में एक स्त्री पर

ध्यान दिया, जिसको वह पहले नजरअंदाज कर चुका था। यही वह परिस्थिति है, सच में, जहाँ पर वास्तविक सार है। जो भी हो यह वही लड़की है, जिसकी अब दुनिया पूजा करती है और जिसको पहले वह नजरअंदाज कर चुका था। यह दुनिया उसके सभी सांसारिक आकांक्षाओँ के बावजूद एक गूढ़ प्रतिष्ठा है। और यही कारण है कि वह तात्यान की तरफ खिँचा चला आता है। यही है मेरा आदर्श - उद्घोष करता है वह, यही है मेरा उद्धार। यह रहा मेरे दुख का समाधान। उसपर तो मैंने ध्यान नहीं दिया था परंतु "आनंद तो इतना सरल था और नजदीक भी!" और, अपने सभी कपोल कल्पित समाधानों की तलाश में अनेगिन वैसे ही तात्याना की ओर खिँचा चला आता है, जैसे अलेका जेम्फिरा की ओर। क्या यह सही है कि तात्याना इस बात को उसमें नहीं ढूँढ पायी, क्या इस बात को उसे बहुत पहले ही समझ नहीं जाना चाहिए था? हाँलाकि वह बहुत अच्छी तरह से जानती है कि वास्तव में वह उस भोली-भाली पहले की तरह तात्याना को नहीं, बल्कि वह स्वयं की अपनी नयी कल्पना को प्यार करता है। वह जानती है कि वह उसे कुछ और ही वजह से पसंद करता है न की उसके लिए जो वह है। वह शायद उससे प्यार ही न करता हो, हो सकता है कि वह किसी से भी प्यार नहीं करता हो, या फिर किसी से प्यार करने में सक्षम न हो, बावजूद इससे कि वह अंदर ही अंदर कितना पीड़ित है! वह दीवानगी को तो पसंद करता ही है क्योंकि वह खुद एक दीवाना है। अगर वह उसके साथ उस समय जाने को तैयार हो जाती तो आगे चलकर कहीं वह बाद में निराश न हो जाता जिससे उसे लगता कि उसके उत्साह का मजाक तो नहीं बना। इसका कोई आधार नहीं है, क्योंकि वह उस तिनके के समान है जो हवा के झोंकों में हिलोरे खाता है। इधर, तात्याना बिल्कुल ऐसी नहीं है - चाहे कितना भी दुःखों का पहाड़ हो या, उसका जीवन मृतप्राय हो उसके अंदर कुछ अदम्य अटल सा है, जिसपर उसकी आत्मा टिकी हुई है। ये उसके बचपन की आशाएँ हैं, मिट्टी की यादें हैं, गाँव की कर्मभूमि हैं, जहाँ से उसके विनम्र सादे जीवन की शुरूआत हुई थी। ये वही दादी नानी की लोरियाँ है। हाँ, वही संस्मरण और बीती स्मृतियाँ उसके लिए अभी तक अनोखी है, और यही उसके लिए शेष मात्र है जो उसकी आत्मा को घोर निराशा से बचाए रखती हैं। और यही काफी नहीं है, यहाँ और भी बहुत कुछ है,

क्योंकि वही सम्पूर्ण आधार है, वही अक्षुण्ण और अविनाशी है। यह एक जुड़ाव है मातृभूमि, बंधु-बान्धवों और पवित्र आध्यात्मिकता से सनी बनी। और इससे अधिक, उसके पास क्या है और वह है कौन? एक पल के लिए ही सही, न तो तात्याना को अनेगिन को खुश करने के लिए उसके साथ जाना है और न ही कम-से-कम अपने अनंत करुणा भाव से उसको खुशी के भ्रम का सौगात देना है, क्योंकि वह अच्छी तरह से जानती है कि आगे चलकर, कल, कहीं वह इस बात को अपने लिए मजाक न समझ ले। नहीं, ऐसे भी गंभीर और मजबूत लोग हैं जो स्वयमेव अपनी पवित्रता को लांक्षित करने के लिए आत्मसमर्पण नहीं कर सकते, भले ही वह कितनी भी असीम करुणा से भरा हुआ क्यों न हो। नहीं, तात्याना अनेगीन का अनुसरण नहीं कर सकती थी।

इस प्रकार, अपने इस अद्‌वितीय अमर महाकाव्य से पुश्किन एक ऐसे महान जन लेखक बने, जो उनके समय तक कोई नहीं बन सका था। उन्होनें अपने प्रत्युत्पन्नमतित्व, अकाट्य, तीक्ष्ण प्रतिभा से हमारे अस्तित्व के उस प्रगाढ़ स्वरूप को तथा उच्चवर्गीय समाज के भाव को प्रकट किया। वर्तमान समय तक के रूसी बंजारों के चरित्र को उकेरते हुए पुश्किन ने ही पहली बार अपनी विलक्षण प्रतिभा से बंजारों के सहज भाव को, उनकी ऐतिहासिक नियति, उनके महान महत्व को हमारे आगामी भविष्य के लिए चित्रित किया। उसी के साथ-साथ वह रूसी महिला के उस गुणी और अतुलनीय चरित्र को भी हमारे सामने प्रस्तुत किया। पुश्किन निःसंदेह रूसी लेखकों में से अकेले हैं, जो हमारे सामने उस समय की अपनी दूसरी कृतियों में भी एक से बढकर एक गुणवान और चरित्रवान रूसी पात्रों को रूसी समाज में ही ढूँढकर चरितार्थ किया। इन पात्रों की सत्यता ही उनकी मुख्य विशिष्टता है, उस सत्यता में है जो प्रत्यक्ष और निर्विवाद है, क्योंकि इन मूर्तिवत पात्रों को नकारना असंभव है। एक बार फिर से याद दिलाता हूँ कि एक साहित्यिक आलोचक की तरह नहीं बोल रहा हूँ, क्योंकि अपने कवि की इन श्रेष्ठ कृतियों के, विशेषकर विस्तारपूर्वक साहित्यिक विमर्श पर अपना विचार नहीं रखना चाहूँगा। रूसी टिप्पणीकार के रूप में, उदाहरण के तौर पर एक पूरी किताब लिखी जानी चाहिए, जिसमें कि हमारे लिए इस महान रूसी चरित्र जो पुश्किन के द्‌वारा निर्विवाद, विनीत और अपने अंतःकरण

की सुंदरता लिए हुए स्वरूप में सदा के लिए रूसी धरा पर अपने सभी महत्व और अर्थ को धारण किए हुए खोजा, तराशा और हमारे समक्ष प्रस्तुत किया गया था - को दर्शाया जाए। वह किताब जो एक आमजन की जिंदगी की जिजीविषा का प्रमाण हो, अपने आप से उस निर्विवाद सत्य के स्वरूप को पृथक् कर सके। यह स्वरूप तो निर्विवाद रूप से उपस्थित था, और है भी, कहना कि वह कवि की एक कपोल कल्पना, खयाली पुलाव या वैचारिक सनक है तो यह गलत होगा। आप अपनी आँखों से खुद देखेंगे और मान लेंगे कि - हाँ वह व्याप्त हैं, इसलिए राष्ट्रशक्ति, जिसने उसे बनाया है, विद्यमान है। जीवंत शक्ति इस आत्मा की है, और वह श्रेष्ठ और असीमित है। पुश्किन की सभी कृतियों में रूसी चरित्र के लिए एक विश्वास, उसकी आध्यात्मिक शक्ति के प्रति विश्वास की झलक दीख पड़ती है। अगर यह विश्वास कहीं आशा में बदल जाए तो वह रूसियों के लिए एक महान महात्वाकांक्षा है -

यश और उपकार की आशा में,

निडर चलूँ मैं कदम बढ़ाए ... -

किसी दूसरे विषय के संदर्भ में कवि नें स्वयं कहा, परंतु यह बात उसके पूरे सृजनात्मक साहित्यिक कृतियों पर लागू की जा सकती है। और उनसे पहले या उनके बाद, कभी भी कोई भी रूसी लेखक इतनी निष्कपटता और सहृदयता से अपने लोगों के प्रति नहीं जुड़ा, जैसा कि पुश्किन जुड़े थे।

हाँ, हमारे लेखकों के बीच में बहुत जानने वाले लोग हैं, वे उतने ही प्रतिभाशाली हैं और उन्होनें उतने ही अचूक और प्यार से लोगों के बारे में लिखा भी है, परंतु, यदि उनकी तुलना पुश्किन से की जाए तो, सच में, अभी तक, एक या अधिक से अधिक दो सबसे बाद वाले उनके अनुयायियों के अपवादों को छोड़कर, केवल जन के बारे में लिखने वाले वही "महाशय" हैं। अगर हम इन दो अपवादों को भी लें जिनके बारे में मैंने अभी अभी वर्णन किया है तो उनमें से सबसे प्रतिभावान लोगों में भी थोड़ा अहंकार की झलक, कुछ-कुछ दूसरी जीवनशैली और दूसरा संसार, जनमानस को अपनी तरह ऊपर उठाकर

खुश करने की इच्छा दीख पड़ती है। भालू की लोककथा को ही लें जिसमें नर बिगड़ैल भालू ने कैसे रानी भालू मादा को मारा, अगर हम दिमाग पर थोड़ा जोर देकर उस छंद को याद करें -

स्वात इवान जैसे ही हम पीने लगेंगे,

आप तुरंत समझोगो कि हम क्या कहना चाहते हैं।

कला और सृजनात्मक अंतर्दृष्टि की इन सभी निधियों को हमारे महान कवि ने भविष्य के उनके साथ उभरते हुए साहित्यकारों के लिए एक निर्देश के रूप में छोड़ दिया था, जो भविष्य में उसी साहित्यिक क्षेत्र में काम करेंगे। स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि यदि पुश्किन नहीं होते तो उनके बाद कोई उनका अनुकरण करने वाली प्रतिभा भी नहीं होती।

कम-से-कम अपनी महान प्रतिभा के बावजूद वे उतनी शक्ति और स्पष्टता के साथ व्यक्त नहीं हो पाते, जिनमें वे अपने को परिणाम स्परूप अच्छे से आज तक व्यक्त कर सकें। सिर्फ बात कविता या साहित्यिक रचनाओं से संबंधित नहीं है, बल्कि यदि पुश्किन नहीं होते तो शायद इतनी दृढ़ता से (जो बाद में सब में नहीं लेकिन कुछ में जरूर प्रकट हुआ) हमारा रुसी स्वावलंबन में विश्वास, हमारे लोगों के प्रति हमारी चैतन्यशील आशा व्यक्त नहीं हुई होती, तो फिर आज के यूरोपीय स्वतंत्र पारिवारिक ढ़ाँचें में हमारा विश्वास क्यों है। पुश्किन का यह शौर्य विशेष रूप से तब स्पष्ट होता है जब हम इसे गहराई से समझते हैं। उनकी इस साहित्यिक गतिविधि को मैं तीसरे कालखंड के रूप में देखता हूँ।

इन कालखंडों की कोई ढ़ृढ़ सीमा नहीं है - यह मैं बार-बार दोहरा रहा हूँ। इस तीसरे कालखंड की कुछ कृतियाँ तो जैसे कि उनके प्रारंभिक दिनों की साहित्यिक रचनाओं में प्रकट हो सकती थीं, क्योंकि पुश्किन सदैव मूल समग्रता से भरे हुए एक, कहें तो, जीव

थे जो स्वयं में, अपने अंतःकरण में एक आद्य बीज की तरह थे, जिसको वह कहीं बाहर से अपनाए नहीं थे। परिस्थितियों ने उनके अंदर केवल उस चीज को जगाया जो उनके अंतः चेतन में पहले से ही विद्यमान था। और इस प्रकार उनकी साहित्यिक चेतना विकसित होती गई। यह विकासक्रम स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर और चिह्नित होता है। इस विकासक्रम के हरेक कालखंड में उनका विशेष चरित्र क्रमिक रूप से प्रत्येक कालावधि को व्यतीत करते हुए विकसित होता चला गया। अतः, तीसरी कालावधि में उनकी साहित्यिक कृतियों की उस कोटि को जोड़ा जा सकता है, जिसमें प्रधानतः विश्वशांति का विचार चमकना शुरू होता है। इस श्रेणी में रूसियों के अलावा दूसरे जनमास के भावात्मक विचार भी प्रतिबिंबित होते है और उनकी प्रतिभा मूर्त रूप लेती है। इन साहित्यिक कृतियों में से कई तो उनकी मृत्यु के बाद उजागर होती है। अपने कर्म के इस दौर में हमारा कवि कुछ चामत्कारिक, कुछ अनसुना और अनदेखा सा प्रकट होता है। यह विशेष गुण न तो पहले किसी में था और न ही कहीं देखा गया था। वास्तव में, यूरोपीय साहित्य में विशाल साहित्यिक प्रतिभाएँ थीं - जैसे शेक्सपियर, सर्वेंटिस, शिलर। लेकिन, इन महान प्रतिभाओं में से कोई एक भी बताइए जिनके पास हमारे पुश्किन के जैसा चराचर के प्रति संवेदना मौजूद हो। यही वह क्षमता है, जो हमारी राष्ट्रीयता की सबसे महत्वपूर्ण सामर्थ्य है और इसी को वह हम लोगों के साथ साझा करते हैं। तभी तो, महानतम रूप में वह हमारे आम जन के कवि हैं।

महानतम यूरोपीय कवियों में से किसी ने भी उस शक्ति से अन्य किसी दूसरे, अपने आस-पास के आम लोगों की प्रतिभा को तथा साथ-ही-साथ अंतर्मन की गहराइयों से उनकी अंतःपीडा को उस प्रकार समाहित नहीं कर सका, जैसा कि पुश्किन ने किया। बल्कि, यूरोपीय कवियों ने जब भी इन दूसरों को जानने की कोशिश की तो उन्होनें उनको अपने-अपने तरीके से अपनी राष्ट्रीयता में नए रूप से व्यक्त किया। उदाहरण के लिए, शेक्सपियर ने अपने इतावली लोगों को लगभग पूरी तरह से अंग्रेज के रूप में पेश किया। पुश्किन दुनिया के ऐसे कवियों में से विरले हैं, जो पूरी तरह से दूसरी किसी राष्ट्रीयता में अवतरित होने की क्षमता रखते हैं। जैसे "फाऊस्ता", "स्कुपोई ऋत्सार" के दृश्यों में तथा

"झील ना स्वेते ऋत्सार ब्येद्नी" के गाथागीतों में दिखता है। "डॉन जुआन" को फिर से पढ़ें, और अगर पुश्किन के हस्ताक्षर न होते तो आप कभी नहीं जान पाते कि यह एक स्पैनिश द्वारा नहीं लिखा गया होगा। "पीर वो व्रेम्या चूमि" कविता में किस तरह के गहराई वाली शानदार छवियाँ हैं! इन शानदार छवियों में इंग्लैंड की प्रतिभा प्रतिबिंबित होती है। महाकाव्य की वह अद्भुत कविता प्लेग के बारे में है जिससे नायक पीड़ित है। मैरी का यह छंदबद्धगीत -

पुकार हमारे बच्चों की,

गूँजती है कोलाहलमय स्कूलों में ...।

यह अंग्रेजी गीत है जिसमें ब्रिटिश प्रतिभा की कसक है उसका रूदन है, उसका अपने भविष्य को लेकर दर्द भरा पूर्वाभास है। याद करिए इस गूढ़ छंद को -

एक बार जंगली घाटी के बीच घूमते हुए ...।

यह पुनर्लिखित छंद अंग्रेजों की प्राचीन धार्मिक समुदाय की एक गूढ़ रहस्यमयी गद्य की पुस्तक के प्रथम तीन पन्नों से लिया गया है, परंतु क्या यह एक पुनर्लिखित छंद भर है? चाहे उत्तरी प्रोटैस्टैंटवादी हों या अंग्रेजों के हेरेसी मतावलंबी हों या सुस्त, बुझी हुई अपराजेय आकांक्षाओं से आच्छादित रहस्यमयी ज्योतिपुंज हो, या रहस्यमयी स्वप्नों की अप्रौढ़ शक्ति हो - इन सभी की विशुद्ध आत्मा करुण और वीभत्स रस के इन छंदों में महसूस की जाती है। इन विस्मय भरी कविताओं को पढ़ते हुए आपको शताब्दियों के कालखंडो के सुधारों के बारे में पता चलता है आप प्रोटेस्टैंट मतावलंबियों के द्वारा शुरू की गयी आरंभिक युद्ध जैसी ज्वाला को समझ पा सकते हैं और आप अंत में उस इतिहास को न केवल विचारों से समझ सकते हैं बल्कि आप जैसे कि स्वयं वहाँ रहें हों, उन सशस्त्र समुदाय के बीच से होकर गुजरें हों, उनके साथ उनके पुराने टेस्टामेंट के धर्मगीत को गाएँ हों, उनके धार्मिक मंगलगान में उनके साथ रोए हों और उनके विश्वास में साथ हो सहभागी बने हों। अब इन धार्मिक गूढ़ रहस्य के साथ-साथ कोरान की जो

आयतें हैं या "बाद में कोरान की गई व्याख्याएँ हैं" - क्या यह सब मुसलमानियत नहीं है, क्या यह कोरान का गूढ़ तत्व और उसका मार्मिक विश्लेषण नहीं है, या निष्कपट विश्वास और उसकी क्रूर नृशंस ताकत नहीं है? और यह रहा हमारा प्राचीन संसार। यहीं पर है "एजिप्ट की रातें" और यह रहे पृथ्वी पर वास करने वाले देवता, जो अपने-अपने दूत के साथ लोगों के मन में विराजमान रहकर, लोगों की आकांक्षाओं को तुच्छ मानकर उनको कुचल देते हैं। वे उनकी तीक्ष्ण बुद्धि में कोई विश्वास नहीं करते। वे अलग से अकेले पैगंबर बनते हैं और उसी रूप में पागलपन की अवस्था में जाकर मृत्युपर्यंत थकान भरी हार की पीड़ा में दुःख भोगते रहते हैं। वह सभी अपनेआप को या तो कट्टरपन की क्रूरता में बदल देते हैं या तो पाश्विक विलासिता में। और तो और वह अपने आप को इस स्वरूप में ला देते हैं, जैसे कोई मादा मकड़ी धीरे-धीरे अपनें पुरुष साथी का भक्षण कर डालती है। नहीं, मैं विचारपूर्वक सोचसमझकर बोल रहा हूँ कि इस ब्रह्मांड में ऐसा कोई सर्वमान्य कवि नहीं हुआ जैसा कि पुश्किन। यह केवल उनके लिए अकेले सहानुभूति की बातें नहीं कह रहा हूँ, बल्कि मैं उनकी उस अगाध ज्ञान की बात बता रहा हूँ, जिससे उनकी स्वयं की आत्मा का स्वरूप दूसरे लोगों की आत्मा के समान में हो जाता है। यह एक पूर्णरूप से पुनर्जन्म है और इसीलिए अद्भुत है, क्योंकि यह घटना इस पूरी दुनिया में कहीं भी किसी भी कवि में पुनः नही दोहराई गई। ये बातें पुश्किन के संदर्भ में पूर्णतया सही है, और इसी कारणवश, मैं पुनः दोहराता हूँ, वे हमारे लिए एक ऐसी दैवी घटना है, जिनको पहले कभी न तो देखा गया न तो सुना गया। अब इसका आधार बताऊँ तो .... उनकी कविता में बहुत कुछ तो राष्ट्रीयता है, वह भी रूसी जनमानस की शक्ति के रूप में और बचा-खुचा जो है वह एक राष्ट्र के रूप में भविष्य के विकास के लिए देशज शक्ति, जो हमारे भविष्य के लिए एक दैवीय अभिव्यक्ति लिए हुए हमारे वर्तमान में बसती चली जा रही है। तब उस रूस की लौकिक शक्ति की आत्मा का क्या अर्थ, जब उसका प्रमुख लक्ष्य सर्वमानव कल्याण और विश्वबंधुत्व नहीं हो? जनकवि के रूप में उभरकर पुश्किन तत्क्षण तब, जब उनको राष्ट्र की शक्ति का संज्ञान हुआ, उन्होने उस शक्ति की महान संमृद्ध अवस्था का एहसास किया। इसीलिए वह एक ऋषि हैं, वह एक पैगंबर हैं। महत्वपूर्ण रूप

से, केवल भविष्य के लिए ही नहीं, यहाँ तक कि, उसके लिए जो पहले से था या हुआ था, या मिला-जुला कर उन सब कुछ के लिए जो घटित हुआ था - के संज्ञानार्थ पीटर महान के सुधारों का हम लोगों के लिए क्या तात्पर्य है? उस सुधार का हमलोगों के लिए क्या मतलब रह गया? कहीं ऐसा तो नहीं कि वह केवल यूरोप के रीति-रिवाजों, पोशाकों, पहनावा को अपनाना था या उनका विज्ञान और खोजों को अपनाना भर था? नहीं। हमें इन बातों पर गौर फरमाना चाहिए हमें कुछ अधिक ही इसकी सघन जाँच पड़ताल करनी होगी।

हाँ, बहुत कुछ संभव है कि पीटर प्रारंभ में अपने सुधारों को बड़ी बारीकी से आने वाले समय के लिए, उपयोगितावादी (यूटिलीटैरियन) अर्थ में प्रारंभ किए हों, परंतु समय के साथ-साथ जैसे-जैसे उनके विचारों में प्रगाढ़ता आती गई, वे अपने अंतःकरण की समझ के अनुसार चलते गए, जिसने उनको महान बना दिया, उनके कर्मों में वह दिखने लगा, जिसका उद्देश्य केवल उपयोगितावादी न रहकर, एक भविष्यकेंद्रित भव्यता को प्राप्त करना था। और ठीक इसी प्रकार रूस के लोग भी इसको महज एक उपभोगवादी स्वरूप में नहीं देखे, बल्कि निश्चय ही अपने सहज पुर्वानुमानों के आधार पर विलासिता के संदर्भ से इसको दूर रखकर, उपयुक्त समय पर उसको महसूस किया और आगे आने वाले महान लक्ष्यों को प्रमुखता दी। एक बार मैं फिर से दोहरा रहा हूँ कि लोगों ने उस उद्देश्य को अपनी सहज वृत्ति से ही स्वीकार किया था, जबकि उसका भाव अत्यधिक सरल और जीवंत रहा। वास्तविकता तो यह है कि अनजाने में ही सही, हम लोग उस समय विश्वबंधुत्व और सर्वमंगलकारी सहयोग में अपने आप को ढालने की कोशिश करने लगे थे। हम लोग वैमनस्य के आधार पर नहीं (जैसा कि उस समय लग रहा था कि ऐसा कुछ होने वाला है), बल्कि मित्रता और सच्चे प्यार के रूप में रहकर हमारी अंतरात्मा नें दूसरी सभी प्रतिभाओं को ग्राह्य किया। हमने इसमें किसी भी प्रकार का समुदाय-भेद नहीं किया बल्कि एकसाथ, बिना किसी विशेष को चिह्नित कर, स्वयं, अपने अंतर्मन के अनुसार, प्रथम दृष्ट्या ही विरोधी स्वर का खंडन किया और फिर उनको क्षमा करके उन सभी में मेल मिलाप करवाया। और इस प्रकार प्रमुख रूप से अभी ऊपर जो हमने व्यक्त

किया और बतलाया कि हमें जो साबित करना था वह स्पष्ट कर दिया - हमारी तत्परता और तैयारी महान आर्य-परिवार की सभी जन जातियों के सर्वमंगलकारी और जन-कल्याण के लिए है। हाँ यह सत्य है कि रूसी जनमानस का प्रारब्ध सर्वयूरोप केंद्रित और सर्वमंगलकारी है।

यदि आप एक मूल रूसी, एक सच्चे रूसी बनना चाहते हैं, तो इसका मतलब है (अंत में गौर कीजिएगा) कि पूरी मानव जाति से बंधुत्व रखना और इस प्रकार आप चाहें तो महापुरुष बन सकते हैं। ओह, हमारे बीच में फैला स्लावोफिलिज्म और पश्चिमवाद एक बड़ी गलतफहमी के अलावा और कुछ नहीं है, हालाँकि यह ऐतिहासिक रूप से आवश्यक है। यूरोप के एक सच्चे रूसी के लिए और महान आर्य-समुदाय का नसीब उसी तरह महत्वपूर्ण है, जैसे हमारी मातृभूमि का, अपने रूस का, क्योंकि नियती तो बहुत कुछ सार्वभौमिक होता है, जो कि तलवार से नहीं, बल्कि भाईचारे और लोगों के पुनर्मिलन की जन इच्छाशक्ति द्वारा प्राप्त की गई है। यदि आप पीटर महान के सुधार के बाद हमारे इतिहास को देखना चाहते हैं, तो आप स्पष्ट रूप से इस विचार के निशान और संकेत को खोज पाएँगे। मेरा यह जो सपना है, यूरोपीय जनजातियों के साथ जुड़ने का, यह हमारी सरकारी नीति में भी देखने को मिलेगा। इन दो शताब्दियों में रूस ने अपनी नीति में क्या किया, क्या उसने यूरोप की सेवा नहीं की? शायद, खुद से कहीं ज्यादा। मुझे नहीं लगता कि यह केवल हमारी कमजोर नीतियों के कारण हुआ है। ओह, क्या यूरोप के लोग यह भी नहीं जानते कि वे हमें कितने प्रिय हैं! सीधे तौर पर कहूँ तो मेरा विश्वास है कि निश्चित रूप से हम नहीं, बल्कि, भविष्य के रूसी लोग आखिरकार वे सब समझ पाएँगे कि असली रूसी बनने का क्या मतलब होगा - यूरोपीय अंतर्विरोधों में पूर्णरूप से सामंजस्य लाने का प्रयास करना, अपनी एकीकृत मानवता रूपी रुसी करुणामयी दिलोदिमाग से यूरोपीय दुःख के निवारण का रास्ता दिखाना, अपने सभी भाइयों को भाईचारे के साथ उसमें समायोजित करना और शायद अंततः, मसीहा के सुसमाचार कानून के अनुसार सभी जनजातियों के बीच सद्भाव एवं भाईचारे के अंतिम समझौते की

उद्घोषणा करना! जानता हूँ, अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरे शब्द उत्साही, अतिश्योक्तिपूर्ण और काल्पनिक लग सकते हैं। पर, जो कुछ भी मैंने बोला उसका मुझे कोई अफ़सोस नहीं है। यह तो बोला जाना ही था, विशेष रूप से अब, हमारे उल्लास के क्षण में, हमारे महान प्रतिभा को सम्मानित करने के क्षण में, जिन्होंने इस विचार को अपनी सृजनात्मकता में शामिल किया। और हाँ, यह विचार पहले भी अनेक बार व्यक्त किया जा चुका है। मैं कुछ भी अनोखा नहीं कह रहा हूँ। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह सब अभिमानी तो लगेगा पर, "क्या यह हमारे लिए है? हमारे गरीब, हमारी उबड़-खाबड़ जमीन की ऐसी किस्मत? क्या मानवता में एक नए शब्द का प्रादुर्भाव करने के लिए हमें जिम्मेदारी दी गयी है?" खैर, जो भी हो, क्या मैं आर्थिक महिमा के बारे में बात कर रहा हूँ, या तलवार और विज्ञान की महिमा के बारे में? मैं केवल लोगों के भाईचारे के बारे में बात कर रहा हूँ और यह कि रूसी दिल शायद सभी लोगों के लिए, सार्वभौमिक, सम्पूर्ण मानव-जाति के भाईचारे के लिए सबसे अधिक नियत है। मैं इसका प्रमाण अपने इतिहास में, अपने प्रतिभाशाली लोगों में, पुश्किन की कलात्मक प्रतिभा में देखता हूँ। भले ही हमारी जमीन कम उपजाऊ है, पर “इसी बेकार जमीन को आशीर्वाद के तौर पर" ईसा मसीह ने प्रदान किया है।

हम उनके अंतिम शब्द को क्यों नहीं धारण कर सकते? और क्या वह स्वयं भेड़ो की बाड़ में पैदा नहीं हुए थे? मैं दोहराता हूँ - कम-से-कम इतना तो हम कर ही सकते हैं कि पुश्किन को उनकी सर्वकल्याणकारी और संपूर्ण मानवतावादी प्रतिभा के लिए सम्मान दें। यह वही थे, जिन्होंने अन्य प्रतिभाओं को अपनी आत्मा, अपने लोगों के बीच समाहित किया। कला में, परिपूर्ण अवस्था में अपनी साहित्यिक रचनात्मक कृतियों में उन्होंने रूसी भावना की सर्वशांतिमय उत्कंठा को निर्विवाद रूप से चित्रित किया और यहीं पर उनकी महानता प्रकट होती है। यदि हमारा विचार एक कोरी कल्पना है तो यह पुश्किन के लिए कम-से-कम एक एक ऐसा आधार है, जिसपर यह कल्पना आधारित है। यदि वे कुछ और अधिक समय तक जीवित रहते, तो शायद रूसी भाव की अमर और महान

छवियों को और भी अच्छे से प्रकट करते, जो हमारे यूरोपीय भाइयों को और अच्छे से समझ में आता, जिससे वे आज की तुलना में हमारी तरफ कहीं ज्यादा आकर्षित होते। यह भी हो सकता था कि इससे पुश्किन हमारी आकांक्षाओं के सत्व को पूरी तरह से समझा पाते, जिससे शायद हमारे यूरोपीय भाई आज की तुलना में हमें कहीं ज्यादा अच्छे से समझ पाते, उनका पूर्वाग्रह कुछ और ही होता, जिससे वे हमें ऐसे अविश्वास और अहंकार से नहीं देखते, जैसे वे अभीतक हमें देखते आ रहे हैं। यदि पुश्किन अधिक समय तक जीवित रहे होते तो शायद हमारे बीच अभी की तुलना में कम गलतफहमियाँ और विवाद होते, जैसा कि वर्तमान में है। पर शायद ईश्वर ने कुछ और ही तय कर रखा था। अपनी क्षमताओं का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पुश्किन मरे और निस्संदेह कुछ महान रहस्य अपने साथ दफन कर गए। और अब हम उनके न होने पर इस रहस्य को सुलझा रहे हैं।

संदर्भ - Ф.М.Достоевский. Полное собрание сочинений, т. 26. Ленинград, Наука, 1984, сс.129-149

http://az.lib.ru/d/dostoewskij_f_m/text_0340.shtml [15.02.2022]

अनुवादक संदर्भ सूची

प्रोफेसर चरणजीत सिंह
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली
1charanjit@gmail.com

डॉ मीनू भटनागर
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली
meenu.bhatnagar@gmail.com

डॉ आशुतोष आनंद
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली
ashu.jnu@gmail.com

डॉ संदीप कुमार पांडेय
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली
1sandeepkrpandey@gmail.com
sandeepkpandey@jnu.ac.in

डॉ चारुमती रामदास
रूसी अध्ययन विभाग
अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय
हैदराबाद, तेलंगाना
charumatir@gmail.com

डॉ कुँवर कांत
रूसी अध्ययन विभाग
अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय
हैदराबाद, तेलंगाना
kunwarkant@gmail.com

डॉ राधा मोहन मीना
रूसी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली
mohan1385@gmail.com

डॉ ऋषिका कात्यायन
केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम, केरल
hrishikakatyayan@gmail.com

डॉ सौरभ नायक
अध्यक्ष सचिवालय विभाग
स्बेर बैंक, नई दिल्ली
naik.saurabh@gmail.com